

कवि नूरमुहम्मद कृत

इन्द्रावती ।

पहिला भाग ।

रयामसुन्दरदास बी० ए० सम्पादित ।



मूल्य १॥





कवि नूरमुहम्मद कृत

इन्द्रावती ।

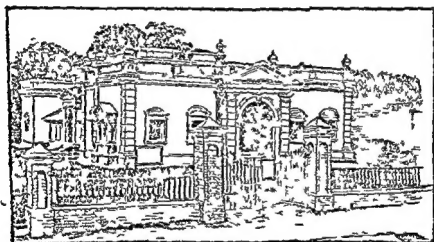
पहिला भाग ।

— 62 —



२०८

श्यामसुन्दरदास बी० ए० सम्पादित ।



काशी नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा
प्रकाशित ।



BENARES

PRINTED AT THE LAHARI PRESS

1906

निवेदन ।

कवि नूरमुहम्मद रुन “इन्द्रायती” का पहिला भाग छाप कर प्रकाशित किया जाता है । इसका इतना ही अर्थ और छपने की याकी है । उसके छप जाने पर इस ग्रन्थ की सविस्तर भूमिका प्रकाशित की जायगी । जब तक समस्त ग्रन्थ न छप जाय तब तक उसकी भूमिका लिखने का नियम नहीं है । इसी लिये इस ग्रन्थ तथा उसके कर्ता के विषय में जो कुछ मुझे वक्तव्य है वह मैं अभी नही निवेदन करता ।

इस ग्रन्थ की प्रति मुझे मिर्जापुर निवासी मौलवी अब-दुल्लाह द्वारा प्राप्त हुई है जिसके लिये उन्हें मैं अनेक धन्यवाद देता हूँ । इस कवि के पोते मौलवी तख्तुल्लु से उक्त ग्रन्थ की प्रति मौलवी अबदुल्लाह को प्राप्त हुई है । मूल ग्रन्थ फारसी अक्षरों में लिखा था । मौलवी अबदुल्लाह ने सन् १८७७ में इसकी नकल कैथी अक्षरों में की । इसी अन्तिम प्रति के आधार पर यह ग्रन्थ छपा गया है ।

कवि नूरमुहम्मद ने अपना कुछ संक्षेप वृत्तान्त इस ग्रन्थ के पहिले खण्ड में दिया है । पाठकगण इससे ग्रन्थ बनने का समय आदि जान सकते हैं ॥

श्यामसुन्दरदास ।

१-५-०६

खण्ड सूची ।

(१) स्तुति खण्ड	१ — ६
(२) जन्म खण्ड	७ — १०
(३) स्वप्न खण्ड, कुञ्जर	१० — २२
(४) जोगी खण्ड	२२ — ३४
(५) पाग खण्ड	३४ — ४२
(६) भास्तिन खण्ड	४२ — ५२
(७) कुलवारी खण्ड	५२ — ६३
(८) जीय कहानी खण्ड	६४ — ६८
(८) पात्नी खण्ड	६८ — ७८
(१०) दर्शन खण्ड	७८ — ८४
(११) मुया खण्ड	८५ — ८८
(१२) नहान खण्ड	८० — ८६
(१३) जुद्ध खण्ड	८६ — ८८
(१४) मधुकर खण्ड	१००-११६
(१५) मानिक खण्ड	११६-१४८
(१६) बिरह भयरघा खण्ड	१४८-१४८
(१७) ओपद खण्ड	१५०-१५७
(१८) मोती खण्ड	१५८-१६४
(१८) व्याह खण्ड	१६४-१७६



इन्द्रावती ।



[१] स्तुति खण्ड ।

धन्य आप जग सिरजन हारा । जिन दिन खम्भ अकास सँवारा ॥
होऊ जग को आपुहि राजा । राज दोऊ जग को तेहि छाजा ॥
दीन्हा नैन पथ पहिचानो । दीन्हा रसना ताहि बखानो ॥
घात सुनै कहँ सरवन दीन्हा । दीन्हा बुद्धि ज्ञान तेहि घीन्हा ॥
गगन कि सोभा कीन्हे सितारा । धरती सोभा मनुष सँवारा ॥

आप गुप्त और परगट, आप आद और अंत ।

आप सुनै और देखै, कीन्ह मनुष बुधवत ॥१॥

अहड़ अकेल सो सिरजन हारा । जानत परगट गुप्त हमारा ॥
कीन्ह गगन रविससि महि मेरा । कोउ नाही जोरी तेही केरा ॥
कीन्हा राति मिलै मुख तासा । कीन्हा दिन फारज है जासा ॥
धन, सो महि पर भेजत नीरा । पलुअत सूखी भूमि सरीरा ॥
सब बिलाय जाइहि एक बारा । रहै तेहिफ मुख रवि बँजियारा ॥

है सोता और दिष्टा, तेहि सम कोउ न आहि ।

जो कुछ है महि गगन महँ, सब सुमिरत है ताहि ॥२॥

अरे दीऊ जग के करतारा । कित कै सकुँ बखान तुम्हारा ॥
 रसना होइ रोम सब मोही । सबहु बरन न पारउँ तोही ॥
 है अपार सागर भौ केरा । मोहि करनी को नाव न बेरा ॥
 कै किरपा मोहि पार उतारो । दया दृष्टि मोहि ऊपर डारो ॥
 है हमकहँ आलम्न तुम्हारी । तोहि दाया सो मुकुत हमारी ॥

है मगु बहुत जगत्त महँ, तिन मगु की नहिं चाव ।

आपन पथ देखावहु, राखौं तापर पाँव ॥३॥

सुनिरो चेत धरे मन ठाऊ । अरबी नबी मुहम्मद नाऊ ॥
 जा कह करता दरस देखाएउ । कै किरपा सब भेद बताएउ ॥
 जेहि क बखान अही लौ लाका । ताहि बखानत दोउ जग थाका ॥
 चार यार चारिउ जस तारे । दीन गगन ऊपर उँजियारे ॥
 अवृद्ध कर औ उमर बखानी । उस्मों यहुरि अली कह जानौ ॥

अहदहुते अहमद भएउ, एक जोत बुझ नाउं ।

भएउ जगत के कारने, परेउ मोहम्मद नाउं ॥४॥

कहौ मोहम्मद साह बखानू । है सूरज दिहली सुलतानू ॥
 धरम पन्थ जग बीच चलावा । निबरन सबरै सौ दुख पावा ॥
 पहिरे सलातीन जग केरे । आए मुहाँस बने हैं चेरे ॥
 सही साह नित धरम बढावै । जेहि पहराँ मानुष सुख पावै ॥
 सब काहू पर दाया धरई । धरम सहित सुलतानी करई ॥

धरम भलो सुलतान कहँ, धरम करै जो साह ।

सुख पावै मानुष सबै, सबको होइ निवाह ॥५॥

फकि अस्थान कीन्ह जेहि ठाऊ । सो वह ठाऊ सयरहद नाऊ ॥
 पूरय दिस फइलाम समाना । अही नबीरुद्दी को चाना ॥
 है सब जग महँ पषिक रहना । लेहु इहासो आगम लहना ॥

जगऔ आपुहिकस पहिचानो । तरिवर और बटोहिय जानो ॥
चला जात जस होइ बटोही । आइ छँहाइ विरिछ तर वोही ॥

जया जुड़ाइ तरिवरतर, धरै पन्थ पर पाँव ।

वास हमार जगत महँ, बृभो तेही सुभाव ॥६॥

आज रहन यह चाँद न जभा । आनन्द हरन जगत कर हूआ ॥
साह करबला को दुख सोगू । समुझि समुझि रोवै सब छोगू ॥
रोएउ गमन सेंदुरी नाही । रक्त आँस है मुख उपराही ॥
रोवै बादशाह जग सार्थ । हम ना रहे करबला ठाई ॥
देतेउँ मीस दीनपति कारन । करतेउँ जित तनमन सब वारन ॥

रोवै अच्छर सीस धुनि, सलस सविल भाखार ।

आज छिपान जगतरवि, जगत भएउ अंधियार ॥७॥

घावैला प्यासा गा सारा । आल रमूल बतूल पियारा ॥
उठा चहू दिस ते घावैला । महि सिर परेउ सोग को सैला ॥
पहिरेउ गगन मातमी बागा । परेउ चन्द के हियरे दागा ॥
औ ससिफहु दुख राहु गराहा । सूरज कहँ उपनेउ उर दाहा ॥
इनके बीच हसन का प्यारा । सेहरा लीन्ह रक्त के धारा ॥

नूर मोहम्मद जीभतें, कहँ न मातम होइ ।

जिय सो कहू मातम कथा, मन आंखिन सो रोइ ॥८॥

सन दूगसो एक रात नफारा । सूझि परा मोहि सब ससारा ॥
देखेउँ एक नीक फुलवारी । देखेउँ तहाँ पुरुष अउ नारी ॥
दोउ मुख सोभा बरनि न जाई । चन्द सुरुज उतरेउ भुई आई ॥
तपी एक देखेउँ तेहि टाऊ । पूछेउँ तासो तिन कर नाऊ ॥
कहा अहे राजा अउ रानी । इन्द्रवति औ कुवर गेयानी ॥

आगमपुर इन्द्रावती, कुवर कलिञ्जर राय ।

प्रेम हुते दोऊ कहँ, दीन्हा अलख मिलाय ॥९॥

सरय कहानी दीन्ह सुनाई । कहा दया सेती हो भाई ॥
 इन्द्रावति औ कुवर कहानी । कहु भाषा मो हो कवि छानी ॥
 गाढी गाढ परै जहा तोही । छुटि जाय सुनिरेहु तुम मोहीं ॥
 आछा दीन्हा तपिय सेयाना । मन जित सो आछा मैं माना ॥
 होत भोर लिखनी मैं छीन्हा । कहै लिखै ऊपर चित दीन्हा ॥

सन इगयारह सौ रहेउ, सत्तावन उपराह ।

कहे लगेउ पोथी तयै, पाय तपी कर बांह ॥१०॥

कवि है नूर मोहम्मद नाऊ । है पल्लव सबको जग ठाऊ ॥
 बुनि कविजन सेतन सो बाला । करै चहत एरिहान विमाला ॥
 है कवि समै नई तरुनाई । छूट न अवहीं कवि लरिकाई ॥
 जाके हिण लरिक बुधि होई । बहुते बूक कहत है सोई ॥
 दिनवत कविजन कहकरजोरी । है थोरी बुधि पूजिय मेरी ॥

बूका देखि सम्हारि के, जोरेहु अच्छर दट ।

दाया कर मोहि दीन पर, दास न लाएहु कूट ॥११॥

है हीना विद्या बुधि सेती । गरब गुनाम करै केहि नेती ॥
 है मैं लरिकाई को चेला । कहौ न पोथी खेलत खेला ॥
 गुरुजन सो यह दिनतिय मोरी । कोप न मानहि भौह सिकोरी ॥
 दास बहुत खेलत मह होई । दाया करहु न कोपेहु कोई ॥
 दास करै जो छोटा आही । मया करै गुरुजन कह चाही ॥

• मोहि विवेक कछु नार्हो, नहिं विद्या बल आहि ।

खेलत हैं यह खेल एक, दिष्टा देइ नियाहि ॥१२॥

एक रात सपना मैं देखा । सिन्धु तीर वह तपिय सरेखा ॥
 अहै ठाढ मोहि छीन्ह बलाई । कहेसि कि सिन्धु मे बूढ़हु भाई ॥
 मसा छाह पोढा के हीया । मोती काढहु होइ मरजीया ॥

ससि गोती को हार सवराहु । इन्द्रावति की गोठ मह डारहु ॥
लै मोती दोउ हाथन माहा । फारू रतन सीर उपराहा ॥

अस सपना मैं देखेउँ, जागि उठेउँ अकुलाइ ।

बहुत ब्रूझ संचारेउँ, सपन न ब्रूझा जाइ ॥१३॥

चित औ चेत बहुत मै धरा । तब वह सपन ब्रूझि मोहि परा ॥
सिन्धु समा मनको पहिचानेउ । मोती समा बचन कह जानेउ ॥
हार गुहन बूझेउ घठपाई । रतन ग्रीव कह रतन बढाई ॥
मनुष सुबचन कहे सो लहई । बचन सरस मोती सो अहई ॥
बचन एक करतार निसारा । सा तेहि बचनहुते ससारा ॥

बचन हसावै मनुष्य कहँ, बचन रोवावै ताहि ।

बचनहुतें यह जगत मो, कीरत परगट आहि ॥१४॥

हे मन फुलवारी हो भाई । फूल समों यह बचन सोहाई ॥
बचन अरथ है वास समाना । कवि स्त्रोता है भवर सयाना ॥
अचरज ऐस फूल पर अहई । बारी माँह कली नित रहई ॥
जब वह फूल तजत फुलवारी । बिरुमत वास देन अधिकारी ॥
जुगजुग रहत नतनु कुम्हिलाई । दिन दिन वास बढत अधिकाई ॥

मन चाहत सो अस पुहुप, आज चुनों भरि गोद ।

हार गूँथि कै पहिरेउँ, मनमो धाढ़ै मोद ॥१५॥

हिया कहा दुइ हार सवारहु । रवि औ कमल गले मह डारहु ॥
बुद्धि कहा दुइ हार बनावहु । मालति मधुकर कह पहिरावहु ॥
तेहि पल तपसी दरस देखाएउ । मोहि संग एहि बात सुनाएउ ॥
राजकुअर रानी इन्द्रावती । हैं रविकमल औ भवर मालती ॥
चुनि परसुन दुइ हार सवारहु । तिनके ग्रीव बीच लै डारहु ॥

अज्ञा मान तपी कर, चलेउँ जहां फुलवार ।

खुला न पायउँ द्वारको, मालिहि दिणउँ पुकार ॥१६॥

आएव माली सुनत पुकारा । खोलैव फुलवारी का द्वारा ॥
 पैठैव फुलवारी मह जाई । रहमेव देखैत फूल निकाई ॥
 तन पलुहा वारी की गई । मन भा फुलवारी तेहि ठाई ॥
 माली कहा जाएन मन होई । लेहु फूल नहि वरजत कोई ॥
 जब आज्ञा मालिहिसे पाएउ । तब में फूल चुनै पर आएउ ॥
 किरपा सो वारी मह, माली दीन्हा साथ ।

आडे कोउ न आणउ, भै फुलवारी हाव ॥१७॥

रहत न आगर रूप छिपाना । आपुहि परगट करै निदाना ॥
 जो रम रूप सो बाधहु द्वारा । जाइ भरोसे चितवै प्यारा ॥
 सिरजनहार छिपा ना रहा । आपुहि केर चिन्हात्रै चढा ॥
 तब यह जग करतार सवारा । चीन्ह पडा वह सिरजन हारा ॥
 मानुष फूल बुरस सी नाक । धरि धरि भा परगट सब ठाक ॥

आपुहि भोगि रूप धरि, जगमो मानत भोग ।

आपुहि जोगीभेस होइ, निसदिन साधत जोग ॥१८॥

अलय प्रेम कारन जग कीन्हा । धन जो सीस प्रेम मह दीन्हा ॥
 जाना जेहिफ प्रेम मह हीया । मरै न कयहु सो मर जीया ॥
 प्रेम खेत है यह दुनियाई । प्रेमी पुरुष करत बोवाई ॥
 जीवन जाग प्रेम को अहई । सोधन मीथु वो प्रेमी कहई ॥
 आग तपन जल चाल समूझो । पुनि दिकान नाटी कह दूझो ॥

हो प्रेमी है प्रेम को, चचलताइ थाय ।

जा मन जामां प्रेम रस, भा दोउ जग को राय ॥१९॥



[२] जन्म खण्ड ।

राजा एक फलिष्ठुर ठाक । रहा सो निर्प को भूपति नाक ॥
 तेहि घर पुत्र लीन्ह अवतारा । दीपक सोभा घर उजियारा ॥
 धन औ पुत्र पियारा होई । दोऊ कहँ चाहै सय कोई ॥
 भा आनंद सो मङ्गलचारा । बाहर भीतर भा भनकारा ॥
 राजें परिहृत वेग हँकारेठ । पड़ित आइ सुजनम धि नारेठ ॥

कहा पुत्र के हीयरे, चाढ़ै प्रेम वियोग ।

रूप एक पर रीझै, तेहि नित साथै योग ॥१॥

राजकुअर तेहि राखा नाकें । जनम नछत्र घडी के भाकें ॥
 भा सेवान जउ राजकुमारा । मात तेहिक जगलाहि सिधारा ॥
 पढ़ि विद्या भा परिहृत स्याना । भूपति के मन माह सनागा ॥
 गुन औ पिता अनन्द मनावैं । चेला सुन जो परिहृत पावैं ॥
 राजा हिये अनन्द बढ़ावा । पुत्र सरेखा परिहृत पावा ॥

राजें पुत्र बिआहा, सुन्दर रानी साथ ।

चढ़ी जात आनन्द की, सूर चन्द के हाथ ॥२॥

भूपति राय जगत तजि गयेऊ । कुअर राज पर राजा भयेऊ ॥
 जगत रीत जानै सय कोई । भरै पिता सुत राजा होई ॥
 पिता होइ जब माटी माहों । तब सुत होइ पाट उपराहों ॥
 पिता राज पर भा बह राजा । धरम दमासा चहुदिशि बाजा ॥
 धरमी रीत धरम की राखा । अधरम बचन न काहू भाखा ॥

करै कर्म जो राज को, बसै ग्राम उज्जार ।

ग्रामा नित असीसहीं, अचल करै करतार ॥३॥

कालिञ्जर गढ वरनि न पारो । ऊच बहुत किनि चित्त सँचारो ॥
 कधि चित गगन पाव तर डारै । तय गढ ऊच वरानै पारै ॥
 भूधर पर भूधर गढ घेरा । दीप भयेउ भूधर तेहि केरा ॥
 देवतन की मूरत छवि धारी । सोहै गढ पर औ फुलवारी ॥
 बुद्धि ज्ञान दुइ पहरु तहाँ । जागहि चोर सचरै कहाँ ॥

गढ पर चढी कमानै, दुरजन देखि डेराय ।

कुअर त्रास ते निचल को, सबल न सकै सनाय ॥४॥

वरनौ राज मँदिर की सोभा । सोभा रूप आइ तेहि लोभा ॥
 मंदिर मो उघि अधिक सोहाही । राजा रहे आप तेहि माहीं ॥
 वरनि न सकौ भीत निर्मलाई । चितवत दूहि पार होई जाई ॥
 खम्भा चार कनक के लाने । चारो कहँ देखैं अनुरागे ॥
 चितवत पावै ऐसि बताई । भूलै एक तीन रह जाई ॥

पुनि दुइ भूले दुइ रहे, पुनि एकै रहि जाइ ।

एकहि खम्भ विलोकत, निर्पनहार अघाइ ॥५॥

कटक बहुत राजा के रहई । अनगिनती गिनती को कहई ॥
 एक दिम बाधे तुरै बिराजैं । पवन बाधि अनु राखा राजैं ॥
 भूधर के भूधर गढ ऊपर । भूधर ऊपर सोहै भूधर ॥
 राजा आप धनी औ बली । कीरत भली लता सी बली ॥
 सब पर धरै दया की दीठी । राखे सब काहू पर इँठी ॥

राजा के भण्टार महुँ, धन औ दरब सपूर ।

पूरन रतन पदारथ, शुलिक कनक खर चूर ॥६॥

वरनौ राजा की फुलवारी । फूलनहू ते सोहनवारी ॥
 सुमन सुरङ्ग सुगन्ध सोहाही । चहुदिस तिनपर भँवर भवाही ॥
 तोरै राजा चाहै जाहीं । चाहै जा कहँ राखे ताहीं ॥

नित अनेक परसुन भरि जाहों । नित अनेक फूलहि तेहि माही ॥
सुगंध सुरङ्ग पुहुप तह फूलें । सुमन सुमन मधुकर होइ भूलै ॥

अपने अपने मानहीं, सब परसुन में बास ।

बास लेइ के कारनहि, भँवर फिरै तिन पास ॥७॥

बरनो हाट महीपति केरी । ता महेँ लाख वस्तु की ढेरी ॥
जो फोऊ कछु लेवै चाहै । जस पूंजी तस मोल बेसाहै ॥
हाट आइ छूटे कर जाना । मन पछतावा रहइ निदाना ॥
जो आगम को लाभा चाहै । हाट आइ सो वस्तु बेसाहै ॥
मन मो जेतिक वस्तु रचाहों । लेहि धनी निधनी पछताहों ॥

नित राजा के हाट में, एक आवै एक जाइ ।

अपनी अपनी ओट तें, वस्तु बेसाहै आइ ॥८॥

बरनो राज कुअर की बानी । धर्मिणी और पण्डित ज्ञानी ॥
दान दरम की रीत सँवारा । अधरम को जर मूल उखारा ॥
पर त्रिया पर दृष्टि न देई । मनसा बाधा पाप न लेई ॥
ऐस धरम को पन्थ चलावा । बाध गाय सो प्रीत लगावा ॥
सब कहें मृधी घाट चलावै । निबल न सबले मो दुख पावै ॥

सबै असीसैं राजही, रहै सुखी सब कोइ ।

राजकुंअर के नगर में, धरम पुन्र नित होइ ॥९॥

अति सरूप रानी सुन्दरी । धरती पर अपठर औतरी ॥
छवि सो धन रिक्तवारिन भई । पियहि रिक्ताइ जीउ बसि गई ॥
पीठ पियारी सुन्दर नारी । भइठ पीठ की प्रान पियारी ॥
देसी पिठ धन की सुघराई । मन सो मया करै अधिकाई ॥
सोवै कुअर लिहै धन कोरा । कथहु न पीठ दीन्ह तेहि ओरा ॥

पिय को प्रीत बखानै, एक न राखै गोड ।

रूप गरवता सुन्दरी, प्रेम गरवता होइ ॥१०॥

सी अन्तर पट आगे छाँए । सुन्दर रूप न छिपत छिपाए ॥
 परगट होइ तहा से सोई । जेहि अस्यान छिपाना होई ॥
 जब प्रेमी पर चाहत देई । एकै दृष्टि भौन कइ लेई ॥
 जेहि सोए पर चित्त चलावै । नैनवान हनि ताहि अगावै ॥
 प्रेम बढ़ावत प्रेमी हियरें । पुनि आनत तेहि अपनेनियरें ॥

प्रेम बढै जो दूह मन, टोऊ एकै होय ।

बिछुरे तें बाढत अधिक, बूझै प्रेमी होय ॥११॥



[३] स्वप्न खण्ड, कुँअर ।

एक रात महँ कुअर सरेखा । सपन बीच दर्पन एक देखा ॥
 रहा असल दरपन रँजियारा । जिव मुख को निखावन हारा ॥
 दरपन मो एक सुन्दर नारी । देखेहु चन्दहु ते रँजियारी ॥
 रही तइस सुन्दर जस चही । दरपन देह बीच जिव रही ॥
 रही न तेहि संग सखीय सहेली । रहित मुकुर महँ आप अकेली ॥

ससि वदनी मनु रवि रही, रहा मुकुर जिमि धूप ।

तेहि रुपवन्ती रूप सों, दरपन पाएउ रूप ॥१॥

जागा कुअर भौर कहँ पावा । सपन चिन्त मो देवत गँवावा ॥
 दुसर रात कस्तूरीय झारा । तासो सुगंध कीन्ह ससारा ॥
 तेही त्रिजमा राय सरेखा । पहिली रात कि मूरत देखा ॥
 रहेउ न मूरत दरपन नाही । दरपन बहुत रहे अगुवाही ॥
 कालिजरी निर्प नर नाहा । तासो वदन देखा सप नाहा ॥

जस दरपन निर्मल रहे, तस देखा अधिकार ।

दरसन एकै नारि को, सब आदरस मभार ॥२॥

पहिली रात महीप सरेखा । मुख पर लट बिथुरी नहि देखा ॥
दूसर रात महीपति ज्ञानी । देखा मुख पर लट छितरानी ॥
देखि बदन लट सुन्दरताई । सपने बीच परा मुठलाई ॥
मोहि अचरज हिरदयमो आही । कैसे मुकुर न देखा ताही ॥
यह सपने को को पतिआई । मुकुर सौह बिनु देखि न जाई ॥

यह सपने की बात पर, अचरज करै न कोइ ।

सपने में सो होत है, जौ सौतुकै न होइ ॥३॥

राजा देखि सपन अस जागा । लागा ग्रीव प्रेम को तागा ॥
तागा पाइ प्रेम को राजा । भा प्रेमी छाहा मुख काजा ॥
का जानै मुख भोग भुलाना । प्रेम मरन जब लग अनजाना ॥
जाना जात प्रेम तब भाई । जब मन भीतर प्रेम सनाई ॥
कालिंजर को राय सयाना । वह नारी के रूप भुलाना ॥

दृग सों विछुरी मूरत, हिंदूँ आइ समान ।

जब हिय बीच समानी, हरिगै चिन्ता ध्यान ॥४॥

राजै राज काज तजि दीन्हा । चिन्ता वह मूरत की लीन्हा ॥
कहै कहा यह चन्द लिलाटी । बरु तेहि आगे है ससि घाटी ॥
कहा धनुक भौही वह नारी । बरुनी बान चोख जेई नारी ॥
कहवा मृग नैनी वह बाला । प्रेमद दीन्ह कीन्ह मतवाला ॥
होतेठँ दरपन ता मुख केरा । मो सहँ तो मुख लेत बसेरा ॥

राजकुँअर भा वाउर, छाडैउ सुख रस भोग ।

परे सरल संसै में, कालिंजर के लोग ॥५॥

राज कुमर छाहा मुख भोगू । असुखी भए नगर के लोगू ॥
दस सघातिय राजा केरे । रहे सो रहे आठ जस चरे ॥
परे चिन्त मो आठ सँघाती । आठो कहँ दिन भा जस राती ॥

काहु घात सुनवत जी दीन्हा । कोठ कैतुक पर दिष्ट न कीन्हा ॥
रस सुगन्ध कहँ छाडा काहू । आठो परे बहुत दुख भाहू ॥

राजा के अनमन भए, अनमन भा सब कोइ ।

मांगहिं सब करतार सों, मोद कुँअर कहँ होइ ॥६॥

आठो में मंत्री एक रहा । राजा मानै ताकर कहा ॥

बुद्धसेन रहु ताको नाकँ । जन्मभूमि तेहि मनपुर ठाकँ ॥

तेहि धिनु सात मित्र अवटाही । ताहि मिले सातो सुघराही ॥

सुख छाडा सब राय सयाना । बुद्धसेन मन सबै माना ॥

कहा कुअर सो अहो नरेसू । दिवस चार सो कस तोहि भेसू ॥

औरै तन मन देखऊ, औरै चिन्ता चाव ।

सुख अनंद को छाड़ेऊ, कहो कुँअर केहि भाव ॥७॥

कहा बुद्ध सो राय सरेखा । नारी एक सपन मैं देखा ॥

पहिल रात अस देखेवँ जानी । दरपन बीच रही वह रानी ॥

दूसर निस बहु दरपन देखेवँ । सब दरपन ता रूप परेखेवँ ॥

सोवत रहित नयन के नियरें । जागत आइ समानिउ हियरें ॥

अमल रूप वह नारी केरा । मन हरिलीन्ह कीन्ह मोहि घेरा ॥

तामुख दुति के आगें, अहै सूर ससि छौट ।

काहु निर्प की है सुता, जेहि देखेवँ निस मोह ॥८॥

सुनि बुध राजा कहँ समुझावा । तोहि सपने महँ कैतुक आवा ॥

सपन रूप पर का विसवासू । तज मन चिन्त बढाय हुलासू ॥

कुअर कहा यह सपन न होई । मोहि लेखे मैतुक है सोई ॥

दरपन मो दरपन मुख ताको । भा जित छाग मुकुर सोभा को ॥

मोहि निषं वह प्रान पियारी । करै चहत है दरम भिखारी ॥

विधुरी प्यारी नैन सो, हियरें आइ समान ।

दिया हाथ मो कीन्हा, भएउ परान परान ॥९॥

मन्त्री मरम कुअर को पाएउ । गुनी चितेरा एक बोलाएउ ॥
 अस गुनयन्त चितेरा रहा । जल पर चित्र बनावै चहा ॥
 बुद्ध कहा लिखि आनु चितेरा । सुघर रूप इस्तिरीन केरा ॥
 निर्प सपने एक नारिय देखा । रीका तापर निर्प सरेखा ॥
 होइ अहेर फाद मो आवै । देखै कुअर बोध मन पावै ॥

बहु नारिन की मूरतें, लिखा चितेरा जाइ ।

बुद्ध बांह सो राजही, सकल देखाएउ आइ ॥१०॥

देखि सकल राजें मुख केरा । कहा कहा वह अरे चितेरा ॥
 कहा लिखै आवै वह प्यारी । सपने बीच ध्यान जेई नारी ॥
 ताको मूरत को लिखि पारै । दिगं ध्यान बरुनी को मारै ॥
 अधर तेहिक जो लिखै चितेरा । मीठ होइ लियनी नहि केरा ॥
 बुनि अस बात चितेरा हँसा । कहा प्रेम महिपति मन बसा ॥

कहि बुध साथ चितेरा, गएउ सदन कहँ सोइ ।

पहिले प्रेम न गाढा, अन्त गाढ़ पुनि होइ ॥ ११ ॥

आना बुद्ध मनुष दस जानी । राजा नियरें कहे कहानी ॥
 रूप बखान करै बहुतेरा । होइ फिरै मन राजा केरा ॥
 राजा के मन बोध न होई । सपन कहानी कहेउ न कोई ॥
 जा दृग लागेउ जो रँग नीका । नीको वही आन रँग फीका ॥
 जा मन आइ बसै जो कोई । ता कहँ प्रान पियारा सोई ॥

रंचिक ताहि न भावै, कहै कहानी जेत ।

परम दवात कहै जेत, दुखद होइ तेहि तेत ॥१२॥

राजा की कुलवारिय जहा । लीन्ह बसेरा तपी एक तहा ॥
 मौन रहा गहि तपिय सयाजा । सकन तिहिक सब काहु बजाना ॥
 रात होत मन मो धरि आसा । गएउ कुअर तापस के पास ॥

कहु जौहरिये कतहु चितेरा । कतहु कुँदेरा कतहु ठठैरां ॥
सब भूले अपने जग घन्था । का छिठियारू का जो अन्धा ॥

सब तो अहै वटाऊ, पै पापं सुख भोग ।

आपुहिं कोइ न जानत, है पन्थिक हमलोग ॥२०॥

पुनि बखान सुनु मन तारा को । बसुधा बीच सुधा जल ताको ॥
जो मनतारा सम्बर पीअै । सुख जीवन पावै मन जीअै ॥
आवै नीर भरै पनिहारी । सुन्दर आगमपुर की नारी ॥
जौडर नदी नीर जस छीरू । नद अस भेद मरोवर नीरू ॥
सधु अस मीठ जीव सर पानी । यह बखान समझै नर जानी ॥

जो मानुष अनुरागनल, अचवै चारो नीर ।

निर्मल होइ सरीर तेहि, व्याध नरहै सरीर ॥२१॥

पुनि बखान सुनु मत के चेरा । आगमपुर के जोगिन केरा ।
वैरागी सन्यासिय जोगी । साधू सज्जन तपिय बियोगी ॥
कोउ ठाढा है ध्यान लगाए । कोउ धरती पर सीस नवाए ॥
कोउ सहिपर माथा धरि रहा । जोग लाग सुख भोग न चहा ॥
बहुतन कह जगसे मुधि नाही । रीझि रहे करता उपराही ॥

रसना एक न कहि सको, आगमपुर की घात ।

धरम धनी है राजा, सुखी छतीसौ जात ॥२२॥

रहा सहीपति घर उँजियारा । बालक दीपक धिनु अँधियारा ॥
जाइ ग्रीस महप सँह पूजा । बहुत कीन्ह सँग लीन्ह न दृजा ॥
सिय सपने मो दरस देखावा । दरस दान देइ यात सुनावा ॥
बालक एको लिखा न राजा । देइ न बालक अपचित काजा ॥
राजें कहा पुत्र जो ताहीं । होइ मुता तो मन अनदाही ॥

आत्मजा जो होत एक, होत सदन उँजियार ।

कन्यादान दिहे सो, होतै मुकुत हमार ॥२३॥

कहा महेस काज एक करहु । रतन एक मण्डप में धरहु ॥
 निसमो राखहु भोरें आएहु । धिज धरेहु जैसा फल पाएहु ॥
 जैसा इस्वर अज्ञा दीन्हा । तैसा मानि महीपति कीन्हा ॥
 सिव दाता कह बहुत मनावा । तुम करता त्रीलोक बनावा ॥
 धरती गगन पवन जल आगी, । सिर्जित सिर्जन बेर न लागी ॥

होइ रतन सो कन्या, यह मनसा है मोर ।

राज सदन अधियारो, तासों होइ अधजोर ॥२४॥

सिधा अलखसो बिनती कीया । जस है रतन जोत सो दीया ॥
 दीप रतन सम कन्या होई । करइ निकेत अजारो सोई ॥
 भा दयाल दाता तेहि घरी । बोहि रतन कन्या अवतरी ॥
 भै महेस मण्डप उजियारी । उतरी मनहु इन्द्रपुर नारी ॥
 भोर होत राजा चलि आएउ । मण्डप बीच चन्द्र सम पाएउ ॥

परमद सो मंडप में, पुलकोउ राजा देह ।

कन्या कहं अति आदरें, आनेउ अपने गेह ॥२५॥

पुन सिधरात होत सपनावा । गौरिहु आपहु दरस देखावा ॥
 कहा धरेहु अवतार सुभाऊ । रतन जोत कन्या कर नाऊ ॥
 मोती एक घँटा मो कीजे । जलधिम भार डार तेहि दीजे ॥
 यह मोती काढे जो राजा । सोई वर कन्या कर छाजा ॥
 मोती काढ न पारै कोई । काढे सोई वर जो होई ॥

सिव भावित के पाछें, सिवा कहा तेहि ठाउँ ।

होत भलो इन्द्रावति, वह कन्या को नाउँ ॥२६॥

राजे दोऊ नाम तेहि राखा । रतन जोत इन्द्रावति भाखा ॥
 रूपम्मा धाई तेहि पाला । लाग चले महि ऊपर चाला ॥
 भइ जो समान भई चितगरी । पदि बिद्या भई विद्याधरी ॥

छागी साथ अगमपुर वारी । जोरेठ स्यामा राज दुलारी ।
जगपति सरन सुता कर पाया । कीन्हा परन जो ईस यताया ॥

बूटे बहुत समुद्र में, मोती चढेउ न हाथ ।

नहिं जानौ को देह है, सेंदुर ताकी माय ॥२७॥

मण्डप मो जाते जय भागी । घरसदेवस पर तीरथ लागी ॥

जय आगमपुर कह मैं गएऊ । पूजा नित मण्डप मह भएऊ ॥

तति खन भै चहु ओर पुकारी । आवत है जगपति की वारी ॥

पन्थ देव कोउ रहइ न आगे । जात मंडप कह पूजा लागे ॥

पन्थ छाड भा सय कोउ ठाढा । सयके हिये प्रेम रस याढा ॥

पंथ छाड सन ठाड भा, नैन भएउ सय देह ।

इन्द्रावति दरसन नित, सय मन बढेउ सनेह ॥२८॥

सय मानुस मन प्रीत घनेरी । उपजी इन्द्रावति मुख केरी ॥

मुकुर बने चाहा सय कोई । जामो अरइ परै मुख सोई ॥

सखिन साथ इन्द्रावति आई । घरनि न पारौ सुन्दरभाई ॥

रहि न मखी सुन्दर जहा ताई । जितअस लिहें रतन कह भाई ॥

देह भई सय आगम वारी । जीउ रही इन्द्रावति प्यारी ॥

सखी रहीं अन्तर पट, देखा चिरलै कोई ।

मंडप धीच गई वह, सय को मति नग खोड ॥२९॥

रचिफ तेहि देखा जो कोई । कीन्ह बरान आप मो सोई ॥

कहुव कहा अहै अपठरा । नहि चितएउ ऐसैं मन हरा ॥

काहुव कहा दिए जो देती । मन औ प्रान दोऊ हर लेती ॥

रूप गगन जग काया वारी । है जित है जित है जित प्यारी ॥

जो वहि मुख को परगट देखा । गूग भएउ भा वाउर भेखा ॥

तेहि अस आपुहि होइ रहा, रहा न ताहि विवेक ।

जातें जानैं एक मैं, औ इन्द्रावति एक ॥३०॥

इन्द्रावति घर कीन्ह बहोरा । ससि होइ लै नलत्र बहु ओरा ॥
 आप गई मन्दिर कह प्यारी । बहुतन को कह गई भिखारी ॥
 जो रविक ता दरस पाया । हाथ मलेउ मानेउ पलताया ॥
 कहा सहेलिन बैरिन भई । वोटी वोट किहे ले गई ॥
 आज भाइ वह परगट भई । मिला न दरस गुप्त होइ गई ॥

सुमिरेउं सिरजनहारही, जय देवेउं असरूप ।

ऐसो रूप संवारहु, धन्य त्रिविष्टपभूष ॥३१॥

है पदुमिनि इन्द्रावति प्यारी । ताको बदन रूप फुलवारी ॥
 कोमलताइ सुन्दरताई । सै रचना सो घरनि न जाई ॥
 दिगंत हरा मान मृग केरा । मन लजाइ बन लोन्ह बसेरा ॥
 ना अति लाय न छोटी आही । है तस इन्द्रावति जस पाही ॥
 यह बखान का घरने होई । जो देखा जानहि पइ सोई ॥

कै बखान जोगी कहा, मोहि जाने होराय ।

चन्द्र बदन इन्द्रावति, तोहि सपनाएउ आय ॥३२॥

पहिले इन्द्रावति सुकुमारी । रहिल रतन दरपन मो प्यारी ॥
 जब जगमो अवतरी नवेली । ताको दरपन भई सहेली ॥
 है वह दीप सिखा उँजियारी । आपन जोत सखिन मो हारी ॥
 है वह रतन खान आभा को । जोत सुरूप रूप है ताको ॥
 है आनन्द बदन वह प्यारी । छवि तापर है छट सटकारी ॥

इन्द्रावति है पदुमिनी, रम्भा तुलै न ताहि ।

एक जीभ सां कित मैं ताको सको सराहि ॥३३॥

सुनत घरान कलिजर ईभू । तपिय चरन पर हारेउ सीसू ॥
 कहा कुवर हो सिद्ध सरीरा । ओपद दै काटेहु मन पीरा ॥
 सपन बिचारेहु मोर गुसाईं । पीरा हरेहु रही जह ताईं ॥

जेहि राणी कर करहु बखानू । निसधे हरा सोई मन जानू ॥
 तजि कइ राज होय मैं जोगी । इन्द्रायति पर होवैं चियोगी ॥
 हाँ मैं चेला तुम गुरू, धिनै करत हाँ तोहिं ।

आगम पन्थ देखावहु, लै पहुँचावहु मोहिं ॥३४॥
 तपिय कहा तोहि जोग मछाजा । बैठे राज करीजे राजा ॥
 अहे कठिन आगम को बाटा । गहिर ससुद्र न बाह न बाटा ॥
 जौ है गुलिक काढियो गाढा । सिन्धु न जानै तट जौ ठाढा ॥
 हे हम कहैं तीरथ बहु करना । कासिय पन्थ उपर पग धरना ॥
 जाय दयाग करत अज्ञानो । पुनि भेस को देखत जानो ॥
 तपी भेस मैं मानुष, नाम मोर गुरुनाथ ।

तय गुरुनाथ कहावउँ, जय आनउँ तप हाथ ॥३५॥
 कुषर कहा गुरू नाथ गोसाईं । राज रहा नीठा अवतारै ॥
 अब निसचै मैं होय भिखारी । तहा बलिजाठ जहा बह ध्यारी ॥
 जित को लोभ फहु मोहि नाहीं । ता नित पैठठ पायक नाहीं ॥
 अगुवाई जौ कीजे नाथा । तो बह भूल होइ मोहि हाथा ॥
 ना तो मुनिरत दया तुम्हारी । जाठ तहा होइ तपसि भिखारी ॥

राज पाट सय छाड़उँ, लेउँ अगम को पन्थ ।
 पन्थिक होऊँ अगम को, पहिर जोग को कन्थ ॥३६॥
 जाना तपी तजहि सुख पाटा । हियें सुधान अगम की बाटा ॥
 सकत आपनो परगट कीन्हा । देव दिष्टि राजा कह दीन्हा ॥
 माया रहित कीन्हा समुसाई । उपवन सो कीन्हा अगुवाई ॥
 फुलधारी मो राय खरेखा । पन्थ सहित आगमपुर देखा ॥
 देखा देस अगमपुर केरा । रीझि रहा राजा भा चेरा ॥

अगम पन्थ मन में बसेउ, भूली दूसर बाट ।
 हिर्द चिन्त सोउ तरिगा, राज मुकुट औ पाट ॥३७॥

सपिय कहा राजा कुठ सूफा । राजा सुनत मरम सय धूफा ॥
 कहा भएउ कृपाल गोसाईं । सूफी बाट रही जहा ताई ॥
 सूफा इन्द्रायती कर देसू । होएउ निसचै जोगिय भेसू ॥
 सुनि गुरनाथ ऋपेश्वर जीना । पन्थ अगम राजहि पहिचाना ॥
 गुपुत भएउ पुनि कुवर न देखा । आएउ मन्दिर राय सरेखा ॥

शुरू जानि गुरनाथहीं, चेला आपुहिं जानि ।

आगम जोग धरा चित, मन परान सों मानि ॥३८॥

कालिजर सो भएउ उदासा । भएउ नरक मन्दिर-कविलासा ॥
 सुन्दर कहा कनक कस जीक । कस उदास तेहि देखत पीक ॥
 परेत सीस कपर कछु भारा । ऊदासैं है जीउ तुम्हारा ॥
 दीन्हा ऊतर सुन्दर केरा । सैतुक बीच सपन भा मेरा ॥
 सुनेउ आज मैं तेहिक बरानू । सपन देखाइ हरा जेइ ज्ञानू ॥

राजपाट धन भोग सुख, सय तजि साधौं जोग ।

जाउं वोही के देस कहं, होइ संजोग वियोग ॥३९॥

सुनि कै कहा सुन्दरी राजा । तुम्है भोग तजि जोग न छाजा ॥
 सुख सम्पत सब दीन्हा दाता । मारु न छीर भात मो लाता ॥
 कहा रहैठ अथलग मैं भोगी । अब मैं होउ अगम को जोगी ॥
 जोगी होउ अगमपुर केरा । लेउ जाइ तेहि गलिय बसेरा ॥
 भोगी बीच रहैठ जठ भूला । कित मोहि हाथचढइबहमूला ॥

तुम कामिनी मत हीनो, भोग सुपावहु मोहि ।

प्रेम खींच है मो कहं, सुझवृक्ष नहिं तोहि ॥४०॥

राजें राजपाट सुख तजा । प्रेम आइ भति सो अरबजा ॥
 मनमो प्रेम बसेरा लीन्हा । बरबस राजा प्रेमिय कीन्हा ॥
 प्रेम अग्नि मनमो उदगरी । तासो दाऊ बुद्धि कर जरी ॥

भार वोही राजा सिर परा । जो नभ औ सहि को बल हरा ॥
निघर मनुष को घन मनुगार्डे । जो अस भारिय भार उठाई ॥

प्रेम आग के चाढ़े, मेधा भयो मलीन ।

सूर किरिन के आगें, है मयंक दुति हीन ॥४१॥

दे कलरार आय बलि बेगें । है में ठाढ़ सिन्धुना नेगें ॥

है निर्मल मद सदा तुम्हारा । मोहि लेखें सज ठाकुट द्वारा ॥

दे मदिरा भर प्याला पीयो । होइ मतवार कापरा सीयो ॥

सो कापरा कापे पर डारव । जोगी होइ जग चाहत मारव ॥

होइ जोगी तेहि देसहि जाऊ । है जेहि देस सुप्रीतम ठाऊ ॥

मोहि यह देस न भावत, छन है बरपसमान ।

अब तेहि देस सिधारउ, जहा रहत वह प्रान ॥४२॥



[४] जोगी खण्ड ।

छाबैठ कुभर राज सुख भोगू । साधेउ आगमपुर को जोगू ॥

भा जोगी इन्द्रावति लागी । लीन्हा सारङ्गी अनुरागी ॥

राज दुकुल मय तुरत उतारा । जोग कापरा कापे डारा ॥

रासा जटा घटाएउ खेहा । कीन्ह सनेह सनेहिय देहा ॥

जावत जोगी रहा ममाजा । तावत कीन्हा प्रेमिय राजा ॥

आठ मित्र राजा के, पहिरा जोग दुकूल ।

सुख सवाद को चिन्ता, गणउ चेत सो भूल ॥१॥

चन्दन चढत रहा जेहि काया । सो तेहि काया भसम चढाया ॥

नित जेहि सीस फुलेल चढाएउ । भसम चढाएउ जटा घटाएउ ॥

जेहि कर सरग बीज सम रहेऊ । तेहि कर सारङ्गी लै गहेऊ ॥
 धरन धरनि जेहि पाय न ठाऊ । तेहिपगु राजहि लीन्ह सराऊ ॥
 प्रेम पाय वह राजा भोगी । भातजि भोग आगमिय जोगी ॥

राज काज तजि राजा, लीन्ह अगम को जोग ।

परेउ नगर कालिजरै, राजा कारन सोग ॥२॥

समुझावै कालिजर यासी । राजा मन की तजहु उदासी ॥
 जाको रूप न देखेहु राजा । तेहि कारन यह जोग न छाजा ॥
 औ नहि जानत है वह मारी । है वह गोर कि सावर कारी ॥
 देस बहुत जेई कीन्हैउ फेरा । सो जन भूठ कहइ बहुतेरा ॥
 तपसी बहुत देस फिरि आएउ । भूठ कहानी तुमहि सुनाएउ ॥

राज न भाडहु राजा, होहु न जोगी भेस ।

ना होइहि इन्द्रावती, ना आगमपुर देस ॥३॥

कहा प्रेम है जाकर नाऊ । सुनि यरान उपनत मन ठाऊ ॥
 तपिय न भापा भूठ कहानी । साच रही तब हिये समानी ॥
 इन्द्रावति दाया पर आएउ । मोहि नित प्रेम बनीठ पठाएउ ॥
 तब न बसीठ अहे यरियारा । फादा आइ घोठ मह डारा ॥
 आगमपुर दिन रावत सोई । कैसे रहन कलिजर हेई ॥

सावर गोर रङ्ग को, अहै न हम रुहं ग्वाज ।

नैन भवर सम होइ रहे, चाहे दरस सरोज ॥४॥

पुनि बोले कालिजर लोग । राज छाड कित छाजइ जोग ॥
 गगन समान ऊचगढ आही । अस गढ उन्नत तजइ न चाही ॥
 दूसर ऐसे है नहि कोई । पाछें राज सन्हारइ सोई ॥
 नहि जानहु परदेसिय साका । परधत सो भारी बन साका ॥
 औ राजा अस कहइ न कोई । आगमपुर को अगुवा होई ॥

अनुचा बिना न पावहु, आगमपुर को पन्थ ।

जनि दुख वस्तु येसाहुहु, पहिरि जोग को कन्थ ॥५॥

कहा राज आवइ केहि काजू । जोग थीच पाएउ में राजू ॥

दोऊ जगत देइ कर कोऊ । एऊ रती पर लेउ न दोऊ ॥

यह गढ सो का करउ हितार्ह । हे गढ दहन हार दहि जाई ॥

आगमदेस भूषि मोहि आएउ । गुरु नाथ मोहि पन्थ देखाएउ ॥

मो मन यसा प्रेम तेहि केरा । उहइ प्रेम अगुवा है मेरा ॥

मैं जोगी हउं यावरो, जाउं सो आगमपुर ।

घात समेटहु आपुनू, है जाना मोहि दूर ॥६॥

कहेन छियर अस चलन न छाजा ॥ गवनउ सुदिन साधिकइ राजा ॥

जातैं जोग लाभ कर होई । सुदिन साधि गवनत सय कोई ॥

कहा मोहि प्रेम घरी नहि देई । कैसें गवनउ सुधि नहि लेई ॥

ता दिन गवन सुदिन मैं पावा । जा दिन प्रेम हकारइ आवा ॥

जाई प्रेम तुरतैं गोहराई । चलहु चलहु दिन बीना जाई ॥

प्रेम न देत घरी मोहि, देवस कहां से लेउं ।

भलो देव सदै यह दिवस, आगमपुर पग देउं ॥७॥

कालिजर के लोग जो रहा । राजा साथ चले सत्र कहा ॥

धिनय कीन्ह सबसो तय राजा । प्रेम के पन्थ बटोर न छाजा ॥

कठिन अगम सचर है भाई । हलुठ रहत तो पहुचउ जाई ॥

दुचित रहत सुम नित मन ठाऊ । सुनिरि न सकऊ प्रीतम नाऊ ॥

बाढै गरब देखि कै सैना । मद तैं कहउ गरब की पैना ॥

होउं अधीन अकेला, कटक न लावउं साथ ।

मकु अधीनता सो चढै, आइ चलम्भा हाथ ॥८॥

कहे न अकेल न साधहु जे गू । का बोलहि आगम के लोगू ॥

नृप नहि कोऊ अहइ भिखारी । कित तेहि जोगें राजकुमारी ॥
 ठाकुर गरुअ अगु सो होई । जेहि सँग अगु गरुव है सोई ॥
 लोग कहै जह लेहु यसेरा । है राजा कालिजर केरा ॥
 ससि तारन को सेवर पावा । निसिपति तारापति कहवावा ॥

जानि परत राजा स्रवन, परी न है यह बोल ।

टीडी दल के आस तें, होत दमामो डोल ॥९॥

दीन्हा उतर नहीप वियोगी । है अस भीख लाग मैं जोगी ॥
 भेष किहैं वह भीख न पावत । तब पावत जब भेष मसावत ॥
 चवत अकेल सूर वैजियारा । होत अलोप चन्द अवतारा ॥
 प्रेम नगन होइ बदन देखाएउ । मोही ससि की प्रभुत नमावत ॥
 गइ अथ हाथ सो आपा मोरी । प्रेम करइ दुति लीन्हैउ छेरी ॥

चन्द्र हाथ भा छूछा, रहा न मन को गर्व ।

तारा सङ्ग लेइ कित, लूटि दर्य गा सर्व ॥१०॥

प्रैसक भान जो दया करी है । फिर जो तामो समि कह दी है ॥
 तलिकै चलेउ जो नाम को ठाक । जोगी भएउ न चाहै नाक ॥
 जज मैं आपन नाम भुलावत । तब वह नाम जगत रस पावत ॥
 जो मैं चढतेउ आपन नाक । करतेउ राज कलिजर ठाक ॥
 धिरहु सबै मैं होउ बढोही । साथी आठ बहुत है मोही ॥

राजा आयसु मानि सय, फिरे कलिंजर माहिं ।

अगम पंथ पगु राखा, कुवर जोग को नाहि ॥११॥

सुन्दरीहु तें उठेउ पुरारा । हम केहि कारन करघ सिगारा ॥
 चिनगी भएउ सोग सो धूनी । प्रीतम चला सेज भइ सूनी ॥
 केइ सोनार हथकेरा कीन्हा । कनक सोहाग मोर हरि लीन्हा ॥
 बसत सदन केइ सत्रु उजारा । हरि लेइ जला परान, हमारा ॥

धन के रोयत रोयइ चेतो । कोरेन बलिया लागेठ डेरी ॥
लाजयन्ति सुन्दर रही, पियहिं न बरजा जात ।

धीरज हिंदें में घरा, कछु न सुनाएउ बात ॥१२॥
सुन्दर कह समुभावइ लागू । राजै लीन्ह अगम कर जोगू ॥
राजा पन्थ अगम पर चला । रोए ताहि न होइह भला ॥
जो रोए सो राजहि पावहि । अस रोवहि श्रीलोक रोवावहि ॥
रोए सो पिय केरि न आवहि । करु सोई जासो सुख पावहि ॥
दिन दिन अहइ रोइयो रानी । अथ यह समै समुझि सयानी ॥

बहु दिस सय समुभावैं, गई जनहु ठग मार ।
यसा मंदिर कविलास सम, प्रीतम कीन्ह बजार ॥१३॥

जोग खेल आगमपुर खेला । गुरुअ अकेल आठ सम चेला ॥
छोरेन कालिजर गठ ठाक । सुमिरेन इन्द्रायति कर नाक ॥
पूछइ चेला करइ निहोरा । आगमपुर अहइ केहि ओरा ॥
जेहि मगु लाग लीन्ह तुम कन्या । है राजा केहि दिस बह पया ॥
कहा चले आवहु मोहि पाछें । जेहि दिस चलहु चलहु कटिफाछें ॥

जय हम तजा कलिजर, लीन्ह जोग को कन्ध ।
मन मो बृभहु चेत कै, इहइ अगम को पन्थ ॥१४॥

करत पयान जपत बह नाक । लिहे न बसेर देहपुर नाक ॥
भजन जीभ की राजै साधा । खाय अहार प्रेन सो आधा ॥
जोगिह आपन उदर न भरई । मन मो जोग अस तब परई ॥
उदर भरे घट जात न होई । खाय मनाक जोगेवर सोई ॥
जपत कुवर इन्द्रायति नाक । काटेउ रैन देहपुर ठाक ॥

भोर होत भा पन्थक, सातो बन नियरान ।
पहिले बन में आएउ, देखत चित्त हेरान ॥१५॥

पहिले बन मे राज सरेखा । भातहि भात कि पच्छिम देखा ॥
 एक कहा बन केरा कीजे । पत्री भात भात लखि लीजे ॥
 राजें कहा जोग हम लोन्हा । आगम पहुँचै पर चित दीन्हा ॥
 बीचहि सौ रङ्ग देखि मुलाऊँ । कैसे आगमपुर कह जाऊ ॥
 एकै रूप इन्द्रावति केरा । मोहि आखिन मो लीन्ह्यसेरा ॥

जो मैं फीरों दुर्ग में, तजि कै सुघो पन्थ ।

बाजर फिरों भुलाना, काटें बाँके कन्थ ॥१६॥

दुसरे बन मे राजा आएउ । मधुर सबद पच्छिम से पाएउ ॥
 एक कहा यह सबद सोहावन । धिरके सुनि लीजै मन भावन ॥
 राजें कहा धिरवें तेहि ठाऊ । जहा सुनवें इन्द्रावति नाऊ ॥
 सरवन बोही सबद पर लाववें । जामो नाम रतन कर पाववें ॥
 जान सबद है मोहि विषयानू । सरवन परत छेत है प्रानू ॥

जो सुरपुर की अपछरा, राग सुनावै आइ ।

मोहि न भावै रंचि कौ, घर मोहि धै धै खाइ ॥१७॥

तिसरे बन आएउ नरनाहा । मिलेउ सुगन्ध तहा बन नाहा ॥
 साधिय एक कहा है राजा । यह बन लेत बसेरा छाजा ॥
 प्रान अहार सुगन्ध बसाई । लेहु प्रान को प्रान अछाई ॥
 कहा प्रीतम छट कर वासा । चाहत है राखवें नित आसा ॥
 है इन्द्रावति आप अकिली । कमल बसेली मालत बेली ॥

तेहि मालत की वास पर, हैं मैं मधुकर भेस ।

कचहं पावउ वास मैं, जाइ अगमपुर देस ॥१८॥

जब आये बाँचे बन जहा । फले बहुत फल देखा तहा ॥
 साधिय एक कुवर से बोला । फलहियिलो किसो रसना सोला ॥
 आज करहु बन बीच बसेरा । तोरि अहार करहु फल केरा ॥

राजें कहा भूख मोहि नाही । खाउँ कहा फल यह बन माही ॥
 है अनरुध चाहन ही कखा । वहि दरसन का ही मैं भूखा ॥
 हैं वरती तेहि पन्थ को, इन्द्रायति जेहि नाउँ ।

फल अहार तेहि दरस को, चाहैं तेहि दिस जाउँ ॥१९॥

काटत पन्थ महीप सयाना । पचैँ बन मो आइ तुलाना ॥
 छोटहि छोटे कोमल घासा । नहि पर लागि रहा घहुँ पासा ॥
 साथी एक कहा मन भावन । है अति कोमल पास बिछावन ॥
 पन्थ बहुत काटा तुम भूखर । दर विसरान करहु तेहि ऊपर ॥
 कह की कोमल सेज जो चहतेवैं । राजहि देन कलिजर रहतेवैं ॥

मोहि विसराम कहाँ है, जय लग दरस न होइ ।

चलेऊँ हिर्दे पादिसों, सुख को अन्धर धोइ ॥२०॥

छठैँ बन मो राजन आएउ । सो बन नाचत बेर न लाएउ ॥
 नाम जपत इन्द्रायति को । सतैँ बन मो लीन्ह बसेरा ॥
 साधिय एक कुंवर सो कहा । बन बिगहरि सो लूटो अहा ॥
 राजें साथी को समुझाया । जेहि दरसन पर मै बित लाया ॥
 अइइ हमार सधातिय सोई । काहेक भेंट याच सो होई ॥

काम क्रोध तिसना मया, जो नहिं जात नेवारि ।

नरक होत बन सानो, हम कहं पन्थ मझार ॥२१॥

जब राखत ही मगु पर पाऊ । बाढत मानस आगम चाऊ ॥
 जात एक तारा सम आगे । दिष्टि परत देखवैं अनुरागे ॥
 जो अथ टावैं छाहि कह पन्था । भूलवैं कादे बाझै कन्था ॥
 तिरा मारि पन्थ जो चला । ताकर होइ पन्थ मह भला ॥
 याही जो चाहे भल होना । योरा सोना योरा सोना ॥

नूर मल्हमद सो मनुष, जिअै सदा सुख चैन ।

प्रेम पन्थ मो जा मन, जागा दिन अउ रैन ॥२२॥

जब सातो घन पालेंय डारा । पहुचे तब देहन्त मकारा ॥
 सात सखा सो राजन बोला । बात विनै रस पागिय रोला ॥
 हो मै तासु गलिय कर जोगी । जा सुमिरन सो जगत सजोगी ॥
 हो मै जोग पन्थ कह काया । एका जोग भेद नहि बोचा ॥
 तुम सब कह मै साथ लगाएँ । जाइ न सकउँ लाज मै पाएँ ॥

थिरहु सबै देहन्तपुर, तब मेलेउँ बोलाइ ।

जब मोहिं अलख दयालहोइ, जिउकों देइ मिलाइ ॥२३॥

साधिन को बिछुरन की बाता । घोर बान होइ बेधेसि गाता ॥
 कहा न मेटेन राजहि केरा । रोइ लिहेन देहन्त बसेरा ॥
 आज बिमुख भा प्रान हमारा । हम कह मझुसो कीन्हनिनारा ॥
 जो आपन सँग तजि कै जाई । प्रीत किहे सो कान भलाई ॥
 छुप है जब लगि रहै मेराऊ । बिछुरत जिय पर नारइ घाऊ ॥

ता सँग प्रीत करीजे, जियत न छाड़ै साथ ।

ना तौ बिछुरे आवई, पछतावन निज हाथ ॥२४॥

बुद्ध सेन सँग है हित खाती । नाचा घन औ परधत पाती ॥
 आगे आइ सिन्धु नियराना । पार जाइ कह गाढ अटाना ॥
 तत खन काया पति बनि जारा । जाइ चहा उतरइ कह पारा ॥
 पूछा मरम जोग कर सोई । राजै कहा न राखेव गोई ॥
 प्रीत बीज काया पति बोवा । आपन बिपति कुधर सो रोवा ॥

जो कानन तुम नाधि कै, आएहु तप के जोर ।

तेहि कानन एक सामै, दरब लूटि गो मोर ॥२५॥

बनिज लाग आगपुर गएऊ । आगम हाट बीच में भएऊ ॥
 हाट जहा आगमपुर केरी । देखेवँ यहुत वस्तु कह डेरी ॥
 सोही तहा उतीसव जाती । लेनो देन करहि दिन राती ॥

आया गजन काइ मघ कोई । वस्तु लेहि अस पूजिय होई ॥
 पूजी रही तपस मैं लीन्हा । यन मो अलख अदरयी कीन्हा ॥

पुनि दयाल भा दाता, सुमिरत ताको नाउँ ।

आगमपुर की हाट कहं, वस्तु बेसाहन जाउँ ॥२६॥

बोहित पढे दोऊ धोमानू । कायापनि और कुशर भुजानू ॥

पल पल उठै लहर हलकोरा । खेवक खेवत मुख नहि मोरा ॥

लखि समुद्र को उरमी गाढी । खेवक घात बोध कर काढी ॥

मनते साहस तऊहु न राजा । लाइ अलखतटपुर इहि काजा ॥

लहर देखि जो धीरज तजा । तीर न मिल सिधु नह भजा ॥

धीरज धरे रहहु मन, सुमिरहु एकहि नाउँ ।

बेगि तीर तुम पावहु, धीरज के बड साउँ ॥२७॥

हो खेवक भाषा तुम भला । ज्ञान सरोत भएव निर्मला ॥

ताहि समुद्र मो हो मैं परा । जेहि आगे यह बुन्देक धरा ॥

अम्बु सीस ते नीचेह नाहीं । सात समुद्र होव उपराहीं ॥

प्रेम समुद्र की लहरैं गाढी । तन से जीउ लेत हैं काढी ॥

सुमिरन मान वियारी केरा । जित कह तन मो देत बसेरा ॥

प्रेम समुद्र अथाह है, बूढे मिले न अन्त ।

तेहि समुद्र मैं हैं परा, तीर न मिलत तुरन्त ॥२८॥

खेवक गुनी तीर लेइ आवा । सिन्धु तीर सब काहू पावा ॥

अबध पार होइ राजा जोगी । जाइ बसा जितपूर वियोगी ॥

जितपुर माह प्रेमिय राजा । गुप्त आप घटमो उप राजा ॥

जेइ मुरत तेहि प्रेम बढाएव । स्वात पत्र पर ताहि घनाएव ॥

तेहि ऊपर अस लाएव ध्याना । रहि गइ मुरत आप हेराना ॥

तेहि पल एक चितेरा, आएव राजा पास ।

जोग फूल को मधुकर, भएव पास रस आस ॥२९॥

जोगी मरम चितेरहि पावा । रहसि कुवर को बात सुनावा ॥
 जो चाहसि लखु नेहिय देहा । इन्द्रावती को मूरत गेहा ॥
 राजे सुनि कै बदन न फेरा । पछि लगे भएउ चितेरा केरा ॥
 जाइ चितेरैं सदन उचारा । भा मन्दिर मो राज कुमारा ॥
 सहस अठारह मूरत देखा । देखा रानिय रूप सरेखा ॥

भएउ विचित वियोगी, चित्र संवारन द्वार ।

मन्दिर बाहर कीन्हा, दीन्हा फेर केवार ॥२९॥

जब जागा मोहा अनुरागी । अधिकै प्रेम अगिन मन लागी ॥
 मैथा दाह हितानल पावा । लवर बढावा ताहि जरावा ॥
 जब जिअन्तपुर पहुँचा राजा । बुद्धि छाड तहा सो भाजा ॥
 बुद्धि सेन बिछुरन दुख भेटा । पै राजा को कहा न भेटा ॥
 आप जिअन्तपुर नहँ रहा । धीज गहा बिछुरन दुख सहा ॥

कुंवर अकेला होइ चला, लै सारङ्गी हाथ ।

जेहि कारन भा जोगी, तेहिक प्रेम तेहि साथ ॥३०॥

आगमपुर आइ निपराजा । राजा को जिव मन रह साना ॥
 दिष्टि परा जबहीं कबिलासा । मिलेउ सुगन्ध प्रीत को वासा ॥
 जतिय एक राजा भँग लागे । जोगी जाय कि रस मह पाये ॥
 कहेसि कहा लग गवन गोसाईं । लेख बसेरा निसि केहि ठाईं ॥
 हन तापसी अगमपुर आई । कवन देस तुम हिरदै माही ॥

कहा जतीं सो राजा, आगमपुर मैं जाउ ।

रात बसेरा लेइ मैं, एहि आगमपुर ठाउ ॥३१॥

अहो बहुत ठाऊ है तहा । रात बसेरा लेइ है कहा ॥
 जो देखै चाहत भल नारी । मनतारा पर जाहु भिखारी ॥
 ससि बदनो पनिहारिन आवैं । परगट आपन रूप देखावैं ॥

जो चाहसि कुछ वस्तु येसाही । हाठ बसेरा नीको आही ॥

जो तुम होहु भोख कर चेरा । राज दुवारें लेहु बसेरा ॥

जो विद्या तुम चाहौ, पहुचहु विद्या ठौर ।

नां तो इस्सर मंडपै, भलो नाथ ना और ॥३२॥

कहा कुयर मैं लेब बसेरा । जहा थान गौरीपति केग ॥

जा दिन मैं गुमसुप फल पावा । रूप एक मोहि गुहज देखावा ॥

वही रूप है हिंद सनाना । जान रूप मैं हिये न जाना ॥

छूछ दरब से हाथ हमारा । वस्तु छिन की ताहि प्य पारा ॥

आपन भोख ताहि मैं चीन्हा । जोग भेष जेहि कारन लीन्हा ॥

हैं जोगी जेहि दरस नित, आपन दहैं सरीर ।

विद्या है तेहि रूप को, अन्तप पद गम्भीर ॥३३॥

आ आगमपुर कुगर ब्रियोगी । मानहु सरग बीच जा जोगी ॥

महि निर्मल देया तपधनी । घातो मनहु रूप की बची ॥

रहेठ आप माटी एक सुठी । भैंएच प्रेम बल से बैकुठी ॥

करता हित माँटी सङ्ग हेरा । नासा गरब पाव किय केरा ॥

माँटी भीतर रतन छिपाया । या नित आदर तेहिक बडावा ॥

सब ऊपर उत्तम जनम, अलख मानवहिं दीन्ह ।

आपन याती ताहि है, याती हारा कीन्ह ॥३४॥

महा देव के मण्डप पासा । राजा बसा मनोरथ आसा ॥

जाइ सनेही निज अन्न पावा । इस्सर के आगें सिर नावा ॥

महादेव देवन के देवा । होहु दयाल करब मैं सेवा ॥

नहि नहि बूझ ऊठेउ प्रभूना । सेवा जोग कहा मोहि दूता ॥

हुहु अन्तर जामी तुम देवा । जानन हुहु सब मन कर भेवा ॥

होइ दयाल गौरी पती, पुरवहु काज हमार ।

मनसा पूजै कारने, लीन्हा सरन तोहार ॥३५॥

जय नहेस कह यहुत मनावी । सबद एक मखप सो आधा ॥
 प्रम पूर पूरा है जहा । रानी की फुलवारिय तहा ॥
 तेहिक नाम है मन फुलवारी । धिरहु जाइतेहि बीचभिखारी ॥
 वोहि फुलवारि छेहु बसेरा । मिलै दरस इन्द्रावति केरा ॥
 सबद पाइ राजा रहसाना । सुनिरिसुनिरिइस्सरहि बखाना ॥

रैन गवाएउ जाप में, भोर होत तपि नांह ।

प्रेमपुरा में होइ कै, भा फुलवारी माह ॥३६॥

जय राजा फुलवारिय आएउ । बास सुगन्ध प्रीत कर पाएउ ॥
 मन फुलवारी मन फुलवारी । भएउ भएउमनमुदित भिखारी ॥
 फूलन सो दरसन कर चेरा । पाएउ रँग इन्द्रावति केरा ॥
 पर चिन्ता कह छाडेउ जोगी । एकै चिन्त मो परा वियोगी ॥
 मन बारी मन बारिय पावा । बीरो प्रेम प्रीत को लावा ॥

प्रीत बीज मन खेत में, वोएउ राज कुमार ।

इन्द्रावति को दरस हित, बैठा आसन मार ॥३७॥

जेहि दरसन ऊपर धित रहई । बचन देखाव दरस को कहई ॥
 देख न मको होइ सदेसा । अन्तो प्रगटै किरपा भेसा ॥
 जोत सैल के ऊपर डारइ । दरस देइ अन्तर पट जारइ ॥
 गिरइ ब्रुहु बीसाखिय करसे । होइ सरप तेहि धरइन डरसे ॥
 आय सुपाय परइ तब सोई । जीसे रहै तयस पुनि होई ॥

दरस पाइ कै मुरुमै, रहइ न चेत गेयान ।

प्रेम अरथ यह भापित, बृक्ष चतुर सुजान ॥३८॥

अरे मित्रनी प्रेम पियारी । तोहि सम नहि दृमर कट्यारी ॥
 फागुन मास बीच जस लीजे । खेलवँ फाग यामनिय दीजे ॥
 एक पिमाला हाला पाववँ । त्रासहि छाडिदेहागियायवँ ॥

जेतिक भई काय रुद अगू । जेतिक करहु ताछ निरदंगू ॥
 सुर के पाव तरैं निर नावैं । दुम के मिर पर होलिक छाववैं ॥

बिना कदम्बरि के पिणं, त्राम न मन सो जात ।
 दयावती होइ दीजिये, होलिक लागी प्रात ॥३९॥



[५] फाग खण्ड ।

आगमपुर कविलास मकारा । फागुन आइ अनन्द पमारा ॥
 एक दिस पुरुषे एक दिस गेरी । हिलमिलगावहि चाचर जेरी ॥
 हँस बजावहि औ निरदंगू । पिचकारिन सो भरइ सुरंगू ॥
 धन के ऊपर डारहि नाहा । धन डारहि पूरुष उपराहा ॥
 रङ्ग अघोर भरा सब कोई । जो जहा रहा भरा तहा सोई ॥
 गली गली घर घर सकल, मानहिं फाग अनन्द ।

माते सब आनन्द सो, भा फागुन सुख कन्द ॥१॥

किस आनन्द मानइ कोई । वै चिन्ता पाछें सवैं होई ॥
 औ फिर आएउ कहा अजोरा । रोवहु बहुत हँसहु तुम थोरा ॥
 मन पर घटा बुन्द घरमाया । एक बुन्द पर नद को आवा ॥
 औरन सो मानुष नियराना । नियरे सो हर बीच मनाना ॥
 राजा नियर रहइ जउ कोई । ता कहैं बहुते चिन्ता होई ॥

राजा के अस्थान सो, दूर जसै जो कोई ।

तेहि मन निष किठोर सो, चिन्ता बहुत न होइ ॥२॥

इन्द्रायनि राजा कर घारी । आगमपुर की प्रात पियारी ॥
 सरिन माष भूली मुख केला । औ भूली फागुन की खेला ॥
 धन के अङ्गन बल तरुनाई । आई छवि अधिकार बढ़ाई ॥

जोवन लाज नयन मो दीन्हा । मुगधा मो मध्या तेहि कीन्हा ॥
गइ चञ्चलताई बिरताई । आई लाज निकाइय पाई ॥

धन सूखै चितवत रहौ, निस दिन जेहि अंखियान ।

सो तीछे चितवन लगी, जोवन के अभिमान ॥३॥

इन्द्रावति सँग सखी महेली । गावहि गीत मनावहि केली ॥

सखिन साथ इन्द्रावति ठावै । सजनी रही बिरहनिय मावै ॥

सोवत मन बिरहिन को जागा । रही कमल अलि सङ्ग न लागा ॥

गाएउ होरिय बिरहनि गोरी । तरुनाई समय हइ धोरी ॥

जात अकारण है पळताना । कान्हा कुउरिहि मङ्ग लोभाना ॥

है अथाह जोवन उदधि, धात्री नाथ हमार ।

खेवक कान्ह कहा है, खेइ लगावइ पार ॥४॥

लाभा कौन मिलै जग माहीं । जो प्रीतम अपने घर नाहीं ॥

धन पिय कोरै पिय धन कोरा । सोवहि है दुख हम धन धोरा ॥

है जोवन हस्ती मतवारी । कहा महावत आकुस धारी ॥

बिर्थ खाद्य सोइय भौ जीवन । पिबना जियना लोहूय पीवन ॥

बिरह आग नित जारत देहा । अन्त एक दिन होइय खेहा ॥

जाइ बसाएउ मधु बनै, निदैं नन्द कुमार ।

हम धन भूरै रात दिन, गोकुल भएउ उजार ॥५॥

होरी प्यारी होरिय प्यारी । है नाही है मारन हारी ॥

गोरिन जोरिन के सँग होरी । गावहि होरिय बैरिन मोरी ॥

धना नहीं आएउ जोवना । गा सुख दुख आएउ अँगना ॥

फाग राग अनुराग बढावै । बिरह आग मनदाग लगावै ॥

धिनु प्रीतम बिछुरन बन माहीं । अहउ परी बन आवत नाहीं ॥

करता जो किरपा करै, मोलै प्रीतम प्रान ।

नाहीं तौ जिय जात है, फागुन होत निदान ॥६॥

सुनि होरी इन्द्रावति रानी । भइलि आपनो आतुर स्थानी ॥
 जेयन सिन्धु भगव औगाहा । ना तो पार होइ कह धाहा ॥
 खोज हिये खेवक कर कीन्हा । तजि आनँद तापरे चित दीन्हा ॥
 होइ उदास रानि जमुहानी । बुझे न जानी सखिय समानी ॥
 कहे न ध्यान धन का पर दीन्हें । धनुके बीच चन्द्रमा कीन्हे ॥

इन्द्रावति सखियन में, राखा भरम छिपाइ ।

दिन भर धन व्याकुल रही, गौ निसनीद पराइ ॥७॥

बीती रात भएउ जब भौरा । एक सखी आएउ धन भौरा ॥
 बैठिय बोलिय बात रसीली । तुम प्यारी सुकुमार लबीली ॥
 सोभा रूप बहुत तोहि माही । ऐसी रूपवती कोउ नाहीं ॥
 केहि लाहै यह छवि अधिकारी । आपन बदन न देखइ प्यारी ॥
 दरपन देउं देखु मुए सोभा । एते दिन लग जो भा सोभा ॥

पहिले अंजन नैन मो, दै लीजे हो प्रान ।

तब दरपन लै देखहु, बदन कनक को बान ॥८॥

सखी बात धन सरवन कीन्हा । अजन स्थान सखी तेहि दीन्हा,
 दीन्हा अजन आखिन माही । दरपन लै देखा परछाही ॥
 देखि बदन कर मज्जुल सोभा । धन मन अपने रूपहि लोभा ॥
 आमुहि पर रीझी वह प्यारी । रहिल अचेत भइल सुधवारी ॥
 पाएउ चन्द्र बदन उजियारा । कहा कहा है देखन हारा ॥

भएउ बेकल इन्द्रावति, चित गाँहक पर दान्ह ।

हीरा मनि बिनु जौहरी, कैसेहु जाई न चीन्ह ॥९॥

भइ व्याकुल इन्द्रावति रानी । मन मो गाँहक सोच समानी ॥
 लाग दोहाग मरीर मफारा । दगध दोहा को अहै अपारा ॥
 भइ विधइल इन्द्रावति बाला । भयो कपोल ईगुर हरताला ॥

इंगुर अधर दसन यह पारा । प्रेम क जाग दोऊ कह जारा ॥
अधर न हँसा न रद विहसाना । आ सँकेत मन कलिय समाना ॥

धन मन प्रेम आग पर, भा पारा के मान ।

चंचल औ व्याकुल भा, सुख औ नींद हिरान ॥१०॥

साको कहा नींद सुख भोगू । जाको प्रीतन लाग वियोगू ॥
खाय तबै जय भूस सतावै । बोलै तब जय कोर बोलवै ॥
देखै जोत रयन अधियारी । पियरो सेत अवर रतनारी ॥
सेत पियर मन जोत बिलोकै । और चँदर सम ब्रास न रोकै ॥
जिठ की जोत बहुत है सेता । औ परघट है सूरज जेता ॥

महा जोत यह नैन सां, कहाँ बिलोकै कोइ ।

चखु सरवन औ नासिका, तेहि पल एकै होइ ॥११॥

प्रेम समुद्र बीच धन परी । लहरै खाय चरी औ चरी ॥
हिरदँ भीतर करइ पुकारा । कहा हमारे खेवन हारा ॥
दिन व्याकुल निस नींद न सोवै । व्याकुल होइ मन आखिन रोवै ॥
काम के धान को बेका भई । बैरी ताहि भई तरुनई ॥
रहीलि एक तो अलप अहारी । औरै तजा अहार पियारी ॥

छूट गएउ प्यारी सां, सुख सोइय औ खाय ।

चिन्त भकोरा सो पियर, भएउ सो ललति गुलाब ॥१२॥

मरनी नाम सखी धन केरी । पूछा कस धन है गति तेरी ॥
तोहि मन मो कछु चिन्ता अहई । तेरो बदन मरम सख कहई ॥
काहे बिना भकोर ब्यारा । पियरो ललित गुलाब तोम्हारा ॥
है विस मो प्यारी मन माही । परमद छवि मुख ऊपर नाही ॥
कागुन भई मोद को मासा । तोहि अनन्द मनसो कह नासा ॥

दिवस चार सो देखउं, और बदन तोहार ।

अहै सीस के ऊपर, कछु चिन्ता को भार ॥१३॥

हो मरमी चिन्ता फलु नाही । अन्त सुरङ्ग फूट कुम्हिलाहीं ॥
 फूल रहत पहिले दिन नीका । दुसरे देवस होत रँग फीका ॥
 पुरन चन्द्र जो निमल होई । पुनि दिन दिन छीजत है सोई ॥
 ओ सय बिले देसु धन हेरी । लागइ भरइ पात ना केरी ॥
 हरियर रहई बिले कइ डारा । देखहु होन चहई पतिभारा ॥

रहै न एकौ अन्त कहं, नारँग दाडिम दाख ।

देवस चार की चादनी फिर अधियारो पाग्व ॥१४॥

कहेउ साच धन मान पियारी । पै नवीन है समै तुम्हारी ॥
 तुम धन अहो दुइज कै चादू । पूरनचन्द्र परेउ तोहि फादू ॥
 दिन दिन गो दूनी तोहि चाही । अबहि घटन की समै न आही ॥
 मैं मरमी मरमी हउं तोरी । हमलैं मरम न गोयहु गेरी ॥
 मित्र वषट् सो राखहि गोई । साको भला न कयहु होई ॥

नव पत्री तुम रानी, जिउ फुलवारी माह ।

सामय पत्र सरै की, नाही तोहि उपराह ॥१५॥

धन मरमी को मरमी पाएउ । दाया से तेहि कठ लगाएउ ।
 कठ लाइ धन कहैं धन रोई । मरगिस नीर गुलाजहि धोई ॥
 रोई कहा जा जोयन बैरी । का फीजे री देह दहे री ॥
 जोयन गजरिपु भारी भारी । कहा महाउन राखइ भारी ॥
 निसको नीद दिवस को खेला । हरा दोऊ होइ सत्रु नखेला ॥

जोयन सिन्धु मां हतन, भाजल कली समान ।

खिन विलात खिन प्रगटत, व्याकुल रहत परान ॥१६॥

अहो रानी यह जग माह । है यह गजक महाउत नाहू ॥
 जय लग गरी पाउस ताही । तय लग जान महाउत आही ॥
 काम जोध मन मारे रहक । रहत न व्याकुल धीरज गहका ॥

हो मरनी चिन्ता फलु गानी । अन्त मुरझ फूट कुम्हिलाहीं ॥
 फूल रात पहिले दिा नीका । दुबेर देखस होत रँग सीका ॥
 पुरा चन्द्र जो निमल होइ । पुनि दिा दिन लीजत है सोई ॥
 ओ सय यिछं देसु धन हेरी । लागइ भरइ पात ना केरी ॥
 हरियर राईं यिछं कह हारा । देसहु होन चहईं पतिभारा ॥

रहै न एकौ अन्त कहं, नारँग दाटिम दाख ।

देखस चार की चादनी फिर अंधियारो पाग ॥१४॥

फदेव साब धन मान पियारी । पे नयीन है समे तुम्हारी ॥
 तुम धन अहो दुइज के चाद । पूरनचन्द्र परेव तोहि काद ॥
 दिन दिन गो धूनी तोहि चाही । अवहि पटन की समे न आही ॥
 मैं मरमो मरनी हउं तोरी । हमतें मरन न जोबहु गोरी ॥
 मित्र बचद सो राखहि गोई । ताको भला न कयहू होई ॥

नव पत्री तुम रानी, जिउ फूलवारी माह ।

सामय पत्र झरै की, नार्हीं तोहि उपराहं ॥१५॥

धन मरनी को मरनी पाण्ड । दाया सो तेहि कठ लगाण्ड ॥
 कठ लाइ धन कहें धन रोई । नरगिस नीर गुलाबहि रोई ॥
 रोई कहा भा जोवन बैरी । का कीजे री देह दहै री ॥
 जोवन गजरिपु भारी भारी । कहा महाउत राखइ मारी ॥
 निसको नीद दिवस को खेला । हरा दोऊ होइ मनु मखेला ॥

जोवन सिन्धु मां हतन, भाजल कली समान ।

खिन बिलात खिन प्रगटत, व्याकुल रहत परान ॥१६॥

अहो रानी यह जग माह

यह जोवन को काह करैरी । एक समै सय को है वैरी ॥

तोहि मन भीतर चिन्त समानी । नीद कहा सो भावइ रानी ॥

नाव तोर रानी अहै, जोवन जलधि मझार ।

करता खेवरु मेरइहि, खेइ करइ तोहि पार ॥१७॥

इच्छा पूजै कहा हमारी । भइउ जगत मो मैं हृत्पारी ॥

निर्पे बहुत मोहि कारन आए । जलज जलधि मो जीउ गँवाए ॥

इत्या बहुत चढी है मो का । फित भल मोर होइ सुर लोका ॥

जानत हो अस जानय चाह्यी । रहस अकेली बिना बियाही ॥

मोतिव घर इन फाहुय हाथा । सँदुर चढइ न मोरैह माया ॥

अर्जुन धनुषारी कहा, राहु सो येधै आइ ।

मीटै पन अति गाढा, द्रोपद व्याही जाइ ॥१८॥

आम न छाडहु होइह काजा । अरजुन मम होई कोइ राजा ॥

जैसैं कपिधुज येधेउ राहु । भएउ द्रोपदी सङ्ग बियाहू ॥

तस वह मोती आइ निमारे । तोहि सँग परमद बितै सवारै ॥

सिउहिँ सुनिरु जेई परम बतवाया । तस मनाउ अस जाइ मनाया ॥

है सय काज घरी कर बाधा । आइ घरी हलुकाइहि काधा ॥

देह दुर्म पलुहानहु, न तो जाहि कुम्हिलाइ ।

पूजै इच्छा रानिया, जा दिन घरी तुलाइ ॥१९॥

रात समै इन्द्रायति रानी । व्याकुल चिन्ता सिचपा घनघोष ।

सुमिरा महादेव कण्ठधर ॥ गायत्रि दुखी थीत कन्त नित बीता ॥

अह खेल नैहर को जिवना । पै पिय बिन है लोहू पियना ॥

नैहर खेल अहै दिन चारी । पियसग जनम निग्राह पियारी ॥

नैहर तेहि नरक समाना । जाके मन मों पीउ समाना ॥

॥ जो निर्दैं होइ प्रीतम, देइ नरक असधान ।

॥ होइ सोई बैकुण्ठ सम, पतिवरता के जान ॥२०॥

जो पसी यित बाहर धावा । सो निदान सहि ऊपर आवा ॥

अपने जोग ठाव जेह लीन्हवा । मय कोऊ तेहि आदर कीन्हवा ॥

सब काहुँ कह ठाउँ है, अपने अपने मान ।

रानी राजा जोग है, ससि जोगे है भान ॥५॥

है मैं ता दरसन नित जोगी । असम चढाएँ भेस बियोगी ॥

ताको प्रेम गुन है मेरो । जोग सिखाय कीन्ह मोहि चेतो ॥

जब मन बसी धरेत तब जोगू । तजि कै सकल जगत सुख भोगू ॥

बोहि उत्तम दरसन के कारण । आणउ नाचि मेरु दधि आरन ॥

जा दिन मैं दरसन वह पावत । होइ आप आपुहि हेरवावत ॥

दरसन देखै कारनहि, रोम रोम भये नैन ।

नींद न आवत निस कहं, वासर परत न चैन ॥६॥

चैन कहा चिन्ता जेहि जीऊ । जीउ दुख भा चिन्ता घीऊ ॥

जब चिन्ता तब नींद न आवै । आवै तब जब चिन्ता जावै ॥

प्रेमी पर चिन्ता कह सारै । सारै मा चाहुत जिय वारै ॥

हेरै प्रीतम मुख नहि केरै । कोरै मित्र मित्र यह हेरै ॥

रोवै रक्त आस नहि सोवै । दरसन लाग रात दिन रोवै ॥

सत्तर सिर मन तीन सै, पाँच एक सै जाहि ।

प्रेमी को दुख देत सो, प्रेम अथ यह आहि ॥७॥

है जोगी पै उत्तम भीखा । प्रेम पाइ मागे मैं सीखा ॥

जेहि मन ऊँच ऊँच भा सोई । जेहि मन नीच नीच सो होई ॥

कहा चाद कह रहइ चकोरा । प्रीत लाग चितवत तेहि ओरा ॥

औ अरविन्द रहै जल माही । रवि सेवत तेहि जोगी ॥

दादुर फवल सनेह न पावै । घासो मधुकर तेहि पि ॥

दूर देस की दिष्ट सो, है समीप गुन मूर ॥

बिना नैन औ दिष्ट के, नियरे के है दूर ॥

मालिन कहा बहुत तुम यूका । प्रेम पन्थ उजियारा सूका ॥
 कवन जात है का है नाक । कहा जनम भुम्मी को ठाक ॥
 कहा रहेच मै जात चदेला । अब सम जात धूर सिर मेला ॥
 जनम भुम्मि कालिजर ठाक । राजकुवर है मेरो नाक ॥
 प्रेम तेहिक मोहि चेला कीन्हा । राज छोडाय जोग गुन दीन्हा ॥

हैं जोगी तेहि पन्थ को, नहिं चाहैं कविलास ।

चाहउँ दरसन भिच्छा, राखत हैं नित आस ॥९॥

हो जागी मुख आभा तेरी । सासि देत है राजा केरी ॥
 पै तोहि साथ न सेवक कोई । राजा पर विस्वास न होई ॥
 औ मोती का द्य है गाढा । यूँ बहुत न काहुअ काढा ॥
 भीस मिलन गाढी है जोगी । भाग जो होइ तो होहु सँजोगी ॥
 याहू पर बहुतै तुम कीन्हा । तजि मुख भोग जोग दुख लीन्हा ॥

जेहि दरसन के दीप पर, है पतङ्ग संसार ।

प्रेम तेहिक तुम लीन्हा, मरै न नाम तोहार ॥१०॥

है इन्द्रावति विद्याधरी । विद्याधरी आप अत्रतरी ॥
 है पदमिनि मृगसायक नैनी । ज्ञानवन्त औ कोकिल बैनी ॥
 जो काहुअ पर हारे डोठी । सो जन देइ जगत दिस पोठी ॥
 अस रुपयन्ती सुन्दर आवै । विनु देखें सब ताहि सराहै ॥
 सोलै मुए परभात देखावै । सोलै केस साफ होइ आवै ॥

है तेहि चन्द्र बदन लखि, जगत नयन उँजियार ।

गगन सहस लोचन सां, निखैं तेहिक सिंगार ॥११॥

धन दृग मतवारे पैरारे । चितवन बीच सिन्धु जा डारे ॥
 अधरन सो मुसकान सोहाई । वात कहत सो भरत मिठाई ॥
 सयी अहै दरपन तेहि माही । डारा सुन्दर मुख परछाही ॥

तासो सखी भई छवि धारी । छवि दाता है प्रान पियारी ॥
 सै मन अलख बीच हैं बाधे । छेहि सहस जिय हत्या काधे ॥

बहुतन तजि जग धन्या, तप साधा तेहि लाग ।

अरुक्षि रहा मन अलकै, जिय मारा अनुराग ॥१२॥

है तेहि अम ताक मो दीया । भा उजियारो मन्दिर हीया ॥
 सीसा बीच दिया है धरा । मनु सीसा सारा निर्मरा ॥
 है मन्दिर सोजित फुलवारी । अहै सुगन्ध मालति वह धारी ॥
 छेहि रहैं आखिन पर चेती । अहै सखी छाया तेहि केरी ॥
 दिष्ट न आघत ताकी छाया । मानहु जीव धरे है काया ॥

बोहि डोले सय डोलैं, धिरैं धिरै सब कोइ ।

काया सां जो होत है, सो छाया मो होइ ॥१३॥

सात अन्तर पट भीतर सोई । रिहत न देखत ओखिन्ह कोइ ॥
 बारह मन्दिर मो वह प्यारी । रहत सदा है सेज सँवारी ॥
 हीरा मात सात जस तारे । हैं मन्दिर भीतर उजियारे ॥
 दुइ सै औ अदतालिस करी । लागे रतन पदारण भरी ॥
 है मन्दिर मो तेरह द्वारा । नौ द्वारा नित रहत उधारा ॥

पाय तेज जल पिथिबी, मानहु कैयक ठाउ ।

बारह मँदिर संवारा, जगपत जाको नाउ ॥१४॥

आवै जाइ पवन दुइ द्वारैं । सङ्गी सोहु न सद्य सँगारैं ॥
 दसई द्वार न खोलन कोइ । तब खोले अथ मरमी होइ ॥
 दस चेरी धन की गुन भरीं । सेवा बीच रहै नित खरी ॥
 पाच मँदिर के बाहर रहई । पाच मँदिर भीतर गुन गहई ॥
 एक सुध पाचो सो नित छेई । सुध चारो चेरिन कह देई ॥

है सरूप वह रानी, रहै सात पट मांह ।

सखियन सो वह प्रगटै, अहै सखी सय छाह ॥१५॥

सुनि इन्द्रायति रूप धरानो । राजकुवर हिंदै रहगानो ॥
 कहा लेहिय तेहि कारन जोगू । है साहिमानस प्रीत बियोगू ॥
 भायेव आवत इहा अकेला । गुरु न भयेव का राखव चेला ॥
 होवैं अकिध मो होइ मर जीया । तजि जित भय पोढा कह दीया ॥
 भाग जो होइ जलज निसारव । ना तो जित जित कारन धारव ॥

प्रेम फाँद में हों परा, नहिं छूटै की आस ।

मिलयो चाहैं प्रान को, अहै न भूख पिपास ॥१६॥

जो चाहत सजोग बियोगी । जो मैं कहव सो साधहु जोगी ॥
 खोटे फाज के नियर न जाहू । निरमल कथा होइ जस चाहू ॥
 पर चिन्ता तजि सुमिरहु ताको । होइ सो भरता मन आभा को ॥
 ना रहिये आपा गुन साधा । निरमलना आवै जित हाथा ॥
 मन जिततैं सुमिरहु वह नाऊ । बुझहु प्रान मो ताको ठाऊ ॥

दूसर चिन्ता छाड़ि कै, तापर लावहु ध्यान ।

मन फुलवारी मो रहै, पावहु दरस निदान ॥१७॥

आपन है नाही कर जोगी । पुनि है होसि होसिहै भोगी
 नाहीं होइ नाहि तै हेरा । ना तो मिलत नियर तेहि केरा ॥
 नियर मिले तैं दरसन होई । जोग भूल है तीनव सोई ॥
 जो मर जिया सो भा मर जीया । मोती लिया दिया भा दीया ॥
 मरिके जित पुनि मीचु न आवै । प्रानपियारी बदन दिखावै ॥

छिन अन्तरपट होइ रही, फुलवारी के फूल ।

देखु रङ्ग प्यारी कर, है रङ्गन को मूल ॥१८॥

कहि राजा सो भेद कहानी । गइल जहा इन्द्रायति रानी ॥
 भै व्याकुल प्यारी तब ताई । जोगी आइ बसा मन ठाई ॥
 बाढेव प्रीत जोगेस्वर केरी । मन पद परी प्रेम की बेरी ॥

कहै कहा वह रावल प्यारा । दै दरसन मन हरा हमारा ॥
 सोइय रहेउ जाग सो भला । जामो मिला दरस निर्मला ॥

मिला दरस जेहि सपन में, तापरवारी जाउं ।

जागव मोहि बैरी भयेउ, कीन्ह दूर दुइ ठाउँ ॥१६॥

बोही समै मो मालिनि गई । प्यारी कहैं मुख दाता भई ॥
 पूछे लाग परान पिमारी । है कस आज काल्ह फुलवारी ॥
 बीता फागुन औ पतिहारा । जो निर्पात कीन्ह कुज हारा ॥
 जो पच्छिन को जीव सतावा । पत्र को फारिके छाह नसावा ॥
 सो तो अद्य न रहेउ जग नाही । फुलवारी पलुही की नाही ॥

बदन उधारा है पुटप, अली भँवहिँ उपराहँ ।

की समुझत पतिहारा को, अहै छिपी पट माह ॥२०॥

चेता नारी उतर निसारी । हो प्यारी फूली फुलवारी ॥
 मान पाट पर बैठे फूलें । फूल वास मधुकर मन भूलें ॥
 देख कै उतर कुसुम को हारा । इन्द्रायति के गल मो हारा ॥
 केर कहा दिा बहुत न गयेक । सवा तुम्हारो बैतुक भयेक ॥
 फुलवारी मो है एक जोगी । रानी दरसन लाग वियोगी ॥

है कालिंजर महीपति, राजकुंजर है नाउं ।

नाम तिहारो जपत है, मन फुलवारी ठाउँ ॥२१॥

ए रानी का घरनउ ताही । धूर लपेटा नामिक आही ॥
 धुन सकुप अइइ यह तपा । कन्या बीच रता है उपा ॥
 होइ दूग जिठ जो देवाहारी । तो मुख साके लसे पिपारी ॥
 जावत राजा लच्छन चाहौ । है सय दूग रतवारी आही ॥
 अहुँ चन्द मन जाल मोहाई । रेखा तीन दिष्ट मोहि भाई ॥

धनुरु समां है भिर्कुटी, यरुना चोगी धान ।

कीर समा है नामिका, सनद मोर परमान ॥२२॥

छवर करन को सीर न आहै । राजा सिद्ध होन कस चाहै ॥
 कुअर बियोगी ठपवन ठाकै । निस दिन सुनिरत रानी नाकै ॥
 अहै प्रेम मदिरा मतवारा । जपत सास मो नाम तुम्हारा ॥
 लेन न एकउ भूले सासा । दरसन लाग देह सुख नासा ॥
 जोगी भेस न सकउ सराही । गोपीचन्द्र दूसरो आही ॥

होत जियत को भरथरी, ताको चेला होत ।

आइ बसा फुलवारी, सुनहु खोलि मनस्रोत ॥२३॥

इन्द्रावति सुनि जोगी नाक । जोगिन होइ बहा तेहि ठाक ॥
 कहा सपन को जोगी प्यारा । होइ वोही मनहरा हनारा ॥
 सकल आरु तुम आइ सुनावा । सपन तपी लच्छन मै पावा ॥
 एक अचम्भे आवत हियरें । है न कहू कालिजर नियरें ॥
 मो मुनरूप कहातें पावा । जोगी होइ अगमपुर आवा ॥

भेद न होइ न गुन सुनै, प्रेम कहां सों होइ ।

कैसे मोहिं कारन भयेउ, आगम जोगी सोइ ॥२४॥

अहो पियारी बृकन तोका । तोर बसान गयेउ सुर लोका ॥
 सहा सदा सब निर्जर नारी । घरचा तेरो करइ पियारी ॥
 धरती पर कालिजर देखू । सुनि बसान आ जोगी भेसू ॥
 हैं धन कली समा पट माहीं । सैकी लाउप तोहि उपराहीं ॥
 नहि जानो कस परत पुकारा । जो परगट सुख होत तुम्हारा ॥

तुम धन प्यारी पटुमिनी, सुधा भरे अधरान ।

बहुत अमी अजरन पर, दिहेनि सुन्धु मो प्रान ॥२५॥

हो धन जाको नाम सुनायेहु । फुलवारी मो दरसन पायेहु ॥
 मन औ ज्ञान हरा है सोई । होत भलो जो दरसन होई ॥
 मैं सकुचाउ जात फुलवारी । भइउ नयन सो मैं हत्यारी ॥

चार दिष्ट काहुव सो होई । जाइ चेत सो मुरछेइ सोई ॥
 औ परगट मोहि चलत न आवै । अब मोहिलज्या जिउ सकु भावै ॥

गयेउ सखी वह सामै, आंखिन रहो न लाज ।

अब यह नैन हमारो, पायेउ लाज समाज ॥२६॥

लाज नहीं जेहि आखिन आही । हे यह पक्षु है मानुष नाही ॥

घुघरू पहिर लाज यह आही । पगु कह धीमे राख बचाही ॥

औ धन कभी सबद न बोले । सुनत बिराने को मन डोले ॥

औधे नैन लाज सो कीजे । औ मुख कपर घूषट लीजे ॥

हो प्यारी जस पहिरहु गहना । पुरुष बिराने सो छिप रहना ॥

हैं चारो अलबेली, चारी कैसे जावँ ।

भेंट होइ काहुअ सो, खोर और मग ठावँ ॥२७॥

जो जागी देखै तुम पाहा । जागिहि मिले जाग सो लाहा ॥

परगट तुम्है बले को कहई । तो पट भले पवन रथ अहई ॥

तेहि पर चटि के चलिये प्यारी । चारो दिन पट लीजे हारी ॥

जागी साय न दृमर कोई । है अकेल चारी सो सोई ॥

हे भिच्छुरु तेहि दाया कीजे । उत्तम दरसन भिच्छा दीजे ॥

दर दिखाइ कै दरसन, आपुहिं लेहु छिपाइ ।

अधिक बढ़ै अभिलाष तेहि, दूसर पंथ न जाइ ॥२८॥

चलहु चलहु निसरै फुलचारी । देखत जागी कह मन चारी ॥

आज देवस औ रौ बिसावठ । प्रात नमै फुलचारी आवठ ॥

जागी पास अहे मन मोरा । भयेउ सीस पर प्रेम भकोरा ॥

होइ गये आपन मन पावठ । मन पाये आनन्द नभावठ ॥

पहिले आपन दरस देवायेठ । पाछे सो मोहि चोग निछायेठ ॥

रहित अचेत मुलानी, लाग राग को धान । -

प्रेम निजारी जो जियउ, तेहि ले मरउ निदान ॥२९॥

ना ले मरन क नाम पिथारी । तोहि मरत मरिहैं यहु नारी ॥
जह लग है नारी रज दीपी । का बिकुरानी काह समीपी ॥
तोहि जिय सो जीयत सब कोई । कहु न मरन तो पर लै होई ॥
है जह लग रजदीपी नारी । जीउ निन्है है प्रीत तुम्हारी ॥
भलो भयेउ जो बाढा प्रेम् । मिलिहै प्रीतम होइहै खेम् ॥

अति समीप है प्रीतम, अहै न एकौ बाट ।

एक पाव दे आप पर, बैठु मिलन के पाट ॥३०॥

काहे न लेउ मरन कर नाऊ । मरन एक दिन धरती ठाऊ ॥
केतिको प्रीत जगत सहैं होई । देत न साथ मरन सह कोई ॥
जायत जिया जलु जग रहई । करता बस सब को जिय अहई ॥
है समीप यह मित्र हमारा । पै जगधन्ध दूर मोहि डारा ॥
कान क्रोध तिस्रा मन माया । है रिपु कलहु उपायन पाया ॥

किहु उपाय नहिं आवै, जाते जाहिं नेवारि ।

हे बैरी मोहि गाढे, सकौ न यह सत्र मारि ॥३१॥

अहो तुन राजा कर धारी । अरुकि रहिउ सुख बीच विपारी ॥
सुखमो कान क्रोध अधिकाई । तिस्रा मया करइ अगुवाई ॥
चार पखेऊ तोहि तन माहीं । चारो चारा नित उछि जाहीं ॥
रेत प्रीत चारो कर प्यारी । मरिकै जियहि होहि गुनधारी ॥
मन दरपन ऊपर चित दीजे । नाही है सो निर्मल कीजे ॥

मांज सजो मन दरपन, रात देवस चित लाइ ।

स्याम रंग अन्तर पट, उठि आगे सों जाइ ॥३२॥

बोलाय सोइय खाइय थोरा । होइ होइ तौ कारज तोरा ॥
औ चिंहार प्रीतम को लीजे । जो सिखवै सो कारज कीजे ॥
औ निस धासर अकसर रहना । सुमिरन जाप बीच दुख सहना ॥

पै यह मन है मनु सयाना । जात न मारा सुए लुघुधाना ॥
मन बरजे यह काको करई । मन न मरै बरु पारा मरई ॥

मालिन हिता उपाय दै, गर्ह आपने ग्रह ।

इन्द्रावति के मान सें, भयेउ समस्त सनेह ॥३३॥

धलु मन तहा जहा फुलवारी । तहा यसा है दरस भित्तारी ॥

मित्रहि भेंटहु देगहु फूल । है फुलवारी परमद मूल ॥

धन सो मानुष धन तेहि भागू । जेहि मधु मिलेउ खेलि कै फागू ॥

जेतो तेहि पतिभार सतावा । तेतो सो बसन्त सुए पावा ॥

धन जग माली निर्जन द्वारा । कुउ पलुहावत है पतिभारा ॥

भागवन्त सो मानुष, है तेहि धन धन हाथ ।

मित्र बदन औ फूल मुख, देखै एकै साथ ॥३४॥



[७] फुलवारी खण्ड ।

इन्द्रावति दिन रात बितावा । भोरहि, सखियन कह हँकरावा ॥

भै न बिलम्ब सखी सब आई । तारा समा रही जह ताई ॥

आइ ससि बदनी थोर दीनी । सकल गज, दीपी पदुमीनी ॥

आई, समुदै फुल की सुता । बहु व्याही, बहु अठ्याहुता ॥

भोर समय, वह नपत सहेली । धन, मयक घेरेन अलवेली ॥

रानी की सव सहचरी, आइ जुरीं तेहि पास ।

सब अपहरा समा रहि, भवन भयेउ कबिलास ॥१॥

इन्द्रावति, सखियन, सो, कहा । सो दिन गयेउ, बिछं जो दहा ॥

जग सो, पतिभागी रितु गई । पत्तोहे बिछं नवल रितु भई ॥

काल्ह जनायेउ, चेता नारी । फूल रही है मन फुलवारी ॥

चलहु गवन घारी दिस कीजे । फूल देखि परमद रस लीजे ॥
नहि जानहि मिर परिहै कैसो । खेलहु होइ खेलना जैसे ॥

फुलवारी चाहत है, मन बैरागी मोर ।

चलहु देखिये उपवनै, है बसन्त रितु धोर ॥२॥

धोरा है कुसुमाकर बेला । चलि देसहु औ खेलहु खेला ॥
घीता बेला छूटा बानू । हाथ न आवै भँसै परानू ॥
सकल समै को भेद छपाना । है हमलोगन ताको जाना ॥
मेढन औ रासत करतारा । जो चाहै है सिरजन हारा ॥
समय ररग है काटन हारी । जात चली तेहि भेटु विवारी ॥

मधु मीठो है मधु समां, मधु दरसन को लेहु ।

हार सरीर ग्रीव को, हार दुसुम को देहु ॥३॥

सब काहु धन आज्ञा माना । फुलवारी दिस कीन्ह पयान ॥
इन्द्रावति रथ ऊपर चढी । दूना बढी रूप को बढी ॥
चली मानसे ब्राम्हन घारी । धनियाइन नाइन पटहारी ॥
चली सेनारिन कवन धरनी । रजपूती सतरिन मनहरनी ॥
लोनी धन हलजाइन भली । अधर मिठाइ याटत चली ॥

चलीं सहेली सुन्दरी, इन्द्रावति के संग ।

गीत बसन्ती गावतै, पहिरे दुकुल सुरंग ॥४॥

मन फुलवारी मो सब गई । देखि सुमन को सुमना भई ॥
चेता मालिन भेटेउ आई । चन्द्रउदन देखै दुति पाई ॥
सुगंध कुसुम को हार मवारा । सब सुन्दरि के गीत मो हारा ॥
देखि भवर गन गुजत तहा । एक सखी बोली गन महा ॥
धन यह मधुकर धन यह फूलै । किनके रूपर अलि मन भूलै ॥

जगत मझार मराहिये, भंवर फूल को हेत ।

भवरहि चिन्ता फूल की, फूल बास रस देत ॥५॥

इन्द्रायती ।

सुनि सचेन इन्द्रायति रात्री । बोली सुनिये सखी सयानी ॥
 जग मेा प्रीत यखानहु सोई । जीवन नरन एक सँग होई ॥
 खाटी प्रीत भवर की आहै । भवर आपनो कारज चाहै ॥
 जाइ भयात यास रस आसा । छै रस तजत फूल को पास ॥
 छै रस यास भवर ठहि जाई । नरत न जब सुमनस कुम्हिलाई ॥
 प्रेमी ताको जानिये, देख मित्र पर प्रान ।
 मित्र पन्थ पर जित दिहें, जुगजुग जियै निदान ॥७॥
 धन जो प्रीतम पर जित वारा । सिर पर चला प्रेम का आरा ॥
 धन जो परा हुनासन नाही । और सहायक चाहा नाही ॥
 दया दिष्ट प्रीतम तब धरा । पावक फूल भयेत नहि जरा ॥
 धन जो मित्र आपनो चीन्हा । पुत्र जीत आर्ज के दीन्हा ॥
 सुधा न कहे जियत है सोई । अलख पन्थ जो जूका होई ॥
 मित्र जो है करतार के, मरत नहीं हैं सोइ ।
 एक मन्दिर तजि दूसरें, गवनत हैं वै लोइ ॥८॥
 गायेत गीत एक धन प्यारी । जग है करता की फुलवारी ॥
 आपुहि माली आपुहि फूला । आपुहि भँवर फूल पर भूला ॥
 आपुहि रूपवन्त सो होई । प्रेमी होइ रिक्त है सोई ॥
 आपुहि परगट गुपुन अकेला । गुरु होइ कहु कहु होइ बेला ॥
 आपुहि दाता करता होई । दिष्टा खोता बकता सोई ॥
 सुनि सरवन दै चेत सों, सपन बखाना गीत ।
 उपजो सन के हिदै, चतुर सखी की प्रीत ॥९॥
 एक कहा हो राजदुलारी । है आनन्द ठाठ फुलवारी ॥
 खेल एक खेलहु सब कोई । जाये स्वात घीच मुद होई ॥
 एक कहा आनन्द न चहक । निस दिन आगम सोचनो रहक ॥

बहुत अनन्द न चाहै प्यारी । ना तौ परै आइ दुख भारी ॥
एक कहा चिन्ता भल नाहीं । तरुनी चिन्ता से बिरधाहीं ॥

खेलि लेहु नइहर में, सब मिलि परमद खेल ।

पुनि नइहर के छाडतैं, सासुर होव अकेल ॥१०॥

हम अज्ञात न सासुर चीन्हा । यह नइहर ऊपर चित दीन्हा ॥

है जग जीवन खेल समानू । ऊसर नहीं है मरन निदानू ॥

हम कह पार भीषु से नाहीं । निसरि गगन महि तट ते जाहीं ॥

जानत मरन हमारो सोई । जाको सुमिरत है सख कोई ॥

मूरत अलख नहीं जग ठाऊ । हम तुम राखे हे तेहि नाऊ ॥

यह मूरत को तजि कै, चित्त अमूरत देहु ।

जाहि अमूरत ध्यान से, स्वर्ग लोक फल लेहु ॥११॥

राजकुअर फुलवारी माहीं । धन को आवन बूझा नाहीं ॥

चातुर चेता कै चतुराई । सब काहू से बात जनाई ॥

है फुलवारी से एक जोगी । है काहू को प्रेम दियोगो ॥

है यह ठौर बहुत दिन सेती । नहि जानहु बाहर केहि नेती ॥

सुनि कै सखिन कहा चलु रानी । देखैं है कस जोगिय ध्यानी ॥

बात सुधानी सखिन कहं, चली सखिन के संग ।

एक एक सब काहू, लीन्हें फूल सुरंग ॥१२॥

घरजा एक अगम की नारी । तुम सुरूप राजा की घारी ॥

अलबेली लागहु भल देखें । तुम तिय जिय अस जिय के लेखें ॥

इसितैं धारी यिना दियाही । जोगी देखै तोहि न चाही ॥

लागहु तपी नयन से मोठी । यह जिनि होइ लगे तोहि डीठी ॥

नहि जानहि जोगी कस अहर्ष । आपन कथा केहि निन दहर्ष ॥

देखहु मन फुलवारी, जाहु न तपी समीप ।

होइ पतंग तपी वह, देखि बदन को दीप ॥१३॥

जय यह बात सखी यह कही । सुनि मलीन रानी होइ रही ॥
 औरन कहा चलहु बहि घेरा । जग करता है रच्छक तेरा ॥
 रच्छक आप अलख है जाको । एकहु धार न बाँके ताको ॥
 पै अघड़ी देखहु फुलवारी । फेर चलेहु जेहि ओर भिखारी ॥
 सुखी भई यह बात सयानी । लीन्ह सुरग फूल एक रानी ॥
 देखत रहिगै रानी, जिहें फूल को हाथ ।

एक सखी हँसी गेली, इन्द्रावति के साथ ॥१४॥

हँसि कै मालिन को गुन गावा । धन चेना अस फूल लगावा ॥
 चतर दीन्ह सुनि चेता गरी । मोहि न सराही अहो पियारी ॥
 सुनिरहु तेहि जो है सुख दाता । जे यह फूल कीन्ह रग राता ॥
 जो हमार दाउ हाथ बनावा । जेहि करत मैं फूल लगावा ॥
 जग मो जावत है सब घना । तावत करता को दरपना ॥

दीठ होइ तो देखहु, तन आदरस मभार ।

बदन बिराजत है तेहिक, जेहिक सकल संसार ॥१५॥

है वह एक जगत उपराजा । जो दाइ होत बनत नहिकाजा ॥
 धरती गगन मजारा सेई । तासो जोत अउर तम होई ॥
 करता सीन अउर दुइ नाही । एकै है दाऊ जग माहीं ॥
 जो किछु करत न पूछा जाई । पूछा जाइ जनम जेइ पाई ॥
 कीन्ह निम दिन औ रघि चन्दा । तेहि सुनिरन मो सबहि अनन्दा

रात दिवस दुइ चिन्ह है, रात मितत दिन होइ ।

याही मो लेखा बरस, जानत है सन कोइ ॥१६॥

इन्द्रावति धन कमल सुजाया । आइ भँवर गूजे चहु पाना ॥
 कहा सखिन सो हर जिउ पावै । भँवर न मो तन डक लगावै ॥
 फहेन सखिन तुम कमल पियारी । लेन भँवर हैं बाध तुम्हारी ॥

मोहैं वास पाइ कै तेरी । कहा तिन्हें सुधि बिन्धै केरी ॥
फूल भवर होइ आइ भँवाहीं । तोहि ऊर तो भवरज नाहीं ॥

भंवर वास के कारने, चहु दिस आइ भँवाहिं ।

पोढा मजकूरु रानियां, बिन्धै की डर नाहिं ॥१७॥

जह लग सुन्दर रही सयानी । फुलवारी देखें रह सानी ॥

कहा एक आगम की धारी । घन नइहर जामो फुलवारी ॥

फुलवारी औ फूल बिलोकैं । बहुत अमन्द बढी है भोकै ॥

फेर न देखब अस फुलवारी । जब गवने जावै ससुरारी ॥

परै सीस पर भारी भार । कैसे रातिही कन्त हमारा ॥

नइहर अहै पियारा, चक चूट जिय होइ ।

सुमिरि गवन सासुर को, दूर परै सब कोइ ॥१८॥

सुनि इन्द्रावति सासुर नाक । मनमो सोच कीन्ह तेहि ठाक ॥

कहा जाय निश्चय ससुरारी । नइहर तजब तजब फुलवारी ॥

छुटि परै सब सखी सहेली । जायै सासुर अन्त अकेली ॥

अहो सखी आगम मोहि यूका । सासुर गवन आजु मैं यूका ॥

अस फुलवारी पावय कहा । सासुर नगरी होइह जहा ॥

तुम्हैं समां कित पाऊं, एक बैस की नार ।

नइहर खेल न पाइब, जय जावै ससुरार ॥१९॥

समुका सखिन सोच मो रानी । बोली सरब बोध की दानी ॥

अहो पियारी सोच न करहू । जेहि प्रीतम प्यारे सग परहू ॥

ठाठ देइ सुख मन्दिर प्यारी । लाइ देखावहि तोहि फुलवारी ॥

देइहै बहुत हमैं अस बेरी । करइ रान दिन सेवा तेरी ॥

प्रीतम जित सम राखै तोही । तोहि सँग सेलैं सेलइ बोही ॥

अस सुख देइहै सासुरे, तोहि कामिन कहं सोइ ।

वैसो सुख नइहर मां, मिला न कवहू होइ ॥२०॥

इन्द्रायति फिर यात निसारा । तो मुख देह है कन्त हमारा ॥
 जो नदहर मो जोरय नेहा । होयै एक जीव दुह देहा ॥
 घलय मान तजि मूषी चाला । तो सामुर अवतय मुख हाला ॥
 रहयै सत्त सनेह मन्दारै । काम क्रोध तिखा कह मारै ॥
 राखय प्रीत सिरय गुन नीका । मुनिरन करय विचारै पीका ॥

तो पाइय सासुर सुख, प्रीतम होइह हाथ ।

सुख अनन्द नित मानय, पिया पियारे साथ ॥२१॥

घन की करनी जोरइ पीक । एहि समुझ डर मानत जीक ॥
 जाकर भारी होइह तूला । सुख मन्दिर द्वारा तेहि सूला ॥
 जेहि हलुका होइह दुख सहई । औ दुख अगिन मँदिरमो रहई ॥
 करनी सिरा जान सय कोई । दाहिन सो पाए भल होई ॥
 देहि लिखा बाए सो जाको । बहुत कलेस परै सिर ताको ॥

करनी सेती छोट बड, सय किछु पूछें जाहिं ।

सतयन्ती गुनवन्त पर, डर एकौ कछु नाहिं ॥२२॥

सखी एक भासू कह डारा । पूछेन कहा परान तुम्हारा ॥
 कहा गवन को दिन मैं बूझा । सकट दुख तादिन को सूझा ॥
 जय सासुर गवने मैं जाऊ । देहि सकेत मँदिर मोहि ठाऊ ॥
 दुह जन पूछहि को पिय तेरा । को है जासो मगु तै हेरा ॥
 पूछहि कवन पन्थ तैं लीन्हा । डर सो उत्तर जाइ न दीन्हा ॥

उतर देउं तो बाचऊं, ना तो मारी जाउ ।

यही वृष्णि मै रोई, कैस होइ वह ठाउ ॥२३॥

रानी कहा रहइ जित कहा । पूछहि जदिन गवन घर महा ॥
 एक कहा यह जीव पियारा । तापल रहइ सरीर मझारा ॥
 एक कहा जित पूछा जाइहि । पूछे बीच न काया आइहि ॥

एक कहा दोउ घात न अहई । का पर कया घीब जिठ रहई ॥

एक कहा फलु लइ तन कहना । कहना सो सहना चुप रहना ॥

गवन मंदिर में सुग्न दुख, डर सों द्रष्टै हाड़ ।

अहै सरग फुलवारी, अहै नरक को गाड़ ॥२४॥

बोला चठी एक सुन्दर नारी । रहत फूल नित भरत न प्यारी ॥

रग सलोम फूल भरि जाई । थक चुकट चपगत अधिकाई ॥

सुमन सुवर न सुगन्ध सोहाहीं । अन्त करे माटिन निलि जाहीं ॥

चतर निचारा बूझन हारी । नित जो एके रहत पियारी ॥

जग माली गुन रहत छिपाना । यहुत धरन गुन जातन जाना ॥

यह जग है फुलवारी, माली सिरजन हार ।

एक एक सो सुन्दर, लावत ताहि मभार ॥२५॥

जीरन यह जगती हम पाई । नितु एक आवै नितु एक जाई ॥

केतिक धरन के फूलन फूले । केतिक की लालय नन भूले ॥

केतिकन रूपयन्त अयतरे । केतिकन बिरह आग सो जरे ॥

केतिकन भईन सलोनी नारी । केतिक तिन पर भयेन भित्तारी ॥

केतिकन विद्यायन्ती भयेक । केतिकन धनीबली होइ गयेक ॥

अथ हेरें नहिं पाइये, तेन सरीर को चीन्ह ।

केतिक रतन पदारथ, मोचु चोर हरि लीन्ह ॥२६॥

हमहू चलथ अवध के पूर्जे । फेर न जगमो आइथ दूर्जे ॥

फूल देखि का भँसहु पियारी । हम तुम सबकी आइहि पारी ॥

एक कहा वैरागिन होहू । अहै सरन हम कह औ तोहू ॥

होइके वैरागिन तप करहू । जासो सरग सदन मइ परहू ॥

कहकी भेष न केरे चाही । फेरें भेष भलो नहि आही ॥

पिय की सेवा नित करहु, रहहु सम्भारे नेह ।

यातें दाता देइहै, आगम दिन सुख गेह ॥२७॥

कहेन बहुत अथ आगम सूझा । परमारथ सब काहुअ बूझा ॥
 अथ रानी चलि देखहु जोगी । कैसो राखत भेष वियोगी ॥
 चन्द्र नखत सग पाव उठायेउ । जाइच कोरहि दस देखायेउ ॥
 सकल सखिन कह जोगी भेदा । जित दरसन पायेउ जित देवा ॥
 इन्द्रावति औ सखिय सयानी । जोगी रूप बिलोकि लोभानी ॥

मन लोचन में चंद दिस, रहिगा चितै चकोर ।

चन्द बिलोकत रहि गयेउ, निज चकोर की ओर ॥२८॥

जब लग नैन चार रहु चारी । राजकुवर कह ठग असमारी ॥
 दामिन चमक चाह अधिकाई । हुमक चितै रहै बित लाई ॥
 बहेउ पवन लट पर अनुरागे । लट छितिरान पवन के लागे ॥
 परी बदन पर लट सटकारी । तपी देवस भानिस अधिचारी ॥
 मोहि परा दरसन कर बेरा । हना बान धन आखिन केरा ॥

प्रेम पन्थ को पन्थिक, पहरे जोग दुकूल ।

परी सांझ तेहि मगुमो, गएउ थाट सो भूल ॥२९॥

हा हा सखिन कहा पउताई । काहें तपी परा मुरकाई ॥
 नहि मुरछा मुख देखि मयाना । लट परतहि मुख पर मुरछाना ॥
 एक कहा लटसे मुख सोभा । होत अधिक लखि मुरछा लोभा ॥
 एक कहा लट नागिन कारी । हसा गरल सो गिरा भित्तारी ॥
 एक कहा लट जानिनि होई । रात जानि जोगीगा सोई ॥

एक कहा निस जानि कै, तपी गयेउ जो सोइ ।

का जोगी के जोग सां, तप पुरपारथ होइ ॥३०॥

जोगी सो जो जागे रयना । मन पर घरे ध्यान को नयना ॥
 ध्यान समेत रयन जो जागे । ताको हाथ मनोरथ लागे ॥
 पहरे आगत ध्यान न लाया । मार्ते तेहि कछु हाथ न आया ॥

सन जागे तब जागस नीको । चित फिरि आवै धरती जीको॥
एकै धार न जागे कोई । धोरे दिन मो यावर होई ॥

जाके मन औ नैन में, दरसन रहा समाइ ।

ताको नीद कहाँ परै, चिन्ता आवै जाइ ॥३१॥

छोली एक सहचरी सयानी । जय मुख ऊपर लट छितिरानी॥

यह मुख यह तिल यह लटकारी । ये तो कहि कै गिरा भिखारी ॥

नहि जानहि आगे कस कहते । येन समेत तपी जो रहते ॥

आवहु आगे अरथ लावैं । सब कोउ अरथ पन्थ पर धावैं ॥

मुनि सब सखी चेत दउडावा । जोगी हु तैं समस्या पावा ॥

एक कहा मुख लट तिल, मुकुर फाँद है चार ।

जग मनसूया फाँदै कहं, है एतो उपकार ॥३२॥

आपुहि देखि मुकुर मो भूलैं । दूसर सुवा जानि मन फूलैं ॥

दूसर देखि देखि कै धारा । कहैं तुरत यह फाद मफारा ॥

एक कहा मुख तिल लटकारी । समुल भवर अहै फुलवारी ॥

एक कहा मुख सतिहि लजावा । लट जोगी को मन अरुमावा ॥

तिल इन्द्रावति मुख पर सोही । तिल नाही जासो जग मोही ॥

इन्द्रावति दृग लिखत कै, भा विरच मतवार ।

मसि लागउ लेखनी गिरेउ, सोभा भै अधिकार ॥३३॥

एक कहा का कोउ सराही । रूप गरन्ध रानि मुख आवै ॥

तिल है सुन्न गरन्ध मफारा । लट स्यामल सोहत मसिधारा ॥

सधन घखाना जो जस बूझा । इन्द्रावति कह आगम सूझा ॥

कहा तपी अस कहते आगे । गरब न करु सुन्दर डर त्यागे ॥

यह मुख यह तिल यह लटकारी । अत होइ एक दिन सब छारी ॥

कहेन सखी सब आपमों, धन इन्द्रावति बूझ ।

धन अधीनता धन बचन, धन धन धन धन सूझ ॥३४॥

दाया सखी गुलाब भँगायेउ । छिरिकि कुन्वर कह उहुत जगायेउ
 सोइ गए अधिकौ नहि जागा । वह गुलाब सीतल तेहि लागा ॥
 एक कहा यह भा मतवारा । धन के नैन धारुनी ढारा ॥
 सखिन कहा हो प्रान पियारी । मारेहु चखुसर गिरा सिखारी ॥
 फिर जिउ जो जोगी यह पावै । तोहि तजि औरहि ध्यान न लावै

सखिन न जानहिं जागी, है धाउर तेहि लाग ।

तजा राज कालिजर, लीन्ह जोग बैराग ॥३५॥

ब्राह्म ब्राह्म में आपन मारा । काहे बृम्हहु दोष हमारा ॥
 कहेन दोष नाही धन तेरा । दोष तुम्हारी आसिन केरा ॥
 जेहि चितवै तेहि मारहि धानु । सुनिर सुनिर तोहि देख पानू ॥
 फेर सखी सख बात सम्हारा । दोष नैन नहि दोष तुम्हारा ॥
 रूप दरब मुख तोर पियारी । अम्पुरुक जमल करहि रखवारी ॥

चाहा लेइ तपी दग, होइ के चोर समान ।

नैन तु टारे तसकरें, मारा धरुनी धान ॥३६॥

फर तसकर को काटा चाही । जीव न मार दोष धन आही ॥
 हैं हत्यारे नयन यह तेरे । राजन निर्ग अहैं दोष चेरे ॥
 अहै नयन सो उतन कानू । तासो बात सुना यह प्रानू ॥
 यह नित जो दोक जग कीन्हा । रसना एक करम दुइ दीन्हा ॥
 फी कहु एक घात भति सानी । सुनि दुइ बात आन सो रानी ॥

बहुतन को संसार में, जो सिर्जा दिन रैन ।

छाप दीन मन ऊपर, औ सुरवन पट नैन ॥३७॥

भसि औ पत्र सखी एक आनी । जीव कहानी लिखा सयानी ॥
 यहुरि लिखा हो जोगी सेवा । जोग तोर इन्द्रावति देवा ॥
 ताको दरसन पाय भिखारी । मुखानेउ नहि सकेउ सम्हारी ॥

अवहीं तेरो जोग न पूजा । जोग छोड़ि करु काज-न दूजा ॥
लिखा सोधान सखिन के हियरें । चली राखि राजा के निपरें ॥

जीउ कहानी लिख कै, राखि चलीं तेहि पास ।

छोड़ तपी को आई, जहां सदन सुख बास ॥३८॥

जब राजा जागा बुधि पावा । जागि चहूँदिस दिष्ट लगावा ॥
पत्र उठाइ बिलोकेउ जानी । पढा सँपूरन जीउ कहानी ॥
जब बाधा इन्द्रावति नाऊ । भूखा बहुत अपन मन ठाऊ ॥
उपजी प्रेम भाव डर दाहा । बहुतै पछाना कहि हाहा ॥
सो रानी आई मोहि आगें । पहिरेव यह कन्या जेहि लागें ॥

मोहिं लेखें एक, पल भर, उपवन भयेउ बहार ।

अब देखउं फुलवारी, आइ बसेउ पतझार ॥३९॥

कहा गई वह मान पियारी । जेहि कारन मैं भयेउ भित्तारी ॥
कहा गई वह दीप मिखासी । जाके सै रम्भा सी दासी ॥
दिष्ट परी तनु पुनि का भई । देखि न परी परी सम गई ॥
रे जित कमल सुगन्धित अगू । गयेउ न लागेउ अलि होइ सगू ॥
गौरी वह गौरी सम गौरी । नैन नैन सो स्यामा जौरी ॥

गहा धिर्ज मन भीतर, लिहें मिलन की आस ।

भा कालिंजर राजन, बिप्र योग को दास ॥४०॥



• [८] जिव कहानी खण्ड ।

सुनहु मित्र अय जोव कहानी । जो लिखि गई सह बरी जानी ॥
 जीठ एक राजा को नाक । सो सरीरपुर पायेउ ठाक ॥
 रह वह जित के एक नरेसू । सो दीन्हा जित को वह देसू ॥
 जय ठाकुर सो आयसु पावा । तब जित राय सरीरहि आव ॥
 साथी बहुत साथ जित लीन्हा । तब सरीरपुर आवन कीन्हा ॥

आइ पाट पर बैठा, भा सरीर को राय ।
 देखि नगर की सोभा, रहसा परमद पाय ॥१॥
 आधी नगर सरीर नकारा । दुर्जन नाम निर्व भरियारा ॥
 बूझ युद्ध सो घोला राजा । एक नगर दुइ निर्व न छाजा ॥
 यह दुर्जन राजा है दुनरा । माया मोह भरन मो परा ॥
 हमरो अन्त करै सतुराई । कहा सत्रु सो होइ भलाई ॥
 है यह काट घाट मो मोही । पग मो घउन न दाया बोई ॥

यह यनाय कैने बनै, एक नगर दुइ राज ।
 राज करै नहिं पावउं, दुर्जन करै अक्राज ॥२॥
 बुद्ध सयाना सत्री रहा । राजा साथ बात अस कहा ॥
 राज काहु होइ निहर भुवारा । दुर्जन सरवर करइ न पारा ॥
 जब सो आएउ राजा पाक । बसा सरीर पूर हो राज ॥
 बुद्ध बूझ जित कह समुझावा । तब जित व्यान राज पर लावा ॥
 भा भरियार राज के कीए । दुर्जन हरा बूझि कै हीए ॥

छल संचर पगु राखा, आप न छाडेउ राज ।
 दुर्जन भा जित सेवर, कीन्हा सेवब राज ॥३॥
 रहा जीठ एक पुत्र पियारा । रहा नाम मन रहा दुलारा ॥
 मन चाहै रुपवन्ती नारी । ये न मिली कोउ प्रेम पियारी ॥

मन यह नित नित ब्याकुल रहई। जिउ को जिउता नित दुख सहई॥

दुर्जन कह एक दिन हकरायेउ । तासो मन की बिधा सुनायेउ ॥

कहा करहु कछु एक उपार्ई । जासो मन जिउ को दुख जाई ॥

मन को यह प्रकीर्त है, देखि सुरूप लोभाइ ।

पै न मिली रूपवन्ती, जो तेहि स्वांत समाइ ॥४॥

बोला दुर्जन आज्ञा पाऊ । तो राजहि एक घात सुनाऊ ॥

आज्ञा दीन्हा दुर्जन बोला । मन द्वारा को ताला खोला ॥

कायापुर है दरसन राजा । राज गगन पर सूर बिराजा ॥

तेहि राजा की एक बुता है । रूप नाम सद्य रूप सराही ॥

एक मनय में रूपहि देखा । देखत रीक्षा जीउ सरेखा ॥

जो मन पावै रूप को, मानै बहुत अनन्द ।

मन परभाकर जोगै, है वह रानी चन्द ॥५॥

दुर्जन रूपहि बहुत बखाना । सुनि राजा जिउ को मनमाना ॥

तासो कहा जतन कस कीजे । रूप भेलाय पुत्र को दीजे ॥

कहेउ उपाय आन है कहा । दिष्ट बसीठहि भेजउ तहा ॥

गयेउ दिष्ट कायापुर देसू । काया पति सो कहेउ सदेसू ॥

सुनि दरसन मन चिन्ता कीन्हा । जिउ कह बलि मजोगी चीन्हा ॥

कहा निरप कन्या सों, जोउ संदेसा जोड ।

मन कारन तोहि चाहत, प्रीत सदेस पठाइ ॥६॥

सुनि कै रूप पितहि समझावा । जिउ राजा एक मनुज पठावा ॥

जो राजा मन पुत्र पियारा । है हमार वह चाहन हारा ॥

काहैं एक बसीठ पठायेउ । काहे न आपुहि मन चलिआयेउ

एक मनुज भेजे जउ नाऊ । छोटा होइ जगत मो नाऊ ॥

दिष्ट साय तउ उतर पठावा । मैं कन्या कह बहुत बुझावा ॥

कन्या कहा न मानत, है नहिं दोष हमार ।

मरम हमार जनाइहै, जाइ बसीठ तोहार ॥७॥

जाइ जीउ सो दिष्ट सुनायेउ । जित के द्विष्ट कोष चढ़ि आयेउ ॥
 ब्रूँ कहि बुद्धि चलि आवै । मोहि मँग होइ कयापुर धावै ॥
 तब लग दुर्जन छलकै झला । जित कह कायापुर छैवला ॥
 कोषघन्त वह जीउ सयाना । कायापूर जाइ निपराणा ॥
 रूप भेद पावै के कारन । भेजा बुद्ध घसीठ विचछुतन ॥

ब्रूँ भेद लै आयेउ, राजहिं दीन्ह सुनाइ ।

रूप रहै सै पदमो, तहा न पवन समाइ ॥८॥

कबहू कबहू रूप पियारी । आवत जह निर्मल फुलवारी ॥
 फुलवारी द्वारें दुई धीरा । काठें खरग रहैं रनधीरा ॥
 बुद्ध चतुर पहुचा तब ताई । कहा विनी कर सेवक नाई ॥
 आप रूप मद पन्थ न छीन्हा । मान सखी तेहि मानिनि कीन्हा ॥
 मोहि अस मन लोचन सो सूका । आवहि जाहि दिष्ट अर ब्रूँका ॥

जित राजा कहं फेरा, बुद्ध गेथानी नाहिं ।

दिष्ट ब्रूँ आवानवन, करहि कयापुर माहिं ॥९॥

चेरा एक रूप के ठाऊ । रहित कटाख रहेउ तेहि नाऊ ॥
 कहा रूप सो भेजहु चेरी । छसि जानै सूरत मन केरी ॥
 यात पियारी के मन जायेउ । चेरी चितवत नाम पढायेउ ॥
 चितवत मन मन देखि छोत्ताना । रूपघन्ति सो जाइ वसामा ॥
 प्रेम घट्टेउ तब मन के हिपरें । भेजा निछज बुद्ध के नियरें ॥

बुद्ध पठायैउ लाज को, मनहि बुझायेउ आय ।

दिन दुइ मन धीरज धरा, पुनि अधीर भा राय ॥१०॥

दुर्जा आपन घन्धु पढाया । जाइ मनहि अजिछाप घटाया ॥
 यिनु जित अज्ञा मन गा तहा । रहा देम कायापुर जहा ॥
 साहस सेवक मन को रहा । मन के साथ यात अस फहा ॥

झेंट करै चितवन सो चाही । आपन विषा सुनावहु ताही ॥
रूप गली निस कहँ मन आयेउ । यूँकै चितवन घाम पठायेउ ॥

चितवन आयेउ मन नियर, मन की बातहिं पाइ ।

जहां रूप बैठी रही, तहां सुनायेउ जाइ ॥११॥

हुनि मन बात रूप अभिमानी । चितवन ऊपर अधिक रिसानी ॥

कहा मन पास फेर जिन जाहू । मन सो दूर करहु यह चाहू ॥

मन सेवर दरसन दिग आई । मन के नेह की बात सुनाई ॥

दरसन बात सुना पर पाया । छाडेउ आपसा आपन आया ॥

औ मन राय आस थे हियरें । भेजा प्रीय रूप के नियरे ॥

प्रीत पियारी नारि, गई रूप के ठाउँ ।

आपन पास बतयेउ, निर्मलतापुर गाउँ ॥१२॥

चेरी समा रही होइ नारी । भइल प्रीत रूप की प्यारी ॥

रही पियत धन सुरा सुगासा । मन तेहि गली गयेउ तजि ब्रासा ॥

चितवन कह तब प्रीत देखावा । चितवन रानी कह निर्यावा ॥

देसि रूप मन रूप लोभानी । मन औ जिव सो रीकी रानी ॥

मन सनेह दुख जेतो पाया । प्रीत रूप मन पाइ सुनावा ॥

सुना रूप मन को दुख, दाया संघर लीन्ह ।

आयसु आवागवन को, चितवन कहं तब दीन्ह ॥१३॥

चितवन अपने सदन मफारा । मन राजा कह आनि उतारा ॥

देवस चार पर रूपहि आना । मन कह भेंटा मन मनमाना ॥

पिता कि लाज रही तेहि हियरें । आवै दूरि दूरि मन नियरें ॥

नार एक विभिचारिन रही । रूप कि बात पिता सो कही ॥

पिता रूप मन साथ बियाहा । भा दोउ हाथ मिलन को लाहा ॥

मन की इच्छा पूजी, भए दोऊ एक ठाउँ ।

रूप सहित मन आयेउ, पुनि सरीर पुर गाउँ ॥१४॥

दिन दिन अधिक बढ़ी परभूता । जनमे मन घर सुन औ मृता ॥
 चिन्ता गै परमद बरसाऊ । चन्द्र सुरज उतरे घर ठाऊ ॥
 जित रीझा दोउ बालक ऊपर । राजकाज सब छोड़े भूधर ॥
 राज सउँपि दुर्जन कहँ दीन्हा । आप प्रेम को सघर लीन्हा ॥
 जित के सेवक निबल गए । दुर्जन दास बली होइ गए ॥

जित कहँ बुद्ध बुझायेउ, जित न पुजायेउ आस ।

बुद्ध बटाऊँ होइ गयेउ, साहस जोगी पास ॥१५॥

साहस तैं जित मरन सुनावा । सुनि कै तपी उपाय बतावा ॥
 प्रीतपूर है निर्मल ठाऊँ । तहा महीपत क्रीपा नाऊँ ॥
 बलहु बलहु क्रीपा के ओरा । होइ सँवारै कारण तोरा ॥
 गए दोऊ क्रीपा के पास । जिनको राज बहेरै आसा ॥
 क्रीपा आदर बहुतै कीन्हा । ठावँ परम मन्दिर मे दीन्हा ॥

क्रीपा के राजा रहा, सुखदाता तेहि नाउँ ।

जीउ मनोरथ कारने, गयेउ महीपति ठाउँ ॥१६॥

सुखदाता क्रीपहि बै दीन्हा । कस सोई जो चाहस कीन्हा ॥
 बिबिलेने बुधि सग लगावा । बुधि जित निकट तिन्है लैआया ॥
 दूनउ रूप भुलाना राजा । मनमो प्रेम दनामा बाजा ॥
 बै दोऊ जित कहँ लै आए । क्रीपा नियरे भेंट कराए ॥
 प्रेम प्रेम मद प्याला दीन्हा । तब जित सुखदाता कहँ चीन्हा ॥

होइ दवाल सुखदाता, चार देस तेहि दीन्ह ।

जीऊ महाराजा भयेउ, पुनि सरीर पुर लीन्ह ॥१७॥

कहेउ सपूरन जीउ कहानी । बूझै जो मानुष है जानी ॥
 जीउ कहानी सुह मभारा । चित्र मनोरम कथिन सँवारा ॥
 जो चाहत तो करव गरन्या । पै कवि बला कुबर के पन्या ॥

होइहै जो कोई भापनहारा । सो करिहै तिनकर बिस्तारा ॥
 दीन्है मैं एक भीत ठाढ़े । कोउ कवि चित्र सँवारै भाई ॥
 अरे मित्र मन वृष्भिकै, मन राजा को प्रेम ।
 क्षारु रूप के सीस पर, मधुर बचन को हेम ॥१८॥



[९] पातो खड ।

पढत कहानी रागिय भँवरा । बुध से नहि मत्री कहँ सवरा ॥
 होतै सग जो मन्त्रिय भोरा । कारज लाग न लावत भोरा ॥
 बुद्ध उहा सपने मो देखा । जनुहु हँकारत कुवर चरेखा ॥
 बुद्ध सनेह चरन सो धायेउ । फुलवारी मो राजहि पायेउ ॥
 अनुकम्पा सो रोयन दोऊ । मित्र सो होइ बिलग नहि कोऊ ॥

बुद्ध सेन के मिलन सो, राजहिं भयउ अनन्द ।

फुलेउ कुसुदिन मोद को, पाइ मिलन को चन्द ॥१॥

रहा न मन राजा के हाथा । लागैउ इन्द्रायति के साथा ॥
 मन धिनु भा अनुमन अनुरागी । दिष्ट नासिकाऊ पर लागी ॥
 रक्तभाँसु आखिन सो द्वारा । नैन भए स्नानित कौठवारा ॥
 चेता वोहि समै बलि आई । रहसि कुवर कह यात सुनाई ॥
 जैसे कहेउ भयेउ तोहि तैसे । पाइ दरस मुरछे तुम ऐसे ॥

इन्द्रायति मन मो बसी, की मन सो उचठान ।

है तैसे वह की नहीं, जैसे कहेउं बखान ॥२॥

प्रेम कि बाट है बाट हमारी । मनसो उबठी कहा पियारी ॥
 है दरसन इन्द्रायति रानी । रोम रोम तन आइ समानी ॥
 अहे बखान सो बाहर सोई । तामु बखान करै का कोई ॥

नखसिख से वह मूरत चीनी । हे सुन्दरता परमल श्रीनी ॥
ताको अतिहि सुधास्त्रय प्यारा । हे अकार सम मान मफारा ॥

भरना ता मुख मान को, मनमें रहा समाइ ।

चूडों लेचन पूतरीं, आंसु दगमें जाइ ॥३॥

धन को बदन सुनज की चादू । अलकावर नागिन की फादू ॥

नैना निर्ग कि हैं मतवारी । की चचल खजन कजरारी ॥

तिल कपाल पर है सुठलोना । की सुनना पर मधुकर लोना ॥

खाह अधर की अमृत होई । की मूंगा की रवि सुत सोई ॥

मुख है कली कि अहै अँगूठी । की नाहीं किछु भेद अनूठी ॥

दसन बीज दाडिम को, की मोती लर होइ ।

की हीरा की नयन है, चमक बीज अस सोइ ॥४॥

चेता कहा बदन प्यारी का । सिव परकास मुकुर है नीका ॥

प्यारी के नैना मतवारे । भेद अलख के अहैं सवारे ॥

तिल है सुन एकाई केरा । तेहि दिस करत जगत जित केरा ॥

औ है सुन मनुष के जीका । बिग न परख जात है नीका ॥

अधर अहै क्रीपा कर ताको । सुधा समान बचन है जाको ॥

मुख है भेद छिपाना, वृष्णि न पारै कोइ ।

दसन निर्मरा ताको, मूल जोत को होइ ॥५॥

धन यह जेई अस रूप बनाया । मनहु जोत धारा है काया ॥

पहिलें जोत उतरि जित भयेऊ । आप आतमा होइ छिपि गयेऊ ॥

मुनि मन भये आतमा सेती । मन से काया चाह समेती ॥

एकै जोत तीन पहिरावा । पहिर नाम इन्द्रावति पावा ॥

जोतसे आग आग से बाक । भयेउ पवन से नीर बनाऊ ॥

भयेउ नीर सों माटी, चारों से भै देह ।

देह और यह जीउ सों, बाढ़ी बहुत सनेह ॥६॥

पहिले धन के अम्युक माही । अजन स्याम रहा है नाही ॥
 साते रहे नहीं कछु जाना । ना अजन पर चाहत आना ॥
 सखी एक अजन तेहि दीन्हा । अजन है हत्यारिन कीन्हा ॥
 दरपन दीन्हा सखी सयानी । आपुहि आप देखि लबुधानी ॥
 प्रेम को पाव एक मो आयेउ । एकहि दुइ दिस दरस देखायेउ ॥

रूप पदारथ देखि कै, प्यारी रही लोभाइ ।

गांहक खोज हिये बसी, दीन्हा सखी जगाइ ॥७॥

रूप समुद्र अहै यह प्यारी । जबसे प्रेम परा सिर भारी ॥
 तासो देत लहर उबिलानी । व्याकुल भै मन बीध सयानी ॥
 लागत चार ठाउ तेहि नीको । है विस्त्रानी धन के जी को ॥
 एक सरीर नैदिर छविधारी । दूसर है यह मन फुलवारी ॥
 तीसर अहै जीउ अस्थाना । चौथा जात सदन हम जाना ॥

फोऊ नाहीं बीच मो, अपने रूप लोभान ।

अपनो चित्र चितेरा, देखि आप अरुझान ॥८॥

सुनि बखान राजा बैरागी । बोला अधिक भयेउ अनुरागी ॥
 रूप पियारी का मैं देखा । जगत भयेउ दरपन के लेखा ॥
 यह सब दिष्ट परत है मोही । तामो देखत हो मुख ओहीं ॥
 रही सुगन्ध जहा लट केरी । मन औ चित्त भँवर होइ चेरी ॥
 पहिल चार सो निरसत जो है । ताको मान पियारी सो है ॥

पाती एक लिखत हौ, लै पहुचावहु ताहि ।

जीउ दुखवारी काया, उठत कराहि कराहि ॥९॥

तय राजा प्रेमारथ सीखा । इन्द्रावति को पाती लीखा ॥
 अहो पियारी मान अहेरी । सपत अहै उ आसिन केरी ॥
 जेन पहिरा अजन पहिराया । चितवन मदसो जगत मताया ॥

सपथ दीऊ अथरन की खाऊ । बसुधा बीच सुधा के टाऊ ॥

अहै सपथ स्यामल तिल केरी । जापर सरग नार हैं चेरी ॥

स्यामल लटकी सौंह है, जेहि फांदे मन फांद ।

सपथ सलोने वदन की, जाको तुलै न चांद ॥१०॥

देस हमार कलिजर जहा । तुम्है सपन मो देखउँ तथा ॥

दिन ननि प्रेमद आ मन माही । नै हेराइ पर बिन्ता छाही ॥

छोहेछ सकल राज औ देसू । भयेस तुम्है नित जोगी भेसू ॥

तब अनुराग चरन सो धायेस । मन फुलवारी भीतर आयेस ॥

दरसन दरसन किहेस पुकारा । पायेस उत्तर दरस तुम्हारा ॥

मोहि लेखें आदरस है, निर्मल यह संसार ।

तामो देखत है सदा, सुन्दर वदन तोहार ॥११॥

प्रेम आगसो जरा परानू । बेधा हियें नयन कर धानू ॥

फा जो दूर परा है प्यारी । बिनरत नाही भजन तुम्हारी ॥

जबसो मोह धनुक तुम खावा । बितवन सरसो जीव न खावा ॥

यह तन माटी कहैं का पारा । जायै परगट प्रेम तुम्हारा ॥

पै तेहि डीठ आप तुम कीन्हा । प्रेमकर रतन हाथ नहैं दीन्हा ॥

हैं सनेह के जलमो, यहै प्रान को मीन ।

बाहेर काढि न डारहु, ना तौ मरै मलीन ॥१२॥

जब सो मोहि संसार भकारा । मानस लाग बान तुम्हारा ॥

उपजो हियें सहस आनन्दू । गयेस जगत को मय दुषदन्दू ॥

है हिय प्रेम बान का घाऊ । किछु नहीं ओपद परचाऊ ॥

दूसर ओपद ताको नाही । ओपद मिलन कहा हम जाहीं ॥

भूलि सकल पर चिन्ता गयेक । ठाउँ तोहार स्वात नहैं भयेक ॥

हुजै दरसन ऊपरें, नेत्रछापर जिउ मोर ।

काटि जगत को फादा, भागि उचेउं तोहि ओर ॥१३॥

है सारङ्गी देह हमारी । तार बनी है प्रीत तुम्हारी ॥
 वाजत अहै प्रीत को तारा । निसरत तासो नाम तुम्हारा ॥
 है मै बिछुरा बन मो परा । काहुअ मेरो हाथ न धरा ॥
 दया तोहार धरै जो हाथा । बन सो निसरत है जित साथी ॥
 रहे ' आद को राजा जोगी । है अद्य प्रेमपन्थ कर जोगी ॥

बहुत लिखै वह मन दुखै, पातै लिखैं न और ।

अनुकम्पा चाहै सदा, यह फुलवारी ठौर ॥१४॥

लिखि पाती चेता कह दीन्हा । चेता गवन रत्न दिस कीन्हा ॥
 प्यारी उहा बियाकुल भई । जयसो देखि कुवर कहँ गई ॥
 कुभर रूप लागेउ अति नीका । हिर्ये समान खेल भा फीका ॥
 मन है बाग रहै नहि हाथा । लागेउ मन जोगी के साथी ॥
 आखिन सो देखै सै रगू । बसा परान मन रावल सगू ॥

भा खुम्भीर प्रेम तेहि, परी तासु मुख माहँ ।

भयेउ अस्त आनन्द रवि, फैलेउ बिप मौ छाहँ ॥१५॥

जय धन सो मुख चिन्ता गई । सखियन के मन चिन्ता भई ॥
 बैठिन आई बहू दिस घेरी । भइ पतग तेहि दीपक केरी ॥
 पूछेन कस अमन हँन प्यारी । तुम सिर छाह पिता को भारी ॥
 ललित फूल भा प्रीत तुम्हारा । बही न फलहु भकोर बयारा ॥
 रितु बसन्त पलुहै फुलवारी । तेहि पतिभार कहा सो प्यारी ॥

है धन बदन विरोचन, सोम घटन केहि लाग ।

पिता छाह सिर ऊपर, है उन्नत भल भाग ॥१६॥

भइउ अहो मुगधा के पना । होइ अज्ञात ज्ञात जोबना ॥
 रहा खेल तेहि समय पियारा । परा न सीस सोच दुख भारा ॥
 दीत गयेउ अय जब छरिकाई । मध्या भइउ भई तरुनाई ॥

सो तरुनाई बैरिन भई । खेल खेल सब हरि लैगई ॥

पै तरुनाई है मोहि प्यारी । बल मति की पूजी है भारी ॥

एक समै विधाई, लागिहि काया साथ ।

सोच करत हैं निसिदिन, रूप न रहि है हाथ ॥१७॥

प्रा मन मरम छिपावत रानी । आन सोच है हिये समानी ॥

को न रही धन मुगधा कन्या । भई न मध्या गोररी धन्या ॥

भई न बाला तरुनी नारी । विधे न भै मन चाह न मारी ॥

आ सय पर सय पर अस होई । एक बैस पर रहा न कोई ॥

सो कहु अनन हंसि जेहि सेती । मरम छिपावत है केहि नेती ॥

हय सब मरमी सहचरीं, चाहैं कुसल तोहार ।

मन को मरम सुनावहु, कै परतीत हमार ॥१८॥

हो मोदया का कहवै पुकारी । का दिन सो देखवैं फुलरारी ॥

जोगी नहा दिष्ट जो परा । रूप मन्त्र मन मेरो हरा ॥

ता दिन सो व्याकुल नित रहऊ । दग्ध प्रेम पावक को महक ॥

मन सो गयेत भूल सब खेला । भयेत मोर मन जोगी खेला ॥

जोगी प्रेम दियावा हिये । निसदिन पावत है मन निघरे ॥

दूसर एक न भावत, जोगी हिये सपान ।

मन अकास उड़ित भयेउ, तासु प्रेम को मान ॥१९॥

मानमती अभिमानी सखी । लखी प्रेम धन मान न रखी ॥

इन्द्रायति तेहि छाजत नाही । जोगी वसे आइ मन नाही ॥

जो कोउ होत आपनो जोरी । तासो प्रीन लगावहि गोररी ॥

जोगी दिन दुख मो बलि आई । तेहि कारन तन देहु नसाई ॥

जोगी माया रहित भियारी । उचित कहा मन लाइव प्यारी ॥

जो अपने सम नार्हीं, ताकी प्रीत न लेहु ।

तजि जोगी की चिन्ता, मन असन्द पर बेहु ॥२०॥

इन्द्रायती ।

मानमती सो कहा पियारी । प्रेम नरम न
जेहि निस दिन सुनिरत है कोऊ । ताहू कहं
बुझि परत सुनिरत है मोहीं । सुनिरत न
मैं न आवसो साधा प्रेमू । प्रेम साध
का राजा का होइ भिखारी । सुनिरै सोई
कुल विसेप उत्तम नहीं, सुमिरै उ
उत्तम जात भये सो, गरव न राखै
दायावन्ती उतर सुनावा । मानमती है
वह जोगी राजा सुनि परा । तजि कै रा
मोहि जाने वह तपी वियोगी । इन्द्रायति
वसै आइ फुलवारी सोई । जो रानी व
धूक खोल मन अन्तर पटा । सपने का जे
दायावन्ती बचन सुनि, इन्द्रायति ।
कहा सत्त तुम भापा, भापा सत्त ।
समु काइन सथ सखी सपानी । अथ तो ज
आइ पहुँचा जोग सरेखा । जाके तुम
मान चेत देखत फुलवारी । न तो कह
जो जोगी कहैं समुझेउ आझू । पाइ हित
गगन पहुँचै जोगी सीसू । वृन्दारक ते
धीरज धरि कै देखियै, होत होत क
मन बेगवार बेनि जाइया मोती का

धोली तुम चेता जस कहा । फुलवारी जोगी तम अहा ॥
 आज परन समुक्त मैं रोई । किसे मोतिय काटे सोई ॥
 मोती काढे कारने, बुझै न जलधि मभार ।
 ना तो जोगी के निमित्त, जाइहि जीउ हमार ॥२४॥
 चिन्ता जोगी लाग न पावै । अलख दया सो मोती काटे ॥
 जो प्यारी ना जोगी यसा । होइ सजोग नपत के दसा ॥
 हसि पदुमिनी कमल ओ चन्द । सचिकमलहि तोहि देखिअनदू ॥
 होइ नपुंकर जोगी रस लेई । होइ तिमिरार जात तोहि देई ॥
 तोहि जोगी हैं जोगिय राजा । सिर्जनहार सगारइ काजा ॥
 उतर देहु लिखि प्यारी, जाइ देगावउँ ताहि ।
 प्रेम पन्थ तुम लीन्हा, करता देइ नियाहि ॥२५॥
 उतर लिखा तब प्रेम सजोगी । जो मोहि लाग भयेव तुमजोगी ॥
 तो मेरो मन तुम हरि लीन्हा । अपने रूपहि जोगिनि कीन्हा ॥
 सपन धीब देखेव मैं तोहीं । गुरु सपन दरसन भा मोही ॥
 जा दिन सो सुष मिली तुम्हारी । प्रीत हियें बाढी अधिकारी ॥
 देखै नित फुलवारी गइक । दरसन पाइ बावरी भइक ॥
 होइ जोगी आयेहु इहा, जाडि सकल सुख भोग ।
 मह रहें तोहि कारने, व्याकुल पाइ वियोग ॥२६॥
 प्यारे दूर न जानेहु मोहीं । पावत है घट भीतर तोही ॥
 मूढ़ नैन तुही मोही सूझा । देख मूल मैं तुम कह झूझा ॥
 तुमही देह धरे सब ठाक । रविसचिनीरज कुमुदिनि नाक ॥
 दस मैं सहस एक सो होई । सुन लागे सुन नासैं सोई ॥
 तस तुम एक सहस गुन तोही । गुन तोहार अरुकायेहु मोही ॥
 जित मो निघर तुम्हारे, हैं सरीर सां दूर ।
 प्रेम छाह मोहि घटमो, छाड रही भरपूर ॥२७॥

अरे प्रान कालिजर राजा । दरसन देत तुम्हें मोहि छाजा ॥
 पै परगट मुख होत हमारा । बाउर होत एक ससारा ॥
 औ। परिले जग लोग विराना । इन्द्रायतिमनतपिहि लोभाना ॥
 हे मोहि उचित प्रीत अस करक । लोग जगत मुख बीच न परक ॥
 जो सजोग मनोरथ राजा । तौ मोली को काढ्य छाजा ॥

प्रान पिपारे अहै मोहिं, चिन्ता प्रेम तोहार ।

चित्र तुम्हारे यदन को, है मन पत्र मभार ॥२८॥

धन पाती चेना ले आई । राजा मन अभिलाष बढ़ाई ॥
 कहै होउ पयो उडि जाऊ । प्रान पिपारी है जेहि ठाऊ ॥
 आइ सीधु मोहि डारत भारी । माटी होत सरीर हमारी ॥
 मान सुरा का होतैउ पवाला । सो अधरन लावत भरि हाला ॥
 अधर तेहिक जिउदाता आही । देत भलो जीवन जस चाही ॥

मोहि निर्यल निगुन कहं, अलख सकति अस देत ।

प्रतयिन्धी ता यदन को, होतैउं चाह समेत ॥२९॥

जय परभात भयेउ उजियारा । फुलवारी मो यहिउ ययारा ॥
 पाई ययार कली रहमानी । बहुर हँमी बहुरै सुसुकानी ॥
 राजें कहा पवन के साया । है मेरो मन जा धन हाया ॥
 जो तेहि ओर बहो तुम आई । दीन्हैउ मोर सदेम सुनाई ॥
 सुपरी मिली दया की पाती । भै मुद भै हिंदै औ छाती ॥

पदि राखेउं मन ऊपर, डरेउं कि मान मदाहि ।

पाती कहं न जरावै, धरेउं नयन पर ताहि ॥३०॥

फेर हरेउ आसुषें सीजे । तेहितेधरेउ जियमह किन छीजे ॥
 चाहत है नित दया तुम्हारी । है नहि दुमरौ आस हमारी ॥
 ठाठ तोहार यनो मन माही । ठाठ तहा दुसरे कर माही ॥

समुझन कहती हो रँग राती । यहुतै घेघ होत मोहि छाती ॥
 प्रेम आग दगधी हिय काया । पर चिन्ता को दारुण राया ॥
 आइ परा है प्रेम मगु, कर गहि देहु सम्हार ।
 चिन्ता करउँ मिलन को, दूसर धन्ध नेवार ॥३१॥
 अरे अरे कलवार पियारे । मदिरा डारै नैन तुम्हारे ॥
 एक पियाला भर मद दीजै । मोल पियारे मानस लीजै ॥
 पिअठ सुरा पर चिन्ता मारत । पलकनसे मद सदन घोहारत ॥
 तोहि सरवन सो है दुरखचा । दून अनल मुख सोभा रचा ॥
 यह मन तापर आवई जाई । झूलत है मन देत फुलाई ॥
 दे मद अपने हाथ से, पिअउँ देखि मुख तोर ।
 चाहसि तो मद मोल ले, प्रान पियारा मोर ॥३२॥

[१०] दर्शन खण्ड ।

कुवर सदेस पवन जो पावा । इन्द्रायति सो जाइ सुनावा ॥
 प्रेम अधिक रानी कह बाढा । होइ अनुरागिन उत्तर काढा ॥
 हम कह जानहु प्रीतम माई । जग भीतर मेंहदी की नाई ॥
 है मै धन परगट सो हरी । पैहो गुपुन रक्त सो भरी ॥
 तोहि आखिन पर मोमन लोभा । सोभा अब नित मारत सोभा ॥
 होइ निडर जय ताई, नहि भेंटत है तोहिं ।
 तब ताई सुख मन्दिर, दुख मन्दिर है मोहि ॥१॥
 मेरे हाथन हिर्द सयाना । सो तोहि जोग जटा अरुमाना ॥
 है अमन तोहि मुनिरत जियऊ । सदा करेज सरोनित पियऊ ॥
 सखी यदुन हम कह समुझावै । घट की पीरा एक न पावै ॥

जाके मोह न गई येबाई । सो का जानी पीर पराई ॥

पायन अहे लाज की बेरी । ना तो बेरी होनिव तेरी ॥

पवन सुनाइह तुम कहं, सय दुख बिथा हमार ।

जगमें इच्छा मेरो, है संजोग तोहार ॥२॥

राजा उतर पयन सो पायेउ । प्रेमपुरा उपग्रन सो आयेउ ॥

वह सुख ठाठ प्रेमपुर गाऊ । मद्यप रहा प्रेमपति नाऊ ॥

अयेउ कुवर तेहि द्वारी ठाढ़ा । आदर बचन प्रेम पति काढ़ा ॥

कही भीख कछु चाही जोगी । की काहु के प्रेम बियोगी ॥

कहा भीख मैं पावउ तबही । होइ दयाल अलख मोहिजबही॥

इन्द्रायति को मिलन है, उत्तम भीख हमार ।

जग में दूसर भीख सो, अहो न चाहन हार ॥३॥

सुनि कलधार कहा हो जोगी । महा रूप के अहव बियोगी ॥

है वह रूप दीप उजियारा । है बनङ्ग तापर समारा ॥

राज दीप को दीपक अहई । गुप्तम रहै न परगट रहई ॥

काढि परन मोती छे आवी । तब कोउ इन्द्रायति कह पावे ॥

अब तो पियहु चोख मद मेरा । होइ कि पूजे कागज तेरा ॥

एक पिपाला मद पिये, छूट जाइ सो त्रास ।

भीख भीख कै मागह, जाइ महीप नैवास ॥४॥

कहा त्रास छीहैं बस जीक । मद्य बरन दापित नहि पीक ॥

घोला मद्यप यह मद चोखू । इष्टा लाग पियहु नहि दोखू ॥

जय अंधयउ मद भा मनवारा । गयेउ तहा जहा राज दुवारा ॥

को जो भा मनवारा नेही । पै न तजा बुद्धि मति देही ॥

सोही राज दुवारे ठाऊ । पादप रहा सनेहा नाऊ ॥

जो तेहि छाहैं बढै, ता कह आज्ञा होइ ।

जाइ जलज के सागर, मोती काढै सोइ ॥५॥

बैठा कुवर सनेहा तरे । चिन्ता कथन चिन्त मो धरें ॥
 आइ एक जगपति का चेरा । कहा सनेहा छाहँ बसेरा ॥
 लेई आइ कै राजा सोई । जो इन्द्रायति प्रेमी होई ॥
 कहा सनेहा छाहँ आयेउ । तब जब प्रेम रतन को पायेउ ॥
 तजि कालिजर राज पियारा । जोगी भयेउ तजेउ घर धारा ॥

हैं इन्द्रायति जोगी, जोग पियाला हाथ ।

दरसन मिथ्या भागउं, मन लागा तेहि साथ ॥६॥

कुवर सरम जब चेरा पायेउ । तब जगपति सो भरम जनायेउ ॥
 सुनि जगपति तेहि केर पठाया । तुरत बसीठ पवन सम आया ॥
 कहा भीस पावहु किम ठाढे । मिथ्या मिलै जलज के काढे ॥
 जब बसीठ यह कहेउ सदेसा । मानहु दीप बचन को लेसा ॥
 राजहि मूक परेउ बह पन्था । जानित पहिरेउ जोगी कन्था ॥

कहा होउं मैं सिन्धु मो, जलज मिलै तो भाग ।

न तो नेछावर होइ जिउ, प्रान पियारी लाग ॥७॥

ता दिन कुवर प्रेम रस पाया । रैन सनेहा तरें बिनाया ॥
 धवराहर रानी प्यारी को । भयेउ गगन राजा के जी को ॥
 इन्द्रायति को चिन्ता धरें । गयेउ कुवर धवराहर तरें ॥
 तेहि पल इन्द्रायनी मुभागी । आइ भरोखें वितवन लागी ॥
 रवि परभात भरोखे वरा । गयेउ तमिसरा यावर हुआ ॥

राजा श्री रानी सो, भयेउ नयन दुई चार ।

तति मन्भा अन्तर पट, धवराहर रंगार ॥८॥

आपन यदुग सी बधा लोन्हा । अधिक बेपाकुड प्रेमिदि कोन्हा
 भीनम रूप अचाह न देया । भा यावर धन जीउ भरेया ॥
 रोये लाग दूा दुग थाडा । मिलन वियोग दोउ यहि मादा ॥

धधराहर पर प्रीतम आवा । आपन रूप मोहि निरखावा ॥
आज उघारेउ दसई द्वारा । दिष्ट परा वह प्रीतम प्यारा ॥

दरस देवायेउँ आपनो, प्रीतम प्रान हमार ।

जीउ न नैन अघाने, भा वैरी रखवार ॥९॥

राजा हाहा कहि पछताना । दिष्ट परा जित, फेर छिपाना ॥

आज परान परा मोहि दीठी । दिष्टेउ सरीर ऊर दिस पीठी ॥

जित का मैं जित का जित देखा । लुधुधाना यह जीउ सरेखा ॥

आज घदन देखा मैं जाको । है यह जगत भरोखा ताको ॥

मन की दिष्ट प्रान पर लागी । भयेउ जीउ अधिकै अनुरागी ॥

आयेउ विछै तर कुंवर, आसु रक्त की रोइ ।

अपने घट मो जरि रहा, पिथा न पूछा कोइ ॥१०॥

बोही समै रागि एक आयेउ । आइ प्रेम की राग सुनायेउ ॥

प्रेम राग सुनि निर्ध बैरागी । अधिक भयेउ अभिलाषी रागी ॥

ठठा वियोग हुतासन जला । बुद्ध समेत सिन्धु दिस चला ॥

आपा गढपति दुर्जन नाक । कटक समेत रहा भगु ठाक ॥

भेटि कुपर कहँ कहा गोसाईँ । क्रीपा करहु आज यह ठाई ॥

तुम जोगस्वर ज्ञानी, मैं मूरख मति होन ।

होइ तुम्हार वचन सुनि, बुद्ध मोर चलवीन ॥११॥

आप कुपर बोला तेहि ठाक । लाब पन्थ है कहा धिराऊँ ॥

दिन बीतत भा काज न हाथा । नहि कछु दरब जोग को साथा ॥

यह जगजीवन थोरो आही । काज अधिक करना मोहि चाही ॥

सपन समा यह जीवन मोरा । अहै दिया सब बहै भकोरा ॥

सत्तर पथ दिष्ट मोहि आयेउ । तिन्हैं तजेउ यह सचर सायेउ ॥

तब लग कहा धिरो मैं, जगमें काहू साथ ।

जब लग नार्ही होत है, जोग मूल मोहि हाथ ॥१२॥

दुर्जन कहा जोग तुम चागा । लॉये पन्थ चरन का रागा ॥
 फयन पन्थ के अहउ वियोगी । हहु मेवरा की जगम जोगी ॥
 कहा वियोगी पन्था घारी । इन्द्रावति नित अहउ सिरारी ॥
 परन जलज काढ़ै कह जाऊ । हुयुकी गाठ सुमिरि यह नाऊ ॥
 कहा अघानेहु जीवन मेती । प्रान तजहु इन्द्रावति नेती ॥

बहुत महीप जलज नित, बूड़े सिन्धु मझार ।

प्रान न देहु गोसाई, मानहु कहा हमार ॥१३॥

राजें ठतर घान अस नारा । किछु न रहेउ दुर्जन कह पारा ॥
 आपा बहुर कीन्त जडताई । बाधा राजहि के सतुराई ॥
 दुर्जन गाढो दुर्जन भयेऊ । राजहि आपागढ लै गयेऊ ॥
 प्रेमी ससै आना नाही । इन्द्रावती रही मन माही ॥
 मन मो जिस दिन सुस्तिरनचाही । रहै कहू किछु दोष न आही ॥

राजा परा बन्द मो, बुड मेनहत्त छूट ।

बन्द ठेढाइन पारेउ, माना मनमों दूट ॥१४॥

मो बाबा जो भेद छिपावा । जो बेला सो सीम गयावा ॥
 जीभ झली तालू के तरें । राग झली प्रयालन धरें ॥
 अथर न खोल कह करु मेरा । राखन भीत कान बहतेरा ॥
 भेद मित्र सो राखत गोई । मित्र मित्र के दूसर होई ॥
 भेद न खोल देउस लै नाही । खोलत भेद जाइ जग माहीं ॥

सुना नहीं है यह बचन, मन मो बचन छिपाव ।

घातहि हाथी पाइयो, बातहि हाथी पाव ॥१५॥

दुर्जन की कामिनि मोहनी । कै सिंगार एक ज मिनि घनी ॥
 औ घन प्राण लीन्ह दन चेरी । सब अपठरा इन्द्रपुर केरी ॥
 छाई कुंजर निकट नै ठाडी । बिनती बरन अथर सो काढी ॥

पूरुख मेरो भलो न कीन्हा । तुम अस जोगी कह बँद दीन्हा ॥
कोप न मानहु राजा जोगी । ले दस कामिन हो अब भोगी ॥

इन्द्रावति चिन्ता तजी, मानहु सुख औ भोग ।

येह दस कामिनि संगी, हे जोगी तोहि जोग ॥१६॥

राज कुशर बूझा यह गोरी । प्रेम पन्थ बैरी है मोरी ॥
कहा बन्द मैं ता दिन पाजा । जा दिन जित काया मो आधा ॥
उचित कहा बिसराऊ ताही । आप बोध पावन है जाही ॥
घट हमार जो छाई सोई । प्रान सरी छूछ मोहि होई ॥
येह दस कामिनि संग तेरी । हैं छाया इन्द्रावति केरी ॥

प्रेम जेहि क मोहि बाउरो, कीन्ह छोड़ायेउ राज ।

सो प्यारी है प्रान जिउ, है तासो मोहि काज ॥१७॥

रहिये येहि नगर बैरागी । भूरत तोर भली मोहि लागी ॥
धरारहर तोहि देउ उठाई । दासिन देउ करहि सेवकाई ॥
रूप सुबरन देउ परभूता । करै धनी उपजावै बूता ॥
जो इन्द्रावति प्रीत भुलावहु । अबहीं मुक्त बन्द सो पावहु ॥
ता धन को मन काठ करेरो । ता मन होइ न चिन्ता तेरो ॥

बहुत महीपत बूडे, मोती सिन्धु मभार ।

है जग मो हत्यारी, वह इन्द्रावति नार ॥१८॥

काहैं भलो हमें तुम चीन्हा । भलो सोइ जो हम कह कोन्हा ॥
मैं यह नगर रहत तब ताई । जय लग होई लिखा जग साई ॥
काह करौ कवन औ रूपा । कवन रूप पन्थ मो कूरा ॥
आपन भुलै जेहि बँद नाही । भलो सोधद मुक्त भल नाहीं ॥
हित चिन्ता का जानई कोई । मैं जानौ की जानै सोई ॥

करत न हत्या आप वह, इन्द्रावति रमनीय ।

दीपक कहत पतंग सों, मो पर दे तैं जीय ॥१९॥

घेरिन सहित मोहनी गई । उतर धान से घायल भई ॥
 राजें आँसु रक्त की ढारा । भा ईगुर गेरू रतनारा ॥
 सोच बन्द को निर्घ न कीन्हा । रोयेठ आपन औगुन चीन्हा ॥
 आपन औगुन काइ सुनावठ । औगुन से सजोग न पावठ ॥
 जो ममता यह मोसें जाती । होत गोद मो वह रगराती ॥

बिच अंतर पट हो रही, यह ममता मद मोर ।

मिलये के दिन दूर हैं, जग को जीवन थोर ॥२०॥

अनुरे सुवा मित्र तैं मेरो । मन मो धरो निहोरा तेरो ॥
 रहत जहा वह प्रान पियारी । जाइ सुनायेहु विथा हमारी ॥
 तोहि बिनु जगत बन्द है मोहीं । किछु हमार चिन्ता है तोही ॥
 दिन औ रात अपत हो नाऊ । है आनन्द बन्द के ठाऊ ॥
 हम कह यह जगबन्द मफारा । है अहार एक नाम तुम्हारा ॥

जो न होत मोहि बन्द में, नाम तोहार अहार ।

एक घड़ी ठहरत नहीं, जीवन प्रान हमार ॥२१॥

[११] सुवा खण्ड ।

राजा रहा धन्द मो अहा । लागा रहा विछै एक तहा ॥
 धैठा पत्री पर एक सुवा । रोवा सुग मयन जछ चुवा ॥
 देखा कुवर कीर सो कहा । ढारेठ आसु कवन दुख अहा ॥
 ना पिंजर को अहह कलेसू । पख पाइ सो पूरन भैसू ॥
 की तोहि लाग भूख औ प्यासा । की आगम को हीर्ये आसा ॥

हौ दुख भरे सुआ तुम, का तोहार है नाउं ।

को तोहार माता पिता, कहां जनम भुमि ठाऊं ॥१॥

का पूछत हो मेरे नाक । माता पिता जनम भुमि ठाक ॥
 प्राण हमार नाम है जोगी । सदा जगत मो रहत बियोगी ॥
 धरती मात गगन पितु नाक । है यह लोक जनम भुमि ठाक ॥
 औ जो पूछहु गुरु के चेरा । जनम देस तन औ जित केरा ॥
 तन को देस इलापुर जानेउ । जित को गगनपूर पहिचानेउ ॥

पंख पाय सब मोरें, अहै न भूख पियास ।

रोवत अहैं विछै पर, मित्र छाडि गा पास ॥२॥

जा दिन से भा मित्र बिछोह । नैन घटा बरसावत छोह ॥
 रहेउ मित्र सँग तेहि धन माही । भूख पियास रहेउ जह नाहीं ॥
 काग एक भा शत्रु हमारा । दीन्ह चिन्हाइ सो गोहू चारा ॥
 लाग दोष गोहू के खायें । बिछुरा प्रीतम दोषिल पायें ॥
 गोहू खाइ दूर सँ परा । सुख अनन्द महेरुह हरा ॥

मित्र बिना तन मेरो, पिंजर चाह सँकेत ।

अहै विराना सब कोऊ, हित सों जासों हेत ॥३॥

आगेह बरजा मित्र पियारा । पै खायें फादे मह हारा ॥

रहा न गोहू विहरल हीया । निसचै रहा प्रेम कर बीया ॥
 वोही बीज मन धरती परा । जोग बिर्ले तासो अवतरा ॥
 रहा न दायम जो निखावा । आपुहि प्रेम दून होइ आवा ॥
 की वह बीज रहा मति केरा । जेहि छाये बिछुन दुख पैरा ॥

यह सरीर पिंजर मो, रहत दुखारी प्रान ।

चाहत ऊडै तोरि कै, जाइ पहिल अस्थान ॥४॥

सुनत सुवा दुख राजा रोवा । रक्त आसु गुजा सहि पोवा ॥
 छै सारङ्गी गीत निसारा । उतरन ठाठ अहै ससारा ॥
 पथिक अहै हमारेो नाऊ । पिता पीठ है उतरन ठाऊ ॥
 मात उदर पुन है थिर धाना । पुन थिर ठाठ जगत हम जाना ॥
 पुन माटी मो लेख बसेरा । फेर करब परलौ दिस केरा ॥

पुनि जस करनी हो रही, तैसो पाइय पास ।

अब चाहत हो निस दिन, प्रान प्रिया को पास ॥५॥

बोला सुवा परान मरेला । बन्द आप केहि कारन देला ॥
 जग के बन्द परै सो कोई । जाहि जगत को धन्या होई ॥
 कहिये आप प्रीतमा को है । मन के बीच उर बसी जो है ॥
 कुवर सुवा कह प्रेमी पावा । प्रेम बिधा की कथा सुनावा ॥
 बिनती कीन्ह सुवा तेहि माना । भयेउ परान परान पराना ॥

प्रेमी पाइ सुवा कहं, राज कुवर गुन रास ।

सहित सँदेस पठायेउ, इन्द्रावति के पास ॥६॥

आगे मालन कह मुच भयेऊ । मधुकर फुलवारी नजि गयेऊ ॥
 व्याकुल भयेउ भँवर नित थारी । बिनु अलि का मालत का थारी ॥
 काटै पलपल दीरघ सामू । डारै नैन रक्त की आसू ॥
 बिरह ठपाल कटेउ घन परी । को बिनु मित्र पिपायै जरी ॥

कहै कहा गा प्रेम पियारा । जा सनेह मद मन मतवारा ॥

मैं अचेन नहि जानेउं, केहि दिस गा रम सोइ ।

कौन करम अब कीजे, जातैं बस में होई ॥७॥

इन्द्रावति व्याकुल जेहि ठाई । दरसन लागि सखी हुई आई ॥

रूप गरबता एक मयानी । दूसर प्रेम गरबता जानी ॥

धन के मन चिन्ता अधिकाई । मन दुख रूप गरबता पाई ॥

कहा भलो दाया बच कहना । चिन्ता बीच न एना रहना ॥

गँदा सोई जगत में भीतै । जेहि आनन्द बीच दिन बीतै ॥

रानी के मन चिन्ता, ब्रुझत हृद हमार ।

चिन्ता मरम पियारी, आपत बदन तोहार ॥८॥

हा मन चिन्ता ब्रुझेउ सखी । मानस मरम भलो तुन लखी ॥

सचर एक दिष्ट मोहि आई । सीर न केस चाह अधिकाई ॥

खरग धार से सचर चोखो । दामिनि मम सतरहि निदोखी ॥

कोऊ पवन कोऊ जस बानू । सतरैं मिलै सुखद अस्थानू ॥

कोउ चीटा सम चले न पारैं । गिरहि कुहमो जाहि पतारैं ॥

देखि पन्थ डर मानेउं, तापर धरेउं न पाव ।

खरग धार सम सचर, करै न पद में घाय ॥९॥

रूप गरबता मुनि चुप रहो । हनि के प्रेम गरबता कही ॥

प्रेम पन्थ है कठिन पियारी । चोखी खरग चाह अधिकारी ॥

होइ सुखी निबहा जो कोई । दरसन सहित मरग में होई ॥

तुम्है प्रेम है जाको रानी । तेहि नित चिन्ता हिये समानी ॥

पन्थ एक अस अलख बनावै । सब कोऊ तेहि करर जाई ॥

चिन्ता करहु न रानी, दया करै करतार ।

होइ प्रेम को प्यारी, एक ठाउँ एक बार ॥१०॥

लिहें सँदेस प्रान गा तहा । व्याकुल मन इन्द्रावति जहा ॥
 देखि लखीली की लखि सुवा । जित से प्रेम पीजरे हुआ ॥
 जब इन्द्रावति नामिक देखा । लाजवन्त सा सुवा सरेखा ॥
 देखि सुवा अनचीन्हा नियरें । भयेउ अचम्भा धन के हियरें ॥
 जब न बड़ा पिझर मो डारा । सुन्दर पच्छी होत पिपारा ॥

दयावन्ति वह रानी, दया सुवा पर कीन्ह ।

सुवा लाग पिंजर में, जल चारा भर दीन्ह ॥११॥

दीप सिखा ऐसी वह बारी । साफ होत घर दीपक बारी ॥
 रहा रात बरखा तितु केरी । लिहेन पतंग दीप नहँ चरी ॥
 जरि पतंग दल बहुते सुवा । चितै दीप दिस घोला सुवा ॥
 धरिये दीप गरब मन धोरा । यह जीवन धोरा है तोरा ॥
 जा पल आई पूगै आई । बहै पवन एक देख बुझाई ॥

दीपक दोही जरत हैं, पुरै कामना देहु ।

निस भर के जीवन उपर, काहे हत्या लेहु ॥१२॥

ऊप पियूष समा मुखवानी । सुनि रहसी इन्द्रावति रानी ॥
 लीन्ह उतारि से पिझार रेवा । कहा नियर ले अरे परेवा ॥
 आन बुद्ध से भयेउ पिपारे । न तो एक मुठि पख तुम्हारे ॥
 बुद्ध भान तोहि घट मो चवा । हँसि मानुष हँसिका जो सुवा ॥
 मनि पूंजी जो तुम्है न होती । होतेहु पछछो पशु की मोती ॥

तुम अनचीन्ह परेवा, ना हम पाला तोहिं ।

केहि हित आइ धरायेउ, तौन सुनावहु मोहिं ॥१३॥

सुवा समस्त सँदेस सुनावा । इन्द्रावति मन पावक लावा ॥
 प्रीतम कारन करुना कीन्हा । अम दुख ता कह करता दीन्हा ॥
 कैसे रहा मात को हीया । जैसे तनु बिलगि जेइ कीया ॥

किस पिता को रहा करेला । जो अस पुत्र विदेसहि भेजा ॥
 है जिउ चाह पियारा वोही । मन्दिर बन्द सदन भा मोही ॥
 हम धन के नित रोवत, आंसु सागर धाढ ।

धन आसु जल लै चढेउ, परखेउ मास असाढ़ ॥१४॥

सात भई इन्द्रावति छाती । रातहि लिखा कुजर कहँ पाती ॥
 सुखी न जानेउ मोहि अनुरागी । है उद्वेग व्याध मोहि लागी ॥
 गा घिघेय यह जीउ हमारा । बन्द तोहार बन्द मो हारा ॥
 है एक मानुष मित्र पिता को । क्रीपा राय नाम है ताको ॥
 सुध तोहार किरपा जो पावै । तो दयाल होइ बन्द छोडावै ॥

रोवत आंसु रक्त को, इन्द्रावति छबिरास ।

पाती थांधी सुवा के, भेजा प्रीतम पास ॥१५॥

प्रान सुवा पाती लै आयेउ । प्रान अहार सनेही, पायेउ ॥
 रहसा हिये प्रेम का चेरा । दरसन पायेउ पाती केरा ॥
 पाती दरसन पाय नरेसू । गयेउ ध्यान दरसन के देसू ॥
 खेलित नौरुहु सुक उडि गयेऊ । दगसो छिपेउ दुर्ग मो भयेऊ ॥
 बुद्ध सेन कहँ कुबर पठावा । किरपा राय निकट बलि आवा ॥

रहा अकेला बन्द मो, हित सारंगी हाथ ।

प्रेम प्रान प्यारी को, रहा कुजर के साथ ॥१६॥

धन नैहर को नगर पियारा । धन नैहर को निर्मल तारा ॥
 धन प्यारी जो नारा जाई । रहमि सखिन के सग नहाई ॥
 धन सनेह प्यारी अलबेली । जा सग खेलै सखी सहेली ॥
 धनमो जा कह आगम मूफा । खेलत मो सासुर कह बूफा ॥
 धन जो सासुर बलबो जाना । प्रीतम प्रेम पन्य पडिचाना ॥

धन जेहि सोच अगम का, खेलन रहै भुलान ।

आगम की चिन्ता सो, पावै लाभ निदान ॥१७॥

[१२] नहान खण्ड ।

इन्द्रावति मन प्रेम पियारा । पहुँचा आइ तीज तेवहारा ॥
 रहिल बाहा इन्द्रावति प्यारी । आइन रात दीप की धारी ॥
 होइ कष्ट मन रहा समाना । पै आनन्द सखी नित माना ॥
 कहेनि सहेलिन है डर मानू । मन तारा चलि करहि नहानू ॥
 रतन हितू जन के यस सई । सखिन साथ मन तारा गई ॥

केस सुगन्धित खोलि कै, राखि चीर सब तीर ।

पहिरि नहान दुकुलसकल, कीन्हा सजल सरीर ॥ १ ॥

अब जूरा इन्द्रावति छोरा । भयेउ घटा मो चाद अजोरा ॥
 पैठिहु जब जल भीतर रानी । पानिय पायेउ तारा पानी ॥
 झुठनी भूलेहु करत नहानू । लहकि चहेउ चुम्बै अधरानू ॥
 छलि नय मोती की अमलाई । सुक उपमा आप लजाई ॥
 मनु तारा भा गगन समानू । भयेउ नयक सभा वह प्रानू ॥

सुरज उझा आकासही, चन्द्र उआ जल मांह ।

कुमुद तामरस फूले, दोउ मित्र के पाह ॥ २ ॥

कहा रतन से एक सहेली । बरनि न पारो तोहि अलबेली ॥
 केस कस्तुरी हिँदै फादू । अहै लिखाट अजोरा चादू ॥
 अहै भिर्कुटो धनुक समानू । है बरुनी जिसनू के धानू ॥
 नैन सलोन जगत मन हरा । करन सीप मोती से भरा ॥
 नासिक मनहु कीर बैठो है । धरुक अकार कछा निवि कैही ॥

चिबुक कृप को पानी, चाहत कीर घरान ।

फूल गुलाब कपोल है, तिल है अबर समान ॥ ३ ॥

सीरन छाल अबर रतनारा । दमन पात मोती को हारा ॥

मन मेरो लालहि चित धरा । जाइ चिबुक गाढा मो परा ॥
 रेखा एक ग्रीवँ मो सोहै । का बरनो सोभा मन मोहै ॥
 निर्मल वदन आरसी छाजै । गल कचन को डाही राजै ॥
 अमल कनक सो भुजा बनावा । सुन्दर हाथ कमल मन भावा ॥

यह सामै हो रानी, जल औ मुख रवि तोर ।

पाइ होऊ कर वारिज, बिकस चलै मुख बोर ॥४॥

चरन धीर दुइ मनमय को है । छबि उपवन दुइ श्रीफल सोहैं ॥
 नाहीं नाही चुप यह जानहु । बटा जमल जोत के मानहु ॥
 का बरनो रोमावलि हेरी । सेहै नदन बाहनी करी ॥
 पातर लक केस की नाइ । नाही सो सिरजा जग साई ॥
 जय चरन सो आधम्भो है । रम्भा खम्भ कमल पर सोहै ॥

मानहु खम्भा रूप के, जुगल जंघ है तोर ।

चरन बखान न कैसकों, नित परसै चित मोर ॥५॥

सुन्दरता को लच्छन जेते । प्यारी चेरे तेरे तेते ॥
 लट कुतल अति स्यामल आहि । भौह स्याम जेहि इन्द्र सराहै ॥
 स्याम अधिक लोचन सँवराई । स्यामल बरुनी जिष्णु डेराई ॥
 ललित अधर औ रसना तोरे । अँगुली सीस ललित रंग बोरै ॥
 ललित कपोल गुलाब लजाही । जग मन मधुकर समा लोभाही ॥

तरवा और ह्योरी, आनन रसना छोट ।

गल कुतल दिगं लाव है, बानन मिलै न चोट ॥६॥

दसन सेत औ नैन सेताई । अधिक सेत कछु बरनि न जाई ॥
 गोल सीस औ वदन तुम्हारा । गल एही बिधि गोल सवारा ॥
 ऊच नासिका ऊची भौहैं । बरुनी ऊच घात सम सौहैं ॥
 करन छिद्र पायेउ सकराई । साकर नासिक छिद्र सोहाराई ॥

आहै साकरि नाभ तुम्हारी । तोहि बिधि सौ पै सानि संवारी ॥

एतो सुघराई पर, रंचिक गरब न तोहि ।

सुन्दर सील तेहारो, लागत नीको मोहि ॥८॥

निज बखान इन्द्रावति पाए । रही लजाइ सीस औधाए ॥

कहा बखान करहु का मेरा । है मनाऊ जीवन जग केरा ॥

का अतिमान देह पर करछ । एक दिन होइ छार होइ परछ ॥

गरब सखी सब ताकहु छाजा । जो त्रैलोक्य बीच है राजा ॥

जे निधनी को सग न चाहा । भयेउ न तेन्है अगम सो लाहा ॥

परगट रङ्ग देह को, देखि न गरबै कोइ ।

आवै एक देवस अस, छार कलेवर होइ ॥९॥

बोलित राजदीप की नारी । आवहु जलमो रचैं धमारी ॥

जब लग सीस पिता को छाहा । खेलहि कोठ करहि जगमाहा ॥

जब चल जाहि कत के देसू । कैसो कैसो सहैं कलेसू ॥

नइहर देस कहा फिर आवन । कहैं यह पन्थ चले यह पावन ॥

सो गुन एकउ हाथ न आया । जासो होई प्रीतन दाया ॥

जानो नहि पिय प्यारा, राखै कौने मान ।

एकौ गुन नहि सीखा, हम बाउर अज्ञान ॥१०॥

रानी कहा भेद अब कहना । केहि गुन होइ कन्त सो लहना ॥

एक कहा सेवा नित कीन्हैउ । बित मूरत सम पिय पर दीन्हैउ ॥

एक कहा लहना तब होई । पिय जो कहै करै धन सोई ॥

एक कहा नित करत सिगारा । चाहै धन कह कन्त पियारा ॥

एक कहा जो रूघर होई । पावै लाभ कन्त सो सोई ॥

इन्द्रावति प्यारी कहेउ, तारुहं चाहै पीउ ।

जो पिय की सेवा किहैं, गरब न राखै जोउ ॥११॥

समुक्त बन्धुमो प्रीतम प्यारा । इन्द्रावति अम्बुज जल द्वारा ॥
 नहि जानो केहि भाते सोई । दिन औ रात बितावत होई ॥
 अरे जित दाया तोहि नाही । तेरो जीउ परेउ बँद माहो ॥
 जलनो तनी ठाढ़ तवानी । समिन सान्त रसमो पहिचानी ॥
 पूछै आगमपुर की भारी । सजल नयन केहिलागपियारी ॥

आन अनंद देवस है, अहै तीज तेवहार ।

केहि कारन चिन्ता मो, प्यारी जीउ तोहार ॥१२॥

सकल सखिनसो मरम छिपावा । आनहि भाति कि बात सुनावा ॥
 यह दिन समुक्त सखी में रोई । जा दिन नइहर बिछुरन होई ॥
 बिछुरातु तुम सब सखी सहेली । सब अलबेलि रूप अलबेली ॥
 मिलैं करा तुम समा पियारी । कहा अलबेल कहा फुलवारी ॥
 रहै न सासुर आदर मेरा । सासुर लोग करै नक तोरा ॥

सो दिन समुझि परेसों, जल महं ठाढ़ तगाउ ।

नहिं जानों कस होइ है, हम कह सासुर ठाँउ ॥१३॥

रग न फीको करिये जी को । पी को सग पियारी नीको ॥
 तब लग नइहर देन पियारा । जब लग मूरखता को पारा ॥
 जगही सुलै सेमुखी नैना । सासुर सोच बढै दिन रैना ॥
 सासुर देस मिलै सब प्यारी । हितू तहाग राग फुलवारी ॥
 पीठ अनन्द मूल जय पावा । सब सुख राज हाथ मो आवा ॥

तुम का आपुहि को डरहु, है हमहु कहैं त्रास ।

पै सासुर कबिलास है, रहैं जो प्रीतम पास ॥१४॥

खेले लागिन तारा माहा । कोउ धरि काध कोऊ धरिवाहा ॥
 सुन्दरता सागर वह नारी । मन तारा मो रचा धमारी ॥
 छै जल मुख के ऊपर भारै । नरम फलोळ देहि जब हारैं ॥

आहैं साफरि नाभ तुम्हारी । तोहि विधि सौ पै सानि सवारी ॥

एतो सुघराई पर, रंचिक गरव न तोहि ।

सुन्दर सील तेहारो, लागत नीको मोहि ॥८॥

निज घरान इन्द्रावति पाए । रही लनाइ सीस औधाए ॥

कहा घरान करहु का मेरा । है मनाक जीवन जग केरा ॥

का अभिमान देह पर करत । एक दिन होइ छार होइ परत ॥

गरव सखी सख ताकह छाजा । जो त्रैओक धीव है राजा ॥

जे निधनी को सग न चाहा । भयेउ न तेन्है भगन सो लाहा ॥

परगट रङ्ग देह को, देखि न गरवै कोइ ।

आवै एक देवस अस, छार कलेवर होइ ॥९॥

बोलिन राजदीप की नारी । आवहु जलमो रबैं धमारी ॥

जब लग सीस पिता को लाहा । खेलहि कोउ करहि जगमाहा ॥

जय बल जाहि कत के देखू । कैसो कैसो सहैं कलेमू ॥

नइहर देस कहा फिर आवन । कहैं यह पन्थ बलै यह पावन ॥

सो गुन एकउ हाथ न आया । जासो होई प्रीतन दाया ॥

जानों नहिं पिय प्यारा, राखै कौने मान ।

एकौ गुन नहिं सीखा, हम बाउर अज्ञान ॥१०॥

रानी कहा भेद जब कहना । केहि गुन होइ कन्त सो लहना ॥

एक कहा सेवा नित कीन्हैउ । चित भूरत सम पिय पर दीन्हैउ ॥

एक कहा लहना तब होई । पिय जो कहै करै धन सोई ॥

एक कहा नित करत सिगारा । चाहै धन कह कन्त पियारा ॥

एक कहा जो रूधर होई । पावै लाभ कन्त सो सोई ॥

इन्द्रावति प्यारी कहेउ, ताकहं चाहै पीउ ।

जो पिय की संवा किहैं, गरव न राखै जोउ ॥११॥

समुझ यन्दमो प्रीतम प्यारा । इन्द्रावति अम्बुज जल द्वारा ॥
 नहि जानो केहि भाते सोई । दिन औ रात यिनायत होइ ॥
 अरे जिय दाया तोहि नाही । तेरो जीउ परेउ वैद माहीं ॥
 जलनो तानी ठाढ़ नयानी । सखिन सान्त रसमो पहिचानी ॥
 पूछे आगमपुर की घारी । सजल नयन केहिछागपियारी ॥

आन अनंद देवस है, अहै तीज तेवहार ।

केहि कारन चिन्ता मो, प्यारी जीउ तोहार ॥१२॥

सकल सखिनमो मरन छिपावा । आनहि भाति कि यात सुनावा ॥
 यह दिन समुझ मखी में रोई । जा दिन नइहर विपुरन होई ॥
 विपुरहु तुन सब सखी सहेली । सब अलबेलि रूप अलबेली ॥
 मिलैं कहा तुन सना पियारी । कहा अलबेल कहा फुलवारी ॥
 रहै न सासुर आदर मोरा । सासुर नोग करै नक तोरा ॥

सो दिन समुझि परेसो, जल मह ठाढ़ तनाउं ।

नहिं जानो कस होइ है, हम कर सासुर ठाउ ॥१३॥

रग न फीको फरिमे जी को । पी को सग पियारी नीको ॥
 तब लग नइहर देन पियारा । जग लग मूरखता को पारा ॥
 जयहीं सुले मेमुगी नैना । सासुर सोच बढे दिन रैना ॥
 सासुर देस मिले सब प्यारी । हितू तहाग राग फुलवारी ॥
 पीउ अनन्द मृग जय पावा । सब सुख राज हाथ मो आवा ॥

तुम का थापुहि को डरहु, है हमहु कहैं आस ।

पै सासुर कबिलास है, रहैं जो प्रीतम पास ॥१४॥

सेले छगिन तारा माहा । कोउ धरि काध कोऊ धरिधाहा ॥
 सुन्दरता सागर यह नारी । मर्न तारा मो रचा धमारी ॥
 ले जल मुख के ऊपर मारैं । नरम फलोउ देहि जय हारैं ॥

रानी साय कहा एक नारी । गहिरें पाव न धरहु पियारी ॥
जो गहिरें पग राखइ कोई । नीर सीस तें ऊपर होई ॥

गहिर बहुत है आगें, डूवि मरै जनि कोई ।

न ना खेल कोउ मो, महा दन्द दुख होइ ॥१५॥

मुनि यह बात सरी एक रोई । आसु गुलक जल ऊपर होई ॥
पूछें और आसु कस डारे । खेल के बीच अनन्द नेवारे ॥
उतर दीन्ह सासुर मगु ठाक । है सागर भी सागर नाक ॥
होइ है जा दिन गवन हमारा । नहि जानौ किन उतरउ पारा ॥
यह नइहर तारा है जाना । जेहि आगे पगु धरत डेराना ॥

वह न जान कस होइ है, गहिर गम्हीर अथाह ।

इहै समुझि मै रोइउं, केहि बिधि होइ निवाह ॥१६॥

मुनि सब राजदीप की घारी । तजि आनंद समुझा समुहारी ॥
आगम सोच कीन्ह सब कोई । सासुर पन्थ बीच कस होई ॥
बोलिन फेर सोच यह काहै । प्रोतन दाया पथ निबाहै ॥
होइ जलधि तो खेवक लेई । धन कह जलधि पार के देई ॥
जा सग व्याह होत जग माहा । पन्थ निवाहत सो धरि बाहा ॥

जनम मघाती होत सो, जाके संग बियाह ।

जैस परै तस अंगवै, धन को करै निवाह ॥१७॥

कै नहान सब बाहेर आई । निर्मल अग परी की नाई ॥
छटकी लट इन्द्रावति केरी । दोक दिस तें मुख कह घेरी ॥
मुख लटसो सोही वह रामा । एक चन्द्रमा दृढ़ त्रिजामा ॥
छट कपोल पर सोही कैतें । धीठा नाग बिल पर जैसैं ॥
सोन बिनाघट दुकुल रगीला । कीन्हा अङ्गु सो परगट लीला ॥

कै नहान घर कहं चली, वै सब कनक सरीर ।

उनकी निर्मलताइ सों, भा निर्मल मन नीर ॥१८॥

मन तारा केती रहि रानी । दिउरी एक देखि धियकानी ॥
 प्राण घाटिका की वह स्यामा । पूछा कवन सती यह ठामा ॥
 सखियन कहा सती यह ठाक । रानी महा सती है नाक ॥
 तब की बात हमें सुनि परी । अपने कन्त लाग धन जरी ॥
 जस तोहार तस ता गल नीका । सात तमोल देखावै पीका ॥

अब धन जरि कै छारमै, रहे न एकौ चीन्ह ।

दिउरी साखी करत है, अगिन छार तेहि कीन्ह ॥१९॥

इन्द्रावति कहना मै रोई । एक दिन छार होइ सब कोई ॥
 दिउरी के समीप होइ कहेऊ । हहु कैसेा यह रानी रहेऊ ॥
 हहु कस रहा चरन औ हाथा । कैसेा रहा ग्रीउ औ नाथा ॥
 हहु कस रही चाल नारी की । दयावन्ति की मानिनि जी की ॥
 कहा गई धन मिले नहेरे । है ता जित दिउरी के नेरे ॥

मन तेवान कै ठाढी, रही घरी भर आप ।

हिर्द सात रस डूबा, बुझि जगत कहं स्वाप ॥२०॥

इन्द्रावति जय ध्यान लगावा । सद्य एक एक दिश ते आवा ॥
 मैं का रहित रहैं ग्रहुतेरी । जिनकी रही अपलरा चेरी ॥
 सोऊ जगत छाहि कै गई । मिलि धरती मो नाटी भई ॥
 इहा न लहत सिगारी काया । लहत न गरब लहत है दायरा ॥
 लहत न काया सुन्दरताई । लहत पुन्य मन की निर्मलाई ॥

सद्य पाइ इन्द्रावति, अधिकौ रही तधाइ ।

चिन्ता बहुतै कोन्हा, अपने मन्दिर आइ ॥२१॥

है मैं पाप भरी जग माहीं । आस मुकुन की है किछु नाहीं ॥
 हे मोहि धीच दोष जह ताई । हरत करै कैसेा जग साई ॥
 साहस देत परान हमारा । अहै रसूल निवाहन हारा ॥

निस दिन सुमिरु मोहम्मद नाक । जासो मिलै सरग मो ठाक ॥
करता तोहि मोहम्मदि कीन्हा । माय सुभाग अस तोहि दीन्हा ॥

ना करु सोच अगम को, राखु हिंदै में आस ।

जाके दीन बीच तैं, सो देइ है सुख वास ॥२२॥

अरे प्रीतम तैं मन हरा । अहो वियोग बन्द मो परा ॥
आइ बन्द सो मोहि छोडावहु । देऊ जगत भलो फल पावहु ॥
मोहि पाछें बैरी बहुतेरे । तेरे सेवक नाथी मेरे ॥
सरा काढि बैरी कह नारहु । बन्द कूप ते मोहि निसारहु ॥
अलख सवारा तुम कह बली । बलै जगत सौ कीरत भली ॥

दूसर बन्द न भावत, जहां प्रेम को बन्द ।

जगत बन्द दुखदायक, प्रेम बन्द आनन्द ॥२३॥



[१३] जुद्ध खण्ड ।

बुहुसेन क्रीपा कह सेवा । जैसे मानुष सेवै देवा ॥
राज कुंवर को बन्द सुनाजा । सुनि क्रीपा क्रीपा पर आवा ॥
तब सहाय जगपति सो भाग । सध पायेव कछु एऊ न खाग ॥
क्रीपा चला कटक लै भारी । गोहन सुभट चरो बलधारी ॥
पानहु दीन्ह समुद्र हलोरा । लहर मनुज तम्बेरम घोरा ॥

तम्बेरम दल सोरै, कज्जल गिर के रूप ।

रहेउ अचल कज्जल गिर, ताहि चलायेउ भूप ॥१॥

फहत न पारउ तुरै यवाम्र । रहे चलत मह पवन समानू ॥
औ पिराय के सामे माही । माटी चाह सो अधिक पिराहीं ॥

नीचे जल सम पाव सठावैं । अग्नि समा ऊपर कह धावैं ॥
 धाजी सकल पवन के जाये । मानहु चेत भेस धर आवे ॥
 वै सवार है पर केहि मानन । मनहु पवन ऊपर पठवानन ॥

यह समीर तेन आगें, चलत थकित होइ जाइ ।

आगें वै पगु राखहीं, पाछे पवन थिराइ ॥२॥

क्रीपा आवागढ़ नियराया । आया पति दुर्जन सुधि पावा ॥
 गढ़ भारेउ औ कटक बढोरा । धरेनि अलङ्ग वीर बहुभोरा ॥
 तिस्र कोप सहायक आवेउ । आवेउ गरब अधिक बल पायेउ ॥
 गढ़ से छुटन लागेउ गोला । डोला सात अकासहि डोला ॥
 क्रीपा दिस छुटत अरि चोटा । भयेउ जगत करता की चोटा ॥

याजहिं बाला संजुगी, चहु दिस परेउ पुकार ।

चार मास तहँ बीता, होत सत्रु से मार ॥३॥

जो करतार पन्ध पर झूका । ताकह चिरझीत हम झूका ॥
 करसा मगु पर जे रन लायेउ । ताहि सहाय गगन से आवेउ ॥
 आवेउ भक्तवासी को सैना । दीख न पा । ता कह नैना ॥
 करता की सेवा के बेरा । होइ जहा हर दुर्जन केरा ॥
 सुनिरन सेवा आधे करही । आधे लोग सत्रु सग लहहीं ॥

धन जो सिर्जनहार मगु, गहि कै राखेउ पाव ।

पाव न दारा जुह से, आय उरद मो धाव ॥४॥

गढ़ मो गरब राय मुख खोला । गरब बचन दुर्जन से बोला ॥
 जैसे जगपति तस तुम राजा । गढ़ मो निसरि जुहि तेहि छाजा ॥
 एके एक करहि मिलि झूका । जाय सुभट जन को गुन झूका ॥
 तब दुर्जन गढ़ से निसराना । हलकी रज तिनिरार छपाना ॥
 'अदि मैदान कोप मा ठाढा' । छमा खरग यह दीसे काढा ॥

भयेउ खेत के ऊपर, सीधै सीध भिडाव ।

आइ सरीरन मंचरेउ, काहे करसो धाव ॥५॥

सुमिरि हिये करता कर नाक । मारा छमा कोप सिर ठाक ॥
 जय यह कोप गिरा गा मारा । आयेत मदनसिंह धरियारा ॥
 धरम राय यह दिसते धायेत । मदनसिघकहवाधिलिआयेत ॥
 मदन विमद होइ सेवक भायेत । आपा सुरा उतरि तेहि गायेऊ ॥
 दुर्जन कटक सहित तय धाया । अतरन रक्त समुद्र बहाया ॥

एकै भये दोऊ दल, जमल जलधि मैं एक ।

कठिन परगटेउ संजुग, मन सो गयेउ निवेक ॥६॥

भयेउ घटा ढालन सो कारी । खरगन भये धीज बनकारी ॥
 गेंदा सीत खरग चौगानू । खेलहि वीरहि चढि मैदानू ॥
 हाल आपनो आपनो चाहैं । जरि को शस्त्र चलाव सराहैं ॥
 भाला खरग हनै सब कोहैं । घोहन खरग ठनाठन होहैं ॥
 गगन खरग सो ठन ठन गयेउ । हिनहिनभौ धुन हन हन भयेउ ॥

बोनई घटा धूर सों, दिन मनि रहा छिपाय ।

तहां महाभारथ भा, सबद परेउ हू राय ॥७॥

साहस राय गयन्द मरीरा । भौ मन सिंह धरम रन वीरा ॥
 खरग हनै जाके उपराही । विनु बिलनैं सो बाबै नाही ॥
 कोउ भये घायल कोउ मारे । भाला खरग सुरा मतवारे ॥
 लुलाधान सो भयेउ निखगू । भयेउ निखग वान को अगू ॥
 बढेउ कमठ कह दाह कराहू । चकाचाक भा बाधक हाहू ॥

जुझ करत दोऊ कटक, थाके रहे अघाय ।

दुर्जन रिपु मारा परा, ता दल गयेउ पराय ॥८॥

क्रीपा जय दुर्जन कह भारा । जाइ के बद सो कुवर निसारा ॥
 कुवर कहा क्रीपा जस लीजे । जलज मिधु दिस गवन करीजे ॥
 क्रीपा कुंवर सहित गा तहा । रहा समुद्र गुलिक को जहा ॥

कहा यहूत राजा जित दीन्हा । काहुअ मोती हाथ न कीन्हा ॥
यहुत महीप भये मर जीया । मोती काटै नित जित दीया ॥

दीन्ह कुवर कहँ कीपा, मोती ठउर बताइ ।

औ खेवक हंकरायेउ, राहहिं दीन्ह चिन्हाइ ॥६॥

राजा जगपति यह सुधि पाया । मरमी जन से मरम जनाया ॥
एक मनुष राजा से कहा । ना जानहि जोगी कस अहा ॥
राजन ऊपर परन तुम्हारा । नाहीं सबै निसारन हारा ॥
यह मोती तेहि काढ्य छाया । राजा पुत्र होइ जो राजा ॥
धरजि पठावहु घेर न कीजे । जात खोजि कै आछा दीजे ॥

भायेउ बात निरप कहँ, भेजा तुरत बसीठ ।

फेरि लिआई कुवर कह, दीन्ह जलज दिस पीठ ॥१०॥

बैठा धिळै तरैं अनुागी । चिन्ता कयन हुतासन लागी ॥
कहै कवन उपकार बनावत । जार्ते प्रान बख्शना पावत ॥
जावक होउ होइ दुख भेटत । तो यह कमलधरन कह भेंटत ॥
कज्जल होउ नयन लगि रहत । होउ पवन छट ऊपर बहक ॥
होइ मोती बेसर सह परक । होइ प्रतियिम्बी छाया धरक ॥

जेहि प्रानप्यारी के, अमी भरे अधरान ।

ता पगु रज के ऊपर, वारेण आपन प्रान ॥११॥



[१४] मधुकर खण्ड ।

इन्द्रायति चिन्ता मह परी । रहै न यिनु चिन्ता एक घरी ॥
 आइ रैन तेहि बहुत सतावै । फल न सुपेती ऊपर पावै ॥
 कलगी गलगी जलगी काया । तेहि वियोग को पीर सताया ॥
 सखिन मता आयुस मो कीन्हा । सब मिलि कै ऐसे मत् छीन्हा ॥
 निस कह जहा रहै वह रानी । सदा सुनावहु एक कहानी ॥
 होइ बहोरै जीउ को, सुनत कहानी यात ।

चिन्ता जाय सरीर सो, नीद परै वहि रात ॥१॥

एक सखी निस होतहि आई । मधुरी बचन असीस सुनाई ॥
 कहा कहत है एक कहानी । सरधन है कै सुनिये रानी ॥
 बहुत बचन करतार पठावा । जेहि सुनिकै बहुतन मनु पावा ॥
 कहा बहुत जेन की मति फेरी । अहै कहानी आगेहि करी ॥
 अहै कहानी पै सुन रानी । है असुन सानी रस बानी ॥
 कहा कहानी कहिये, सुनो कान दै ताहि ।

जीउ बिरह सों तन महँ, उठत कराहि कराहि ॥२॥

मन रानी को पाय सयानी । धन सो लाग सो कहै कहानी ॥
 मोहनपूर रहा एक याक । तहा नहीपत मधुकर नाक ॥
 लस मधुकर रस रहै सोभाना । तैसें वह रस मह लपटाना ॥
 लग रस बीच परा जो कोई । आगन रस नहि पायहि सोई ॥
 रस पावै जो जेहि करतारा । दया दिए सो हिया उघारा ॥

मधुकर के मन्दिर में, रहै बहुत रनिवास ।

संघत करै भँवर सम, लय अम्बुज के पास ॥३॥

एक दिन राजा गयेउ अहेरें । देखा एक मिर्ग कह नेरें ॥
 मिर्ग चला मधुकर है हाका । मिर्ग पवन दहु रहै कहा का ॥
 चला मिर्ग के पाछे सोई । छुटा लोग ना पहुचा कोई ॥

जान जात एके बन मह परा । देखा विरल एक अति हरा ॥
 भयेव कुरङ्ग कुरङ्ग हेराना । तरिबर तरैं आइ पछनाना ॥
 जंचा तरवर देग्वि कै, और गम्हीरो छांह ।

सुख पायेउ दुख भूला, भा अनन्द मन माह ॥४॥

सीतल छाहा सो सुख पाई । पौढा मुहँ पर बसन बिछाई ॥
 ततिखन दुइ सुक आइ बईठे । घोले बचन आप मह नीठे ॥
 पूछा एक कुसल हो प्यारे । केहि घरती सुख वास तुम्हारे ॥
 जय सो हम तुम विखुरे होऊ । मिला न तुम्हैंसमा हित कोऊ ॥
 जेहि भेटेउ अपकारी पायेउ । तासो भागेउ प्रीत न लायेउ ॥

सुभ घेला यह सुभ देवस, दरसन मिला तोहार ।

समाचार आपन कहो, जीउ थिराय हमार ॥५॥

दूसर सुभा अघर कह खोला । समाचार की बानिय बोला ॥
 जा दिन छूटा सग तुम्हारा । जाइ परेउ एक विपिन मझार ॥
 तरिबर पर निचिन्त बईठेउ । छल पहरा को एक न डीठेउ ॥
 सब अजान न जानत कोई । गुप्त अन्तर पट सो का होई ॥
 जिनि यह कहौ करौ असिभारैं । दहु अस प्रगटै भोर अजोरैं ॥

मैं निचिन्त अपने मन, आइ एक चिरिमार ।

खोंचा मारि बझायउ, डारेउ धन्द मझार ॥६॥

ले मोहि प्रेम नगर के हाटा । बेचेवि बलिगा दूसर बाटा ॥
 परेउ रूप राजा घर माहीं । जहा दरब कछु खागा नाही ॥
 तेहि के घर सुन्दर एक बारी । तेहि की सुता सुन्दर सुकुमारी ॥
 अति सुगन्ध मालति की काया । अनुविधि सुगँध मिलाइबनाया ॥
 मोहि राजा मालति कह दीन्हा । बचनन सो सेवा मैं कीन्हा ॥

कीन्ह पियार बहुत मोहिं, दायावन्ती होइ ।

सेवा किहे पियारा, होइ अन्त सब कोइ ॥७॥

मालति रूप न यरनै पारव । केति कै अर्थ न चिन्त सँचारव ॥
 अवहीं तेहि सग भवर न लागा । निर्ग नयन लसि आनन भागा ॥
 मालति घाम सालती वासा । मालति पास मालनी पासा ॥
 जानहु मसि भुई पर अवतरा । पुहुमी पर उतरी अपलरा ॥
 है सुकुमार यहुत यह रानी । बोलन बानी अमृत सानी ॥

है मालती सुवासित, सुगन्ध भरे जनु अंग ।

ज्ञान भरी सुन्दर सखी, रहैं सदा तेहि संग ॥८॥

एक देवस धन रूप निधानू । निर्मल तारा गइल महानू ॥
 भूत मंदिर मो पिंजर मोरा । रेखा रहा मजारिय तौरा ॥
 बाचेउँ रिपु सो हियें डेरामा । पिंजर सो मैं मिसरि पराना ॥
 बड़ छुटे आनंद मैं पाया । अन्त पखेळ अहइ पराया ॥
 जेहि के छलें छुटा सुखवासू । तेहि बैरी कर का विसवासू ॥

अब धन धन फेरा करव, समुक्ति पिंजर को बंद ।

काहू कर सेवक नहीं, मन मो रहत अनंद ॥९॥

भुनि नधुकर मालति कर नाक । मा मालित नधुकर तेहि ठाक ॥
 उठि कै कहा बिहग पिपारे । घात न बान प्रेम कर नारे ॥
 तुम पहित बुधयन्त गरेवा । उतरहु आइ करउँ मैं सेवा ॥
 हहु नियरें पै करमो नाहीं । रहेठ समाइ सकल तन माहीं ॥
 आवहु सीस देउँ तेहि ठाक । तोहि छे चलहु अपाने गाक ॥

जिउ अस राखउँ तुम कहैं, घरउँ न पिंजर मोह ।

जल चारा आगें कै, रहौ जोरि दोउ बांह ॥१०॥

कहा सुवा तुम मानुष होहू । तुम धरती पर दारहु लोहू ॥
 आगें अथ मानुष नहि आवा । बहुतन औगुनता पर लावा ॥
 है मानुष निर्द हत्यारा । सकै अनुज कहैं जिव से मारा ॥

सात देह मानुष कर जारैं । सात नरक द्वारे महीं डारैं ॥
घाम जरै तब दूसर देहीं । मानुष बार बार दुख लेहि ॥

हो पंडित औ चातुर, कहां चलों तेहि सग ।

जिउ पंखी नहि पालै, पाले अंग बिहंग ॥११॥

तुम मोहि यह सत बात सुनावा । मानुष परसै ऐगुन आया ॥

पै मानुष युध के बरसाऊ । सकलो सिष्ट को जाना नाऊ ॥

मानुष पर दाता की दाया । सकलो सिष्ट को नाम सिखाया ॥

करता की नेवैं मानुष अहई । का जो दोष पाप मो रहई ॥

प्रेम नगर औ मालति बातै । केर सुनाउ चतुर महातै ॥

एक एक कै घरनहु, वह मालति की बात ।

सुनउ जीउ सरवन दै, हो पंडित मुखरात ॥१२॥

कहा मोहि प्रान समो जेइपाला । मन भातेहि की प्रीत को माला ॥

सरमी भयेवैं सदा कइ सेवा । तोहि बेरान से भापवैं सेवा ॥

सरवन सुनै जाग तेहि नाही । मूल न देखेसि देखेसि छाही ॥

नरक घोष बहुतन कहैं भरट्ट । मन राखहि पै धूक न करई ॥

नैना होइ न देखहि नैना । सरवन रखहि सुनहि नहि बैना ॥

वे सब पसु के मान है, बरु पसु चाह अचेत ।

जेहि के मन नहिं चेत है, तेहि को भेद न देत ॥१३॥

कहा कहा मेरो तुम भैंटा । नहि जानो का ऐगुन भैंटा ॥

बिनती एक करवैं कर जोरी । मानु दया सो बिनतिय मोरी ॥

मोर सदेम कान कै लीजै । प्रेम नगर कहैं गवन करीजे ॥

जायेहु जहैं वह मालति प्यारी । तासो भाखेहु विषा हमारी ॥

सपत तेहिक जेइ जनमा नाही । प्रेम हमार जनायउ वोही ॥

मोहनपुर महीं मधुकर, कहहु निरपै एक आह ।

बहुत बेयाकुल कीन्हा, प्रेम तेहारो ताह ॥१४॥

कहा तेहारो बिनती मानेवँ । मालति कर मधुकर तोहि जानेवँ ॥
 एकवार तोहि कारन जाऊ । घन से कहूँ तेहारे नाऊँ ॥
 आनक सपत दिहा नहिकाही । सपत भलो करता कर आही ॥
 बहुत सपत जो मानुष खाहीं । तैं जिन रहूँ तेहि अज्ञा जोहीं ॥
 कहौ नाम सुनि कै तोहि लोभा । बिनु देखे मूरत औ सोभा ॥

यह सब कहि उडिगा सुवा, मधुकर मन पछतान ।

पंखी सम चंचल है, काया बीच परान ॥१५॥

हेरत सरल लोग औ दासू । आए सथ मधुकर के पासू ॥
 लोग समेत निर्पे घर आएउ । मन भह प्रेम बसेरा पाएउ ॥
 परगट राज करै औ बोलै । गुप्त दिष्ट मालति पर खोलै ॥
 परगट सबके जाने भोगी । गुप्त भएउ मालति कर जोगी ॥
 परगट रहइ आपने गाऊ । गुप्त रहै मालति के ठाऊँ ॥

परगट सबसों बोलै, गुप्त जपै वह नाम ।

मन महीं रहै व्याकुल, हरिगा सुख बिसराम ॥१६॥

मालति रहा बहुत दुख देखा । जा दिन से गा सुवा सरेखा ॥
 कहै कहा वह पहित सुभा । कादहु हुआ जियत की मुभा ॥
 लूँछा पिंजर रहिगा रेवा । उडिगा प्यारा प्रान परेवा ॥
 जो पिंजर की भीतर बोलै । औ जानै यह पिंजर डोलै ॥
 सो चलिगा केहि धन ठहराना । रहा आपनो सपेव बिराना ॥

सुवा आनि को मेरवे, पिंजर देइ जियाइ ।

का औगुन दहु देखा, तजि के गयेउ पराइ ॥१७॥

सखिन सुभावहि सुवा पिपारा । ठहरा जय लग रहा तुम्हारा ॥
 उडि कै गा रहिगा पछनावा । कहा पिरै जय भयेउ परावा ॥
 जो पछताने आयइ हाथा । हम पछताहिं सकल तुम साथी ॥

पिंजर देह रहा तेहि भारी । हलुक देह उहि लीन्हैसि प्यारी॥
उहि कै पन करि भयेउ अहेरी । तेहि डर छूट मजारिन केरी ॥

पिंजर बोच रहा सुवा, चारा चिन्त मझार ।

अब ऐसे बन में गयेउ, सुख सो मिलै अहार ॥१८॥

दिन दस बीत सोच मो गयेऊ । सुवा जाइकै परगट भयेऊ ॥

मालति देखि जीव अनु पावा । प्रान मिलै कह आगेहुँ धावा ॥

कहा प्रान अस नियरें होहू । तोहि नित बहुत पिया मैं लोहू ॥

कहा सुवा बाधा मोहि दीजे । मोहि पिंजर के बीच न कीजे ॥

मैं धन बीच रहेउ जय भागा । नरक समा अब पिंजर लागा ॥

याचो दोन्हा मालती, सुवा नियर भा आइ ।

कण्ठ सुवा कहं लायेउ, प्रान पियारी धाइ ॥१९॥

कहा कुसल कहु प्यारे सुवा । तोहि नित आसु नैन सो सुवा ॥

कहा कवन औगुन मोहि लाने । जेहि नित छाड हमै तुम भागे ॥

केहि बन भीतर रहेउ बसेरा । कहा कहा, तुम कीन्हा केरा ॥

हुनि कै सुवा असीस सुनावा । देइ असीस सीस पुनि नावा ॥

तुम औगुन सो निर्मल प्यारी । औगुन भरी सरीर हमारी ॥

तुम तो निर्मल तारा, गइहु करै अस्नान ।

पिंजर धरा मैजारी, गा वह दूट निदान ॥२०॥

पिंजर दूटा मिला दुवारा । बाहर निकसि पख मैं, झारा ॥

रहत न भावा बैरी राधे । रिपुनित रहै घात सर साधे ॥

परोस जहा सत्रु को होई । तहा निचिन्त रहै का कोई ॥

जाइ परैउ ऐसे बन माहीं । खाग जहा धारा कर नाहीं ॥

हम तुम छुटि गर तेहि ठाक । इहा अहै हम तुम सख नाक ॥

आयेउँ दरसन कारने, औ राखउँ एक बात ।

सुनो मन्दिर होइ जय, बात कही तब जात ॥२१॥

मून मन्दिर तब मालति कीन्हा । सुवा सयान भेद तब दीन्हा ॥
 उहि उहि सब कानन सह भयेऊ । जौ सब तरिवर ऊपर गयेऊ ॥
 मिला एक दिन एक परेवा । मित्र रहा कीन्हा मोर सेवा ॥
 दोऊ एक बिछे पर गयेऊ । छाहा पाय सुखी मन भयेऊ ॥
 सुवा माथ मैं तुम्है बखाना । जस तोहार सब दोनहू जाना ॥

चिछे तरें एक मानुष, सुना सकल गुन तेरो ।

बिनु आज्ञा अब आगें, कहि न सकै मुख मोर ॥२२॥

कहा पियारे घात तुम्हारी । जीव देत है कहु बलिहारी ॥
 तुम पड़ित जौ पड़ित होई । अब सकु घात न भायै सोई ॥
 सिद्ध रूप तुम सुवा गेयानी । घात तोहार समीरस सामी ॥
 सिद्ध घात छाजा की कहई । का जौ चलटी वातें रहई ॥
 स्वामी कोकरा जौ मरि जाहीं । मिट कहै भल है भल साहीं ॥

आज्ञा का मांगत हौ, भापटु जौ मन होइ ।

मिलयो लूट तुम्हारे, मरम न राखै गोइ ॥२३॥

कहत घटान नाम गुन तेरो । सुनि कै यह मानुष भा चैरो ॥
 पड़ितनो घहुत कीट मोहि साया । नग सदेस को दीन्हा लाया ॥
 कहा जाई मालति के गाऊ । प्यारी राख कहैत मम नाऊ ॥
 मोहनपूर देस है मेरो । मैं मधुकर राजा हित तेरो ॥
 मोहि राजा कहैं प्रेम तुम्हारा । ठपाकुल कीन्ह सोच मो हारा ॥

एहि सँदेस तेही कहै, कुठ वसीठ पर नाहि ।

जो सँदेस ले आवहीं, पटुचार्यँ चलि जाहि ॥२४॥

यह सुनि कै मालति मुकुनारी । चुप होइ रही न घात निमारी ॥
 यिनती कीन्ह सुवा कह राखा । दीन्हा टाय बिछे कर साखा ॥
 पित्रर सीतर सुवा न आया । लाग रही एटा सुख पाया ॥

रहै सुवा फुलवारी माहा । जह फल फूल औ सीतल छाहा ॥
जस वैकुण्ठ बीच फल नियरें । तस नियरे अनदाना हियरें ॥
उडि बैठहि तेहि डार पर, जहां चलावै जीउ ।

मन काया के छौर महं सुख अनंद भै घीउ ॥२५॥

मालति मा पर मधुकर नाऊ । लिखिग देखि परै मन ठाऊ ॥
कवल समा मन प्य री केरा । होइ मधुकर मा मधुकर चेरा ॥
प्रेम फाद प्यारी मन परा । मधुकर मन मालति मनहारा ॥
मन सो का कह सुनिरै कोऊ । सुनिरै ता कह मन सो सोऊ ॥
कहा अलख सुनिरौ तुम मोही । सुनिरै सो सुनिरौ मे तोहीं ॥

रही सुगन्धित मालती, प्रेम भँवर तेहि कीन्ह ।

व्याकुल भई जोउ महं, भेद न काहू दीन्ह ॥२६॥

दुर्बल भइ जय मालति वारी । धाई धाई कहा बलिहारी ॥
कवन कलेस समान सरीरा । कहत सरीर सो आपन पीरा ॥
कहा कलेस न एकौ मोही । कवन कलेस सुनाउत तोही ॥
कहा भई दुर्बल तैं वारी । बिनु दुख दुर्बल होत न प्यारी ॥
हो री नात समा हे । तोरी । भोरी मरम न गोवहु गोरी ॥

जो दुख होई पिड मंह, सो मोसैं कहि देहु ।

धाइ करउँ उपकार सै, दुख कर औपद लेहु ॥२७॥

कहा सुवा वोही दिन जो आया । मोसे मधुकर नाउ सुनाया ॥
है जो एक देस मोहनपुर । मधुकर राय तहा जस सुर ॥
सुना सुनायेत तेहिक सदेसू । है तेहि कारन प्रेमी भेसू ॥
हों माता सुनि मधुकर नाऊ । मा मन मधुकर उडि कै जाऊ ॥
मोहि मालति कह मधुकर नेहा । कीन्हा मधुकर नेही देहा ॥

तुम माता दाया भरो, दाया ऊपर आउ ।

मोहि मालति कहं मधुकर, कै उपकार भ राउ ॥२८॥

सुनि धाई दायी पर आई । मालति सो चपकार सुनाई ॥
 सोपहु काज आपनो ताको । सिर्जनहार नाम है जाको ॥
 पुरुष पलुम को पालन द्वारा । है सो पुरवै काज तुम्हारा ॥
 सुमिरहु ताहि बिसारहु नाहीं । सुमिरन बडे अहै दिन माहीं ॥
 बहुरि सुया सो बिनती कीजे । बिनती के जित कर मह लीजे ॥

भेजहु तेहि मोहनपुर, मधुकर आनै आस ।

आनै प्रेम बढाइ कै, तेहि मालति के पास ॥२९॥

एक देवस मालति मति पागी । बिनती करै सुवा सो लागी ॥
 कोमल बात जीभ सो खोला । फाद भलो है कोमल बोला ॥
 कोमल बात कहै कह दाता । कहा अहै भल कोमल बाता ॥
 धरती ऊपर जीठ परावा । कोमल कहैं हाथ मह आवा ॥
 तुम है सुवा प्रान जस प्यारा । जैसे प्रेम बान तुम मारा ॥

तैसँ महि घायल कहैं, औपद फाहा देहु ।

लैआवहु मधुकर कहैं, यह पूरा जस लेहु ॥३०॥

सुवा कहा सुनु धारी भोरी । अहै सीस पर आज्ञा तोरी ॥
 मैं पखी वह मानुष आही । ननुप बसीठ ननुप दिस थाही ॥
 सो जेई कीन्हा जगत अजोरा । मानुष भेजा मानुष बोरा ॥
 मानुष मानुष बचन समूझै । सुवा सुवा की बातें बूझै ॥
 जो मोहनपुर देखेठ नाही । अकस जाठ भूल बन माहीं ॥

१ होइ साथ जो मानुष, जाउ मोहनपुर देस ।

दोऊ मिलि समुझावैं, आवै इहां नरेस ॥३१॥

दुई समुझावैं समुझावैं सोई । दुइ जन मिले बूत भल होई ॥
 जेहि बसीठ के जीठ डेराई । लीन्ह सहायक आयन भाई ॥
 गा तेति दिस जासे डर माना । भाषा साधी-बात सधाना ॥

दुइ मन एक होइ गिर तोरै । कटक बिदारत बदन न मोरै ॥

जेइ मन तोरा सोगा तोरा । मन तोरा कहि तोरा मोरा ॥

प्रेम नाम यनिजारा, वसै तुम्हारे गाउँ ।

ताके संग पठावहु, मोहनपुर कहं जाउँ ॥३२॥

माना घात मालती रानी । धाई साथ जनायेस जानी ॥

धाई गई प्रेम दिस धाई । बिनै सुनाई घात जनाई ॥

दीन दरब औ आसा दीन्हा । प्रेम सीस पर आज्ञा लीन्हा ॥

दरब करै सब कारज पूरा । उद्दित करै दरब जिनि सूरा ॥

जो न दरब को निर्मल करई । अगिन हास होइगल मो परई ॥

करता अपने पन्थ पर, दरब कहा है देइ ।

जो नहि देई सो एक दिन, लाख दरब सां लेइ ॥३३॥

सग लेखुवा प्रेम यनिजारा । मोहनपुर पन्थ पगु द्वारा ॥

अहे यनिज को उद्दम भलो । पे जो करै यनिज निर्मलो ॥

सिर्जनहार जाप को बेला । आवत तजै यनिज को खेला ॥

बेचब लेख कहा है भलो । अहे विद्याज नही निर्मलो ॥

सुन्दर रित करता कह देहू । यह जग मूल लाभ सग लेहू ॥

बिनु पद दरब जो आन को, जो कोउ अगमों खात ।

आनहु अगिन सो खात है, है यह साचो घात ॥३४॥

काटत पन्थ सुवा यनिजारा । पहुचे मोहनपुर सफारा ॥

मधुकर उहा वियाकुल हीर्ये । ध्यान रहै मालति पर दीर्ये ॥

बेकल बहुत भा मधुकर राजा । गा सब छूट राज को काजा ॥

सरन की कली फूल बिकसाना । बास पाय सब काहुअ जाना ॥

छपि ये प्रेम कस्तूरी दोऊ । अत बास पावै सब कोऊ ॥

लोगन बहुत बुझावा, फिरा न मधुकर प्रान ।

भयेउ प्रेम के बाढ़ें, बाउर भेस निदान ॥३५॥

सुवा प्रेम कह मरम सिरावा । बेचेहु हम कह जानि परावा ॥
 हाट चढाइ मोल कर भारी । ले न सकै बैठै मव हारी ॥
 तब राजा मधुकर मोहि लेई । भारी मोल बेगि तोहि देई ॥
 मित्र जो होइ सो मोल बढ़ावै । बैरी जन सै औगुन लावै ॥
 अति सुन्दर कह बैरी लोगू । बेचा चोरै पर धिनु जोगू ॥

मधुर बचत मै बोलऊँ, मधुकर लेइ निदान ।

रहि राजा के संग महं, करो हाथमो प्रान ॥३६॥

प्रेम जबै दूसर दिन जय पावा । लैकै सुवा हाट महँ आवा ॥
 हाट नगर मो भयेठ पुकारा । प्रेम नगर का है धनिगारा ॥
 बेचत है एक सुवा मरेखा । चैते पड़ित कीर न देखा ॥
 गाहक आये मोल उधारा । भारी मोल सुनत सब हारा ॥
 मधुकर प्रेमनगर कर नाक । सुनि आनन्दति भा मन ठाक ॥

आण्ड मधुकर हाट में, लीन सुवा कहं मोल ।

सुवा अघर कहं खोला, बोला कोमल बोल ॥३७॥

अनिमय विजर बीच परेवा । राखा मधुकर कीन्हा सेवा ॥
 भयेठ अहार सुवा की यातै । मधुकर राजा कह दिन रातै ॥
 एक दिन प्रेमहि पास हकारा । सुन सदन के बात निचारा ॥
 है सालति रानी वह देसा । रूप विहाय कला निधि प्रेसा ॥
 यह रानी कर सुनत बयानू । सुरत सनेही भयेठ परानू ॥

तुम आहु बहि नगर सो, ताकर कटौ चरमान ।

एक सुवा सो मैं सुना, उड़िगा सुवा निदान ॥३८॥

सुनि यह बात प्रेम सब हसा । हमन फूल मानहु महि रसा ॥
 जो एक मोल निरपे तुम छीन्हा । मोल मुलिक नग मानिक दीन्हा ॥
 येही सुवा मालति गुन कहा । अघ अनछीन्हु तुम सो होइ रहा ॥

सहइ सुधा है तुम नहि चीन्हा । पहित जान मोल तुम लीन्हा ॥
सुधा का पिंजर नियरें राखौ । तब रसाल बच को रस चाखौ ॥

सुनि रहसाना मयुर, पिंजर लीन्ह उतार ।

पूछा कुल कहा कुसल है, है जव कुसल तुहार ॥३९॥

पेस सुधा देक गुन गावा । ऐकै मुख होइ बात सुनावा ॥
हम मालति के भेजें आये । दरसन देखि बहुत मुख पाये ॥
मालति तुम्है रात दिन सँवारा । भा धन मन तोहि ऊपर सँवारा ॥
तुम कह आनै हमें पठावा । पेसहि निर्पे को ताहि जनावा ॥
यनिज हमार तुहों है राजा । अब यह देस गयन तोहि छाजा ॥
रहत चातकी होइ रही, चलि दरमन जल देहु ।

ना तो प्रान देइ धन, यह अपराध न लेहु ॥४०॥

सुनि मधुकर जानहु जित पावा । कहा तुम्हें मोहि लाग पठावा ॥
छाजत सीस अफास लगावत । सीस चरन कै तेहि दिस धायव ॥
अब लग रहेउ मरम नदमाहों । रही पन्थ की सुधि मो नाही ॥
तुम हुइ अगुवा चतुर सपाने । मिलेहु करत तेहि ओर पयाने ॥
है धन दिष्ट भाग को मोही । सुमिरन मोर चढे चित बोही ॥

रोवत दिन मोहि बीता, अब हँसि करउँ अनंद ।

सोइ रोवाइ हँसावै, जेहँ कीन्हा रवि चंद ॥४१॥

तजा राज कह मधुकर राजा । सकल समाज चलै को साजा ॥
पिंजर सो बाहिर भा सूजा । पेस आप मिलि अगुवा हुआ ॥
बहुत लोग राजा सङ्ग लागे । मानहु सोवत कै सब जागे ॥
सोवत है जग सह सब कोई । जव मरि जाहि जाग तब होई ॥
यह जीवन फह छोटा जानहु । जीवन बढो अगम पहिचानहु ॥

जस जियहु तैसें मरहु, उठहु मरहु जेहि भांत ।

जग बाहुत के ऊपर, कह दिहे है दांत ॥४२॥

बहुत देवस को करत पयाना । एक समुद्र आइ नियराना ॥
 चढ़े पोत ऊपर सब कोई । गाढ़ी पेन नगर मगु होई ॥
 बोहय बूढ़ बड़े सब कोऊ । सुवा उड़ा जनि बिछुड़न होऊ ॥
 जाको राखत सिर्जनद्वारा । जल सुखाई मगु लाइ उतारा ॥
 यह जनि जानहु नीर हुवावै । चाहै धरती बीच धसावै ॥

एक बार जलथल भवा, राखा चाहा जाहि ।

आगे कहिकै भेजेउ, नाव बनावै ताहि ॥४३॥

बड़े गरब कोप औ माया । भरमित और काम की काया ॥
 एक दिस बड़े बुढ़ औ बूझा । मधुकर पेन बड़े नहि सूझा ॥
 मन पछताइ सुवा गा तहा । चितवन पन्थ मालती जहा ॥
 मिछी कहा कहु कुसल पियारे । पन्थ निहारा नैन हनारे ॥
 कहा कुसल का बूढ़ी पोता । होस कुसल जो जन मन होता ॥

मधुकर आवत तेहि दिस, बड़ा सिन्धु के धार ।

बूढ़े सकल संघाती, कोउ न लाग गोहार ॥४४॥

सुनि यह बात मालती रानी । मन पछतानी सोच सयानी ॥
 धन लेखैं जनु परलै आई । यह परलै केहि दिसतैं धाई ॥
 काहें यह परलै परगटे । आर द्वाय परम्हा के छटे ॥
 की बिरच को एक दिन बीता । सोयेउ भै परलै की रीता ॥
 सहि निसरे वै हुइ बरियारा । जाकर अवध लिप्ता करतारा ॥

यीचहि देखहु परलै, धरती भगेउ असिष्ट ।

की मन मोर फिरा है, उलटि विलोकन दिष्ट ॥४५॥

सुवा बुझवै बूझहु रानी । जीवन हार न बूढ़े पानी ॥
 करे जो किछु करता कोई । अन्त काज वह सुन्दर होई ॥
 भेद लिपा तोहि कारन माहीं । सो जानहि हम जानहि माहीं ॥

जानेनी एक एक बालक मारा । औ एक नाव जलधि मो फारा ॥
साथी ताकर भेद न जाना । भेद रहा तेहि बीच छिपाना ॥

घर धीरज मन भीतरें, होइ जियत वह होइ ।

जो मति सो छूँछा अहै, छाडै धीरज सोई ॥४६॥

मालति कहा देहु तुम बोधू । मोहि पहरा पर आवत क्रीधू ॥
कहा करत पहरा कछु नाही । वह करता नाही जग माहीं ॥
जिहँ पहरा को करता जाना । सो मूरख जग बीच भुलाना ॥
सो करता जो सध पर बली । दोन्ह मनुष को काया भली ॥
वह पूरय सो सूर निमारै । को पच्छुन सो आनै पारै ॥

कोप न करु पहरा पर, घरु धीरज मन माह ।

देखु जगत मो करता, कस विस्तारा छाह ॥४७॥

धीरज बात कहत है। सुआ । मोहि वियोग सो आसु चुआ ॥
अब अम करहु बहोरह ताही । मन औ ध्यान बीच को आही ॥
कहा बहोरन हारा सोई । जेहि अन्ना जीवै सय कोई ॥
पै तोहि लाग फेर उडि जाऊ । हेरो अम परबत सब ठाऊ ॥
जियत होइ तौ हेरि निमारत । ना तो बैठ रहत चुप नारत ॥

जियत मिलत है एकदिन, सुवा मिलत है नाहि ।

मानुष सुवा मिलै तय, जय निर्मल होइ जाहि ॥४८॥

इहा नाउ लै उडा परेबा । हेरा इहा अहा वह सेवा ॥
मधुकर वहि तट ऊपर भयेऊ । बलि सैरगपूर मो गयेऊ ॥
हेरत ताको सुया सरेखा । तेहि सैरगपूर रुह देरा ॥
रोये ऐसे दोऊ दुख भरे । तेन रोखत कुज के दिल भरे ॥
जो दल भरै अलख तेहि जानै । दूमर पत्र बिछै भह आनै ॥

रोये मधुकर औ सुवा, बहुत मानि मन हान ।

साथी कारन भा बेकल, मधुकर निर्प सथान ॥४९॥

सुवा भयेठ अगुआ औ चला । पालें चला धिरह कर जला ॥
 मगु मो मिला पेम यनजारा । और लोग जो रहा पियारा ॥
 पेम नगर मो मधुकर गयेऊ । जनु तप साधिसरग मो भयेऊ ॥
 है तेहि नित दैकुठ सवारा । जो भल काज कीन्ह मद जारा ॥
 पहिरै कनक कड़ा औ घागा । घोटगैं पाट उपर मनि लागा ॥

मालनि फुलवारी रही, रहेउ सनेही नाउं ।

सुवा कहा मधुकर सो, लेहु इहा तुक ठाउं ॥५०॥

मधुकर लीन्ह घास फुलवारी । सूआ आप गवा जह प्यारी ॥
 पूछा धन कहु कुसल पियारे । देखि जुहाने नैन हनारे ॥
 कहा कुसल अब कुमल तुम्हारी । नीकी भाग तेहारो बारी ॥
 मधुकर राजा को मैं आना । फुलवारी मो दीन्है घाना ॥
 है दरसन का भूछा राजा । अब तेहि दरस देखावछ छाजा ॥

तुम मालती वह मधुकर, दोऊ एक सँजोग ।

रहसे देखी निर्प को, प्रेम नगर के लोग ॥५१॥

दरस देखावै कह तुम कहा । मोहि वहि दरसन पर बित रहल ॥
 दरसन जोग कियेउ वह काजू । राजा रहा तजा सब राजू ॥
 जो दरसन दाता को चाहै । काज करै भल मत्त निबाहै ॥
 जो करता की सेवा माही । दूसर माफे मेरवी नाही ॥
 बह सुमिरेउ है एकहि मोही । छात्रत दरस देवाहु बोही ॥

पै अचलीं नहीं उचित, परगट देउं देखाय ।

देखै मेरो छाया, ऐसो करहु उपाय ॥५२॥

कहा यात भापा तुम भली । अउहीं लाज लिहें रहु लली ॥
 है फुलवारी बीच अटारी । जाइ अटारी चढ़िये प्यारी ॥
 मधुकर हाथ देउ मैं दरपन । छाया हारि देखावहु दरसन ॥

तै परगट तेहि लखु उरवसी । वह देखै तोहि ससि की ससी ॥
परगट दरसन के दिन औरै । है प्यारी केतौ दिगं दवरे ॥

इह उपाय भलो है, यह दिन देहु विताइ ।

भोर होइ जब दूसर, दरसन दीजे जाइ ॥५३॥

दुसरे देवस मालती प्यारी । सखियन सँग आई फुलवारी ॥
चदिल अटारी मखियन साथी । दुइज चन्द सोहा वह मध्या ॥
आप दख्य वह सुवा मयाना । अटा सरें मधुकर कह आना ॥
दरपन दीन्ह हाथ मह लीन्हा । मालति वदन भरोसेह कीना ॥
भाका दरपन मो परछाही । परी वदन की बिछुरी नाहीं ॥

देखि वदन की छाया, मधुकर भये अचेत ।

मालतिकली भंवर लखि, धिक्कसिरही सकेत ॥५४॥

जब सचेत भा मधुकर जानी । मन्दिर गइ तब मालति रानी ॥
दरसन दैकै गइल पिपारी । तेहि दोहाग भई अधिकारी ॥
मीलन लाग दौक दुख माही । परी हाथ सुख एकौ नाहीं ॥
सुवा सदेस दौक कर आनै । दौक सग सनेह बखानै ॥
कबहुव पाती कबहुव यात । आनै सुवा चतुर दिन रातै ॥

प्रेम विरह वैराग मों, बहुत मास गा बीत ।

कयहू दुख कयहू सुख, कठिन प्रेम की रीति ॥५५॥

रूप जानि मालति बरजोगू । नेवता राज बस के लोगू ॥
रखा सम्यक् ठौर बनाये । राजकुमार देश के आये ॥
एक एक सुन्दर राज कुमारा । कोऊ रवि कोऊ ससि तारा ॥
मधुकर बिनु नेवतेगा तहा । रहे राज बसी मध जहा ॥
मधुकर रूप देखि सब लोगा । सोभा तहा सभा को सोभा ॥

मड़ि माला मालति लिहें, आई सभा मँझार ।

बहुत सहेली गोहने, भयेउ सभा उंजियार ॥५७॥

लगी आम सब के मन साथी । यह चचला चढ़ै केहि हाथा ॥
 वह चचला चँचला के समा । चहु दिसि फिरी लिहै निलमा ॥
 ताकर ग्रीव हली वह भाला । ठारेउ जो मातेउ तेहि हाला ॥
 गये सकल निर्यं अपने घर को । सालति व्याह गई मधुकर से ॥
 दुख सहि के सुख पायन दोऊ । वस सुख तुम्है पियारी होऊ ॥

सखी कहानी कहि गई, इन्द्रावती के लाग ।

कल ना परै प्यारी को, यादें अधिक दोहाग ॥५८॥



[१५] मानिक खण्ड ।

दूसरि सखी से दूसरि तनी । मीठे अधरन भारा अमी ॥
 कहा सुनावत एक कहानी । चेत करन से सुनिये रानी ॥
 जो यह कथा रसाल समूहहु । निज यपु करन अवस्था बूझहु ॥
 परगट बूझै बूझहु कथा । बूझे गुपुत जाइ घट मथा ॥
 लोग भुलाइ रहा परछाही । छाह मूल को देखहिं नाहीं ॥

एक कहानी कहत है, सुन प्यारी दै कान ।

रैन बडो अती होत है, सो इव जाइ निदान ॥१॥

एक नगर एक राजा रहा । सब तेहि नाम आतमा कहा ॥
 रहा से महीपत करगढ़ बाका । तेहि में रहा सब तेरह नाका ॥
 नौ नाका नित रहै उधारा । बारह रहै पाच हरफारा ॥
 जय लग जागहि तय लग धावे । सब सुच बाहर की ले आवे ॥
 हे तेहि गढ मो चौधिस खडा । बारह तिन तिन भीतर पडा ॥

सात लोग कारज के, गढ़ मो राखै वास ।

रहै आतमा गढ मो, जय लग सातौ पास ॥२॥

राजा पुन्य घरम बहुत कीन्हा । पुत्र एक करता तेहि दीन्हा ॥
 मानिक चन्द्र रहा सुन नाऊ । रहा समाइ पिता मन ठाऊ ॥
 मानिक सम पढ मानिक लेना । ताके रगक वारिय सेना ॥
 सुन्दर रूप सलोना प्यारा । बरन रहा अस भीत तुम्हारा ॥
 भीत तुम्हार जाँठ कै काया । परमातना भेन धरि आया ॥

है सरूप औ कोचिद, रानी भीत तोहार ।

'सै मानिक मानिक अस, तापर डारउ' वार ॥३॥

मानिक ज्येठ तरुन जय नीको । जीठ ज्येठ राजा के जी को ॥
 जय तारुन्य पुत्र मो पावा । राजा मन ब्याहै पर आवा ॥
 देव बियाह बाम घर आने । बस होइ मानिक सुख माने ॥
 बस होइ जग काज मो आवै । जननी जनन मुकुन नित धावै ॥
 जो पितु मात मुकुत मन धरई । घास काटि पशु सेवा करई ॥

ताके मात पिता कां, मुक्त देइ करतार ।

बस भलो दोऊ जग, जो पावै अपतार ॥४॥

चित्त घसीठहि निषं हकारा । रहा चित्त को चरन बयारा ॥
 भेजा हेरहु ऐमिय रानी । होइ सरूप गुनी औ छानी ॥
 जा घर कामिनी सूघर होई । सदा रहै सुख भीतर सोई ॥
 जा घर कामिनी सूघर नाही । है तेहि नरक यही जग माहीं ॥
 दुइ औ तीन बार तिय कीजै । जोह डेराहु तो एकै खीजै ॥

रद बतींस दाडिम समा, लेचन पकज मान ।

जेहि कामिन के पाइये, करहु होइ सुख प्रान ॥५॥

अरुन जोल भिगं से दिगं जाको । वोदू छीन औ गज गत ताको ॥
 सो जा घर आवै सुख देई । पिय को जीठ हाथ कै लेई ॥
 बाम कपोल मचा जेहि होई । सुखी सोहागिन नारि सोई ॥

स्याम ममा याए कुच जाके । बिछुरै अन्त प्रेम नहि ताके ॥
सरवन जघ अधर कुच माही । रोम होइ तो सुन्दर नाही ॥

भोंह दुइज के चाद सम, लघु अंगुली सम नाक ।

प्रीत बहुत तेहि कंत सो, सुख सम्पत्त को आक ॥६॥

चित्त बसीठ किरा यहू देखू । मिलिउ न रानी सुन्दर भेसू ॥
निर्मल पूर नगर एक सूका । चित्त अमल होइ निर्मल धूका ॥
चित्त बोही पत्तन दिस बला । यह दिस होत भयेउ निर्मला ॥
निर्मल यहुन नगर यहू देखा । देखत रीका चित्त मरेखा ॥
रहसि नगर के भीतर आयेउ । धरम की रीत चहू दिस पायेउ ॥

पन्थ गली सत्र निर्मलै, सुग्री बली सब लोग ।

रोग वियोग न देखा, मिला भोग संजोग ॥७॥

चित्त एक उपवन मो गयेऊ । पाय रुचिर आनन्दित भयेऊ ॥
फुलवारी मो चित्त मरेखा । मन्दिर एक काच को देखा ॥
बीच स्याम रग तिलभर सोहा । ता लखि चित्त चित्त को मोहा ॥
स्याम रग हुन है मत माहा । करै सेत रग प्रेमी माहा ॥
जा दिन प्रेम सु पूरन होई । होइ स्याम सो उज्जल सोई ॥

भये अमल मन्दिर सों, दिष्टवार के पार ।

मानुष एक न देखा, निर्मल सदन मझार ॥८॥

चित्त भेद मालिन सो लीन्हा । मालिन सकल भेद तेहि दीन्हा ॥
यह मंदिर औ यह फुलवारी । है हीरा को जो निर्घ वारी ॥
है हीरा हीरा जग माही । हियरा हेरा बस कोऊ नहीं ॥
श्रुतिय प्रीत सुभाव असीसैं । तासु चरन रमनी के सीमें ॥
सुन्दरता पुर हत अधियारा । तेहि मयोप सो भा उजियारा ॥

है मन्दिर फुलवारी, वह मालती समान ।

अलिन गयेउ तेहि आलै, है जग माया प्रान ॥९॥

चित्त गयेउ निर्मल पति पासा । मन मो राखि मनोरथ आसा ॥
 कहा सँदेस आतमा केरा । निर्मलेस माना नहि केरा ॥
 कहा महा पति है आतमा । हम वह हैं दुइ नीरध समा ॥
 दुइ दधि मिलही प्रीत बेषहारा । एक देह दूसर जित प्यारा ॥
 बीच रहै अन्तर पट परा । बढै न एक सिन्धु निर्भेरा ॥

दोऊ दधि सों नीसरै, मुंगा गुलिक अनूप ।
 सुख दर्शन निखारै, मिले रहै जो भूप ॥१०॥

जय निर्मल पति धातहिमाना । होरा जोगें मानिक जाना ॥
 आदर बहुत चित्त को कीन्हा । दान दुकल नग मानिक कीन्हा ॥
 सूधी चाल चला चित्त ज्ञानी । भा न गरब गति से अभिमानि ॥
 चलु न गरब से महि पर प्यारे । पार न तोहि महि डारस फारे ॥
 नाथ रचन से धरती भारसि । औ परबतलग पहुँचि न पारसि ॥

फेर न घदन गरब सें, चलु न लेहि अभिमान ।
 सुख औ चरन एक दिन, छार होहिं तन प्रान ॥११॥

अपने नगर चित्त जय आयेउ । धात आतमा माथ जनायेउ ॥
 सुनि राजा को मन हरयाना । बहुत अनन्द जीउ मो माना ॥
 यह जग परमद छाजत नाही । सीस परत घिससौ परछाही ॥
 बहुतै खम औ कष्ट भकारा । मानुष जन्म कीन्हा करतारा ॥
 जेहि नित लेखा एक दिन होई । कहा अनन्द मनायै सोई ॥

मात औद्र मों रक्त को, जाके भयउ अहार ।
 ताको जग मो रक्त है, जेउन नित निस पार ॥१२॥

व्याह कि रीत रचा जग राजा । भवे वियाह को धाजत राजा ॥
 चित्त फेर निर्मलपुर गयेऊ । निर्मल पति के आगे भयेऊ ॥
 चाह वियाह करै कर दीन्हा । धात माति निर्मल पति लीन्हा ॥

भास एरु कै लगन धरावा । देस नगर मो नेवत पठावा ॥
 फाज आज को प्रात न राखा । हेरा सकल सूल को साखा ॥

जो कारज है आदि को, प्रात न राखहु ताहि ।

समय लूट वृद्धत है, महा ज्ञान है जाहि ॥१३॥

ध्व डरु चाह सुना जम हीरा । औ वर मानिक पुहुप मरीरा ॥
 अधान हूँ मो मान मो आई । सोही नाग लगा ललवाई ॥
 जो कन्या बुधवन्ती होई । सुनि वर नाऊ हँसै जो सोई ॥
 की सुप रहै कि आसू डारै । उन्न न होइ न सबद मिसारै ॥
 निश्चै वर तेहि हियें समाना । विद्याजन यह अज्ञा जाना ॥

जो धारो है भोरिचि, औ विवेक मति नाहिं ।

जानु पिता मुख सोहै, जहा देखि तह जाहि ॥१४॥

हीरा हँसत हँसे मय हीरा । हरा मखिन के सर को पीरा ॥
 पूछा मखिन हँसी तुम प्यारी । काहें कहै जाहि बलिहारी ॥
 तेरो मन्द हास मन हरा । मानहु हँसय फूट खसि घरा ॥
 है मुसुकान मनोरम रानी । मुसुकानी जो रही मयानी ॥
 तुम मुसुकाइ हँसी केहि कारन । है मन नगरै बीच कि आरन ॥

कहा यात कुछ नाहीं, आइ वसी मन माह ।

ऐसें आज हँसी मैं, धरा हसी तुम छाह ॥१५॥

घोली मखी हँसी तब आवी । जय दरसन अघरज देखावै ॥
 मनुज हमी कवि हँसी न होई । जय कुल होइ हँसी तब कोई ॥
 हँसी हमें किछु मरम बतावा । जिनि मसि सबद चद प्रगटाया ॥
 औ जम धुवा नोसरै जहा । पावक देह बतारवइ तहा ॥
 औ बीमा उह उहके बोला । मरम सो बच्छ पीर को रोला ॥

तैसे हँसी तुम्हारी, कहा अहं किछु यात ।

चचल चाल नसा की, जस मार्गै जरतात ॥१६॥

छाल अधर सो हीरा रानी । झारा गुलि कहियें रहसानी ॥
 सुनि के व्याह औ अर को नाऊ । यह नित हसित सखी यह ठाऊ ॥
 मैं हीरा यह मानिक अहई । मनि को गुन मनिके सँग लहई ॥
 सुनि विवाह अर मैं अनदानी । पै एक चिन्ता द्वियें समानी ॥
 है मानिक गुन के अउसाऊ । की मानिक है ऐसहि नाउ ॥

बहुत धिउँ में हात फल, देवत लागै नीक ॥

पै रसना के साथें, होइ तीन की फोक ॥१७॥

झालो निर्मलपुर की नारी । सत्त बचन भाषा तुम प्यारी ॥
 जेहि प्रकीर्ण झालो है नाही । मनुज नहीं है पशु जग नाही ॥
 का परगट के भयें खलोना । जो निसर्ग को खोटा सेना ॥
 तेलिया फद स्याम रँग होई । रूप करत ताबा कहँ सोई ॥
 अगिन जाति धारी जेहि भेटा । छार कीन्ह तेहि को प्रम भेटा ॥

पवन सयाना चातुरो, द्वार पाल है तोर ॥

हम सब तेहि भेजत हैं, वोहि मानिक के वोर ॥१८॥

सखिन पथन कह भेजा तहा । बास रहा मानिक को जहा ॥
 उहा अनन्द बीच आतमा । भा सब लोगन के जिउ मसा ॥
 रागे रँग में मानिक भूला । राग अहै परमद को मूला ॥
 नाद पाय काया जिउ आया । वेद नाद पाछे तन पाया ॥
 आदि नाद से यह जगमाहीं । सकल सवद भै छूँछा नाही ॥

नाद अनाहद अहद, सुनै अनाहद कौन ॥

सिद्ध होइ अपने मन, सुनै अनाहद तौन ॥१९॥

है खटराग छनीस रागिनी । औ सँग पुत्र पुत्रभाभिनी ॥
 प्रथम राग भैरो की जानहु । मालकौस दूसर पहिचानहु ॥
 पुन हिडोळ औ दीपक गहई । श्री राग धरती को कहई ॥

यष्टम राग भलार कहावे । पुत्र भारजा कैन गनारी ॥
निर्त छनवे भहै पियारी । त्रीमठ अलकार छवि धारी ॥

ताल एक सै साठ है, सात भांत सुरजान ॥

तीन लाल सत्रह सहस, नौ सै तीस मतान ॥२०॥

मानिक परा राग रँग नाही । चिन्ता रही कुठै तेहि नाही ॥

एक रात जासो सुख होई । सोवत रहा अजिर मो सोई ॥

राकस दिष्ट परा वह प्यारा । लै राकस मायापुर द्वारा ॥

मायापुर नगर अति बाका । सहन गली औ समुदै नाका ॥

माया मो मायापुर घासी । का गृही औ का सन्यासी ॥

हीरा मानिक मोती, रूपा कनक करोर ॥

पै आगम धन आगें, मायापुर धन योर ॥२१॥

जब मानिकहि अशुर बरियारा । मायापुर नगर लै द्वारा ॥

द्वारा एक कुलवारी नाही । लागेउ चोट देह मो नाही ॥

जागा मानिक अचरज नाना । कहा मोर मन्दिर अस्थाना ॥

अम्बर वही मीन उपराही । पाव तरे धरती वह नाही ॥

अबही ना वह दिन यह घरी । होइ रसा वह दूमर अबही ॥

रहेउ कहा मैं सोवत, हृत्तां परेउं केहि भात ॥

परउ पराये देस में, नियरें पिता न मात ॥२२॥

कहा सदन वह आगन कहा । सोअत रहेउं लिहे सुख जहा ॥

मैं भुलाइ केहि सचर लागेउ । अनुज पिता माता से भागेउं ॥

वह दिन अबही नाही आयेउ । जेहि दिन कहैं फरतार जनायेउ ॥

अस दुख सकट पाछें लागै । अनुज मात पितु सो नर भ नै ॥

अपने रूपर सब अरुकाही । सुधि काहू को रासहि नाही ॥

को मोहि इहा पँवारा, को रिपु रहा कठोर ॥

निस अधियार अकेला, पगु दारो केहि वोर ॥२३॥

सीघत मानिक रैन बिताया । प्रातहि सुन्दर बारी पाया ॥
 अति सुन्दर फुलवारी देखा । रहा छेन्नाय भँवर के लेखा ॥
 रमा नाठ राजा की बारी । रहिल रही ताकी फुलवारी ॥
 सहा सरूप रही यह रानी । काया कचन बारह बानी ॥
 यह ससि समा रमा आतमा । मानहु रही रमा की रमा ॥

रमा रमाए सो रमा, रमा किंकरी होइ ॥

सेवा ता कहं रात दिन, मन सो ममता घोइ ॥२४॥

मानिक चन्द प्रात जब पायेउ । फुलवारी मो मालिन आयेउ ॥
 मालिन जब मानिक कह देखा । रीझि रहा तेहि प्रान सरेखा ॥
 पूछा मालिन को तुम होहू । छलित अघर अँबवा तुम लोहू ॥
 नियन सरीर रक्त बठमाऊ । है जिउ समा कलेजर ठाऊँ ॥
 मन मोचन लोचन कजरारे । मतवारे रद छद रतनारे ॥

कवन भेस तुम आये, यह फुलवारी माँह ॥

सुर कि असुर की मानुप, ससिर बितेरो छाँह ॥२५॥

सुनिमानिकमानिक कह खोला । ससि गोती सम भापित बोला ॥
 तुम हत्या कारें मेहि लावा । मैं न हनत है जीउ परावा ॥
 दोष धिना मारै जो काहू । मारे चाहे तेहि नित ताहू ॥
 मारनहारेहि मारा चाही । यामो जीवन सबको आही ॥
 तुम का लोचन अघर बखाना । तोहि बखानु जो तहा समाना ॥

हैं मानुप सुर असुर नहिं, मानिक मेरो नाउँ ॥

नहि जानहु केँ डारा, यह फुलवारी ठाउँ ॥२६॥

नगर हमार आतमा पूरु । मन सन रहेउँ तहा गुन मूरु ॥
 है मे बुद्धि ज्ञान का चेरा । तनुज आतमा राजा केरा ॥
 जग ज्ञानी मन काया माही । तस मैं रहा रहा जह नाही ॥

मन सो जज्ञा मागा चाही । तन मो मन मन्त्री भल आही ॥
 मन सवरे सवरे सब काया । मन खोटें खोटे सब पाया ॥
 हैं बिसमादी देस नित, रेहि मारग होइ जाउँ ॥

को राजा यह नगर मो, को रानी यह भाउँ ॥२७॥

मालिन कहा गगन है राजा । जाकर हका जग मो बाजा ॥
 है बिसमती धाम तेहि केरी । बिष्णु बल्लभा जाको चेरी ॥
 रमा प्रहै राजा कर घारी । जाकर यह सुन्दर फुलवारी ॥
 है अयही वह धिना बिआही । है सुन्दर जैसा किछु चाही ॥
 सब चाहत दरसन तेहि केरा । मानउती मयसो मुख केरा ॥

धरी धरी पल पल रमा, सोभावन्ती होत ॥

मानभरी सिर पाव सो, उदित मुख को जात ॥२८॥

जैवर रमा कलेवर माही । लखि पायेउ लखि नेवर नाहीं ॥
 अब तुम हियें उदास न हूजे । तेरो सकल कामना पूजे ॥
 धार धीरहरूपत जा दिन परई । राजा गगन सयम्बर करई ॥
 आवै ता दिन राजकुमारै । ता नित सोभा सभा सँवारै ॥
 तुमहू रगभुम्भि मह जायेहु । दूसर ठाउँ बिलम्ब न लायेहु ॥

रहिये फुलवारी मो, रमा पास में जाय ॥

तुम सां श्री प्यारी सां, परचै देउँ कराय ॥२९॥

मुनि मानिक हर्षित भा हीर्यें । धिरा तहा आसा मन लीये ॥
 मालिन जाइ रमा सो कहा । रमा हिर्द नीरज होइ रहा ॥
 कहा देसाउ रूप तेहि केरा । सुनत प्रयेउ चेरा मन मेरा ॥
 है कैसे वह तरुन नवीना । रूपवन्त है अहै कुलीना ॥
 कहा सखिन संग लीजे हारा । उपवन जाइ देखु वह प्यारा ॥

हो प्यारी चारी गयें, देखि परै वह रूप ॥

रूप भूप के सुत को, है अनूप रवि धूप ॥३०॥

रमा वेग सय मसी हँकारा । कमल घरन उपवन दिस ढारा ॥
 फुलवारी मो सब मिलि आई । सुन्दर राय मुनी की नाई ॥
 रमा रूप मानिक जब देखा । भावा उर यह कुभर सरेखा ॥
 मानिक मुख देखा जब रमा । भइ ससि नेह चकेरी ममा ॥
 दिष्टवान मैं ताफर चीन्हा । आद मनुष सो जेइ छल कीन्हा ॥

नयन नयन के लागें, महा उपद्रो होई ॥

औंधे नैन सों राखै, जान भरा जो कोई ॥३१॥

रमा मखिन सो कहा बुझाई । ता कुल बुध यह विध प्रगटाई ॥
 का जो सुना निरप सुत अहई । निरप तनुज अपने मुख कहई ॥
 पूछहु प्रथम देस औ गाऊँ । तेहि पाछे पूछहु कुल नाऊँ ॥
 राज काज पुनि पूछा चाहो । निरप को यही कसौटी आही ॥
 पूछेन कवन नगर सो छला । केहि कुल अम्बर रवि निर्मला ॥

मानिक उतर निसारा, नगर आतमा पूर ॥

तनुज आतमा राय को, सोम यस कुल मूर ॥३२॥

जग सहँ मानिक नाउँ कहावा । अपने सुहु इहा नहि आवा ॥
 आगन ब्रीच रहा मैं सोवा । सोवा मुवा एक सुख सोवा ॥
 कहा रहा अगुवा जो कोई । सोइय अनुज मितुँ को होई ॥
 गुरू एक चेला सो पूछा । यह निस सोइ भएसि सु छूटा ॥
 सपन कीन्ह बुध सोइन सोयेउँ । जयसो मित्र मिला नहि सोयेउँ ॥

सोयत रेहउँ अजिर में, इहां परेउँ अब आइ ॥

ना जानउँ सुर की असुर, डारा इहां उठाइ ॥३३॥

कहा तुम्है जो सम्पत राजू । देहु सुनाय राज को काजू ॥
 चाही कवन काज राजा को । जासो राज रहै धिर ताको ॥
 कहा धाम को रीत सँचारे । ना अधरम सो देस उजारै ॥

अज्ञा सिर्जनहार पठावा । धरम करै की बात जनावा ॥

औ यह बात वेद मो आई । करै समीपी सग भलाई ॥

राजा है चरवाहा, जाहि चरावत होइ ॥

तेहि दिन करै जो दाया, सरग न पावे सोइ ॥३४॥

निर्प अधर्मी लेखा के दिन , । आवै रहै सहायक जन दिन ॥

बाँधा जाइ नरक कुठ माही । तहा मरीच अँजोरा माहीं ॥

राजा सो जो इच्छा करई । छोट बडे पर दाया धरई ॥

चरवाहै कहँ सत्रु न आनहि । डरिक्ँ धनुक छुरी मनतानहि ॥

होइ अवश्य ना ब्रेच अगूठी । दत्त करे धर आनहि मूठी ॥

रहै अहरँ मास नित, अनुचर ग्रामी पास ॥

लोन मोल आनै कहू, भेजै हरै न आस ॥३५॥

उचित नहीं अधरम बित लावै । मानुष गूदा नित कढावै ॥

ओषद हेत मनुष मरवावत । तेहि देइ छाइ मया मन आवत ॥

निहर रहै नहि जीत के पाये । करता आस रहै चित लाये ॥

डाह न करै डाह भल माही । मन कहँ डाह करै दुख माही ॥

जैसे पायक लाठी खाई । भच्छत तैसे डाह भलाई ॥

धड़ा न करै कुमानुषी, राखै अधरम रीत ॥

मानहु काटत आपुहीं, जाहि स्वान सो प्रीत ॥३६॥

तासो मिलै एक जो अहई । दरपन दरपन महिमा लहई ॥

काटा सग रहै पै काटा । पुहुप पुहुप रस चाहे घाटा ॥

सत्रुहि सत्रू सग भिडावै । भेडा भेडा माय लडावै ॥

औ अँकोर पर चित न देई । होइके निर्प अँकोर न लेई ॥

जो अँकोर दीन्हा जो खाया । तिन्ह सो दूर अलख को दाया ॥

लूट मिलै रिपु मारें, लूटहि देइ लुटाइ ॥

गुप्त देइ चहुतन कंट, तामो आप न खाइ ॥३७॥

ज्ञानी पास पठावै ज्ञानी । औ आगे की पढ़ै कहानी ॥
 सकट परे निरास न होई । होइ भाग बल पावै सोई ॥
 सन्नत ठौर न ऐसो सोवै । सुनै न सबद दुखी जो रोवै ॥
 होइ चतुर लोगन की मता । करै घरम बाढै अस लता ॥
 मगु चढि मगु सुध लेइ अगाऊ । आगे पन्थ होइ कस ठाऊँ ॥

धरती काज सँवारै, नभ दिस करै न चाव ॥

ना तो ऊँचे सों गिरै, खाय हटन को घाव ॥३८॥

अकसर आपन सद्र न भरई । सात पाँच सँग जेवन करई ॥
 सेवा अनुज की करै न मूर्ये । अनुज अनुज कहँ हारा कुर्ये ॥
 जो जैसो तेहि तैसे राखै । दया बचन सकल सँग भाखै ॥
 बूढ़ बूढ़ सागर सो लेई । दन्त समै धारिद सम देई ॥
 कोमल कहि बस करै कठोरा । हीरा कहँ रागा पै तोरा ॥

धरम मूल है राज को, अधरम किहँ नसाय ।

कठिन राज को काज है, दिहेउँ मनाक सुनाय ॥३९॥

रमा रमा मखिपन यहि बाना । निरपे सुवन मानिक कहँ जाना ॥
 किहेन प्रतिष्ठा आदर सेवा । राखेन दुग्ध खाँइ औ मेरा ॥
 कहेन दया करि जेवन कीजै । सब कहँ मन पन्थ न दीजै ॥
 हम सब चेरी तेरी प्यारे । तोहि नित भोजहि सेवन हारे ॥
 फुलवारी सो कीजे बासा । अचुर भोज देहि ते हि पामा ॥

यह फुलवारी सुन्दर, है जैसै कविलास ।

वास करहु आवत है, दास मनोरम पास ॥४०॥

मानिक परा रमा बस नाहीं । बात सखिन की फेरा माहीं ॥
 दे कै बोध मंदिर सब आई । गोहन रहिन सखी जहँ ताई ॥
 मोती मूगा ऐसे दासे । भोजेन रहैं कुवर के पास ॥

औ अंसु रुजि मि फूल सलोना । भेजा तेहि लगे मनि सोना ॥

पहिरा बाधा पागा पागा । लागा भला भाग तेहि जागा ॥

रमा बसी मानिक मन, मानिक रंमा प्रान ।

बार विरहस्पत आयेऊ, आण कुंवर सुजान ॥४१॥

रन भूमी सो मानिक गयेऊ । रमा हार लै परगट भयेऊ ॥

किरी हार मानिक गल हारा । मानिक बदन भयेउ उजियारा ॥

सब निरास होइ कै घर गयेऊ । रमा व्याह मानिक सँग भयेऊ ॥

मानिक रमा भये एक ठाऊ । तैं न दुखी मन हो बलि जाऊ ॥

मायापुरी लागु जोहरावा । सकल राज को कुत्री पावा ॥

बहुत किंकिरी किंकर, पायेउ मानिकचंद ।

अरुक्षि रहा मायापुर, भै धन औ धन फंद ॥४२॥

उहा पिता मन सोग समाना । सब सो मानिक चन्द्र हेराना ॥

बहु दिस लोग पठावा हेरे । को हित होइ मानिकहि कैरे ॥

पिता आतमा इन्दी माता । रोवहि होइ प्रान नही साता ॥

कै बैरी मन मानिक हरा । हम सिर अलि बिसमौ को परा ॥

बह मानिक नित हीरा हेरा । हरि को लेगा मानिक मेरा ॥

लोग हरिकै हारा, मिला न मानिकचंद ।

विस्मित होइ के त्यागा, माता पिता अनंद ॥४३॥

पवन गवन निर्मलपुर कीन्हा । बात सखिन सो सब कहि दीन्हा ॥

मानिक सूघर कुउर सयाना । है वै सोबत रैन हेराना ॥

बहु दिस लोग हरि कै हारा । केहि धरती या मानिक प्यारा ॥

जैसे चाही भूपति बेटा । तैसे मानिकरूप लपेटा ॥

माता पिता नगर के लागू । मानिक लगा भरे दुख सोगू ॥

राय आतमा भा दुखी, तजा अनन्द हुलास ।

गगन छिपायेउ मानि कै, होइ निदैं को न्यास ॥४४॥

सुनि यह यात सखी पछतानीं । सब परसून ममा मुरकानी ॥
 हीरा के मन उपनेउ पीरा । परगट सोच न माना हीरा ॥
 मान भरी जैसें घन रही । जैसें रही सो धीरज गही ॥
 सखिन गुपुत कै पीरा चीन्हा । दीन्हा बोध सभापन कीन्हा ॥
 पवन जाइ निर्मल पति गियरें । कहा महीप दुखी भा हियरें ॥

भयेउ चिन्त त्रिमलेस मन, कहा पवन सों राय ।

जाहु आतमा पूर कहं, मानिक हेंरहु जाय ॥४५॥

सबै बियाह की रीत उठायेउ । पवनहि हेरै लाग पठायेउ ॥
 सखिन बित्र हीरा कर दीना । लैकै पवन गवन तब कीन्हा ॥
 बेग आतमापुर सो आयेउ । विस्मित सकल लोग कहपायेउ ॥
 राजा आगे नायेउ माथा । बित्र दीन्ह राजा के हाथा ॥
 कहा सन्हार धरहु यह राजा । याति लोग इब तुम कह छाजा ॥

थाती भार उठायेउ, यह निर्वल मानुख ॥

लैन सके महि अम्यर, समुक्ति भार को दुख ॥४६॥

जो थाती काहू सो नासै । आपुहि आप न ताही घासै ॥
 जो थाती थाती ले धरई । नासै उतर ताहि को करई ॥
 जो थाती दूसर पर माझी । हर सो डारा कर तेहि नाझी ॥
 अपने दरब कीय को भेसै । थाती मिलि कै फेर न नेसै ॥
 थाती देन ताहि पै छाजा । थाती कठिन वस्तु है राजा ॥

दुइ मानुष थाती घरें, मागै आवै एक ॥

दुसरे बिना न दीजिये, जो तोहि बुद्धि चिवेरु ॥४७॥

ही मै पवन पवन पग मोरा । पवन समान फिरव चहु बेरा ॥
 मानिक सोज लाग अब जाऊ । हेरो बन परबत सब ठाऊ ॥
 ना वह गन्धक तामर होई । है उज्जल औ छाल न सोई ॥

जियत होइ तौ हेरि निसारव । तन मन वह मानि रु परवारव ॥
है जग सकल पवन सो भरा । कहू नहीं छूटा है परा ॥

मानुष एक नगर को, साथी चाही मोहि ।

वन समुद्र औ परवत, हेरि निसारउँ बोहि ॥४८॥

राजै साथ चित्त कह दीन्हा । दोऊ गवन एक दिस कीन्हा ॥
पहिले साथी तब मगु नीको । साथी नीको है हित जी को ॥
नगर बीच सब के मन सोगू । सोग समुद्र परा सब लोगू ॥
सब दुख बीच परा सुख भागा । मगु रवि गहन बिछै मो लाग्ना ॥
यह सुनि कै इन्द्रावनि कहा । गहन विचार सखी अस अहा ॥

कहिले साथी पियारी, रवि ससि गहन विचार ।

फेर कहानी भापेउ, चाहा जीउ हमार ॥४९॥

कहा मेघ के बीच पियारी । जो रवि गहन होइ अधियारा ॥
अग्नि तरै पशु मरै बहूती । घटै सुकल अनपडे अकूता ॥
घाटै विग्रह मानुष माहीं । मोउन प्रीत रहै कछु नाहीं ॥
जो ससि गहन मेघ मो होई । दुख के फाँद परै सब कोई ॥
सिंहासन पति जीत न पावै । ता पर जो रिपुता पर आवै ॥

जो रवि गहन पियारी, होइ विरप धेन के पास ।

बहुतै तसकर प्रगटै, बिछै धेन को नास ॥५०॥

घोर होइ फल पशु सहताही । घाटै ससै नारग माही ॥
चन्द्र गहन विग्रह प्रगटावै । दुख येयाध रमनि पर धावै ॥
पशु पर आवै मोचु क धारा । विरप औ चेनु मरै अधिकारा ॥
रवि को गहन मिथुन मो प्यारी । उद्गम घटी होइ अधिकारी ॥
निर्यल छेएक औ यनिजारे । होहि और जो लीखन हारे ॥

ससि को गहन मिथुन में, मोचु और दुख होइ ।

रत्रानित यहै चहँ दिस, दास न पावै कोई ॥५१॥

जो रवि गहन कर्ष मो होइ ॥ दुरा भकट देरी सब कोइ ॥
 अक जो प्रगटे नभ उपराहो ॥ दूर्य नाथ नाद पति माहो ॥
 राक लोग अपि काइ मरइ ॥ यिछे नमाहि नाम मो परइ ॥
 करं धीय सति राहु गरासे ॥ छड्या पटे यिछे फल नासे ॥
 मरे यहूतग मिनी पियारी ॥ विग्रह करे आप मर मारी ॥

सिंह पीच रवि को गहन, सिंहसन पति नास ।

दुख को पवन झकोरै, गहन सिंह के पास ॥५२॥

दुख को भल न अवस्था होइ ॥ गरभ समेत नार जो कोइ ॥
 मनुष अघेर दमरी जानो ॥ विग्रह राजन मो पहिचानो ॥
 जो समि गहन घोर जल करइ ॥ पाछा जाहा घुती परइ ॥
 सतुराई लोग मो होइ ॥ दुख देखे गुरजन जो कोइ ॥
 नभ पर अक घरगटे पियारी ॥ पटे नदी जल राज दुहारी ॥

सुज गहन कन्या में, कन्या मर यहूत ।

नासे फल जो होइ दुख, गुरुजन घर अंकन ॥५३॥

मसि को गहन घीन उपजाये ॥ सेती लाये सेत बढाये ॥
 उदर पीर घुती सतुराई ॥ जल जो नहि नित प्रगटे आइ ॥
 सबे अवत नीन पर होइ ॥ विद्या को रुचि करै न कोइ ॥
 चाहत यिछे लगाये केरी ॥ सब मन होइ मुहु जिठ मेरी ॥
 तुला धीय रवि गहन सुभाऊ ॥ सब मन देख राग को चाऊ ॥

उमठै कटक जगत मो, यहै झकोरा घाउ ।

दुख भुँइचाल प्रगटे, यह विचार मोहि आउ ॥५४॥

जो समि गहन तुला मो आवै ॥ तरिवर फल जो सेत नमावै ॥
 घुती अधरम रीत प्रगटै ॥ विग्रह को धमनुष को चटै ॥
 रवि को गहन यिछे मो प्यारी ॥ दुख को भार देखे चिर भारी ॥

मिर्तु बहुत लोगन पर आवै । पसु औ पखी कवन गनावै ॥
मयन अगिन औ मूडहि लागै । अत बिर्ल सो दुख सजेगै ॥

विछि डंक को ओपद, जो पूछसि तैं मोहिं ।

जल औ लोन मलै कहं, वेग बतावउँ तोहि ॥५५॥

चन्द्रगहन नासै दुख पीरा । पै मानुष घूहै मझ मीरा ॥

पिय धन बीच होइ सतुराई । दुख बालक ऊपर अधिकाई ॥

फर फटि कन्ध देइ दुख सोई । औ ससै पन्थिक पर होई ॥

मदिर बहुत ठठावैं लोगू । मन्दिर सुन्दर अपने जोगू ॥

धनु में रवि को गहन विचारी । भापत है तोहि आगे प्यारी ॥

मरहिं जंट पसु बहुतै, मरहि तरुन अधिकार ।

सिंहासन पति ऊपरा, परै कष्ट को भार ॥५६॥

चन्द्र गहन अति देइ कलेसू । मरि कै लोग होहि मन्ह तेसू ॥

सीत खाइ कै मानुष मरई । भलो अवस्था पसु को करई ॥

काज खेत को भलो सवारे । कष्ट बालकन ऊपर डारै ॥

बहुतै लोग परै बँद माही । बहुतै लोग दास होइ जाहीं ॥

भकर बीच सूरज को गहना । उपजै चोर होइ अनलहना ॥

नासै खेत समुद्र में, नाव डुबावै सोइ ।

चूक कहेवँ करतार के, अज्ञा सो सव होइ ॥५७॥

गहन चाद को भकर भझारा । सिद्ध अधिकार उदर सो डारा ॥

मीचु होइ औ घाटैं चोरा । तारा उअै खटोलन चोरा ॥

रवि को गहन कुम्भ को दासा । मिलन मिलाव मोत मो नासा ॥

अन्न बढावै मिर्तु देसावै । पहरा सो कुटिलाई आवै ॥

ससि के गहन कैवल दुख बाढै । लोहू दुरै सरग सव काढै ॥

मरहिं तुरंग घनेरे, पुरुषहिं तिय पर चाव ।

जोर जोर काया में, पीरा मारै घाव ॥५८॥

जो रवि गहन भीन मो होई । नीर बढावे दधि मो सोई ॥
 जलवासी बहुतै मरि जाही । अजा बहुत पशु थाचैं नाहीं ॥
 तपन श्रयार बिज्ज अधिकारि । पशु सहताही खेत नसाई ॥
 जाहा पाला बहुतै परई । पानी दामिन बहुतै करई ॥
 ससि के गहन सिन्धु मो पानी । बाढै बढै भीन हे। रानी ॥

यस बडै मानुष कै, फल तरिवर अधिकारिं ।

सन करता अज्ञा सों, उपजत है जग माहिं ॥५९॥

चित्त जौ पयन गवन जय कीन्हा । मानिक हेरै पर चित दीन्हा ॥
 घातुर चित्त पयन सो बोल्ला । मानिक मानिक रहा अमोल ॥
 जो हरि लेगा जो तेहि पावउँ । काटत हाथ बिलम्ब न लावउँ ॥
 चार सँदिर सो जो कछु लेई । हाथ सो काट एक तब देई ॥
 कर काटय तब लाजत अहई । जय दुइ जन की आपुहि कहई ॥

मगु मारै के आगें, जो ठग पकरे जाहिं ।

बंद दिहा चाहै उन्हें, ठगी करहिं फिर नाहिं ॥६०॥

पन्ध मार जो पकरे जाहीं । है अज्ञा महिपत कर माही ॥
 चाहै हाथ पाय बिलगावै । चाहै जिउ सो मारि लहावै ॥
 चाहै जियत देइ रेखाई । फारे उदर दोस नहि लाई ॥
 जो फल काठी घास चोराया । तापर कर काटय नहि आया ॥
 पाहुन जो कछु लेइ चोराई । कर काटय भल नाही आई ॥

एक कटोरा वस्तु कहँ, लैगा दूसर चोर ।

ताकर हाथ न काटिये, जासों वस्तु बटोर ॥६१॥

चित्त जौ पयन गए मय ठाऊ । हेरा सब परयत बन गाऊ ॥
 पयन अहा सँघरै नहि पाया । चित्त अमल तेहि भीतर आया ॥
 पै वह पयन जोति सो भरा । मित्त चाहै अधिकी निर्मरा ॥

करता पवन मनुष जेहँ पावा । एक दिन सो सो पन्थ देखावा ॥
रोम रोम है पवन समाना । जा कहँ लोग कहत हैं माना ॥

पवन संचरा एक दिस, रहेउ न एकौ ठाउँ ।

पै काहू मानुष सो, सुना न मानिक नाउँ ॥६२॥

हेरि पवन चित कहू न पाए । सायापुर के बन महँ आए ॥
उतरे एक धिळ तर दोऊ । बन मो तीसर मिला न कोऊ ॥
मानिक आप अहेरें आवा । बहुत अहेर निर्ग रग पावा ॥
यन ऊसर औ जलघ अहेरा । है भल अलख निजोर्गे हेरा ॥
दीरघ नख धारी जो होई । करै न भोजन ताकहँ कोई ॥

निर्मल होत अहेर यहू, जापर करता नाउँ ।

पढिकै मारैं नीसरै, रक्त गीउ तन ठाउँ ॥६३॥

मानिक बन बन करत अहेरा । कीन्हा वोहि धिळ दिस केरा ॥
चित्त पवन को रूप बिलोकैं । हरपित भा मुद बाहेउ वोर्कें ॥
बोले चित्त पवन दुख रोवत । यह मानिक जागत की सोवत ॥
जागत मो मानिक हम देखा । की सोवतही सपन के लेखा ॥
जब मानिक नियरें अति आवा । परसि दोऊ आसीस सुनावा ॥

रहै माथ महि नाइकै, लाइ पीठ पर हाथ ।

जैसे मूरत आगे, ब्राह्मन नावै माथ ॥६४॥

जो करता की प्रीत को पावा । तेहि देखत मूरत सिर नावा ॥
जेहि मन भा करता की बोरा । सथ छोटे मूरत कहँ तोरा ॥
धरा यहै मूरत के काचे । चोख कुठार रहा सत बाधे ॥
तेहि नित जो जग करता आही । महि पर माथ लगावा चाही ॥
तेहि तो अपने लाग न भावा । धिळें हँकारा फेर पठावा ॥

जो भल होत आन कहँ, तो पिय कारन घाल ।

थज्ञा पावत मुन सो, धरै रसा पर भाल ॥६५॥

चतरि तुरै से मानिक प्यारा । मिला चित्त से आसुर ढारा ॥
 मानिक कमल नयन से पानी । ढारा भा अभिलाषी ज्ञानी ॥
 पूछा कुमल मातु पितु केरी । गोत बन्धु चेरा औ चेरी ॥
 चित्त कहा जीयत सब कोई । पै तुम बिनु व्याकुल मन होई ॥
 जैसे नगर रहा तस अहा । पै अमन तोहि बिनु होइ रहा ॥

मन हरिगा सय नगर को, परमद रीत न होत ।

कष्ट मँदिर मो बैठे, बन्धु लोग औ गोत ॥६६॥

माता रोइ नयन कहँ खोधा । नदी बहायेत पितु अम रोधा ॥
 सरवन को जस अन्धी अन्धा । छूटि गयेत सब जग को धन्धा ॥
 आज काल दूसरथ दुख हाथा । बान खाइ धाहत है साथा ॥
 मात अधिक बिसमादी सई । अयहीं नैन जोत नहि गई ॥
 माता अधिक नयारी होई । होइ असोस देइ जो सोई ॥

जनमे बालक कष्ट सहि, बहुत मयारी होइ ।

ता निदेस में नित रहै, है सपूत जो फोइ ॥६७॥

अब आपनो अवस्था कहू । तजि के देस कहा तुम रहू ॥
 सोवत रैन बीच का परा । तुम निसरे की काहुव हरा ॥
 राजा पर बहुतै दुख बीता । धरा उठाइ देस की रीता ॥
 है राजा की काया सगरी । मन नाही मूनी है नगरी ॥
 है मन पै मन हाथ न ताके । धन से हाथ बीच मन जाके ॥

आयु आत्मा जीउ है, तुम मानिक मन ताहि ।

मन कारन जिउ नोस दिन, उठत कराहि कराहि ॥६८॥

मानिक सकल अवस्था कहा । चित्त अचर्ज बीच होइ रहा ॥
 कहा भलो भा तुम सुख पाया । मायापूर हाथ कहँ आया ॥
 एक करम तुम भलो न कीन्हा । आपन सुध न पिता कहँ दीन्हा ॥

मात पिता कहें जो रहमावा । सो वैकुण्ठ मुकुत फल पावा ॥
जासो दुखी मात मन रहा । भरत बार सो बहु दुख सहा ॥

सावित्री के पाय तर, है वैकुण्ठ अनूप ।

जो सेवै सो पावै, राक होइ की भूप ॥६९॥

मात पिता सँग करहु भलाई । करता की अज्ञा अस आई ॥
जो अपने आगे बिधाही । उन्हें बात वह भापहु नाही ॥
और न कीजै उन्हें निरास । उन नित मागु सरग सुख बामू ॥
एक बात मो कहा न कीजै । मुनि यह बात विस्र सो लीजै ॥
जो तेहि कहै कि जगत नभारा । पूजु ब्रह्म दमर करतारा ॥

सिर्जनहार एक है, काहू जना न मोइ ।

आपन काहूँ सो जना, वह समान नहि कोइ ॥७०॥

मानिक कहा परेवँ अस ठाऊ । गा मोहि बिसर आपनो गाऊ ॥
काम क्रोध भरमित औ भाया । सेवा करै लागि मैं पाया ॥
वै सब मेवा से बस कीन्हा । रानी रमा मोहनी दीन्हा ॥
कबहु समुझि परै जब देना । गुपुत होठ बैरागिय भेसा ॥
पल एक रहठ फेर फिरि जाऊ । मन सो उत्तरि जाइ वह ठाऊ ॥

माता पिता की प्रीत मोहिं, है मन बीच समान ।

चाह देइ औ लेइ कै, चाहत रहा परान ॥७१॥

पुन मानिक मुख चाद अजोरा । कीन्ह चकोर पवन की ओरा ॥
पूछा निर्मल पुर को छेम् । पाय पवन ऊह उपजा प्रेम् ॥
कहा पवन निर्मलपुर ठाऊ । कुमल अहै रातर के नाऊ ॥
प्रीत तोहार यवै सब हियरें । तन सो दूर जीउ सो नियरें ॥
दे जय लग तन नियर न होई । कहा अघात मिलन सो कोई ॥

दरसन मिलन न एक है, एक होत जो प्रान ।

नैन काँट के देगें, घायल होत निदान ॥७२॥

मानिक कुसल बात सब पायेठ । दोऊ कहँ द्वारे छै आयेठ ॥
 सुन्दर ठाठ बसेरा दीन्हा । बहुत प्रतिष्ठा आदर कीन्हा ॥
 जाना सबै देस के मानुष । आए हैं मानिक कहँ भा सुख ॥
 पूछहि चित्तहु तें सब कोई । केतिक पन्थ बीच मो होई ॥
 हम आतमा पूर कर नाऊ । सरवन सुना न देखा ठाऊ ॥

कहा बहुत अनधीच है, दूर आतमापूर ।

रवि समीप जिमि किन सों, काया सों है दूर ॥७३॥

बरती रहेठ पन्थ जब लागेठ । बूझेठ कए बर्त कहँ त्यागेठ ॥
 बर्त तजा चाहै सब कोई । जब मगु तीन देवस कर होई ॥
 मैं तो बहुत देवस कर सघर । आयेठ कादि सिन्धु बन भूधर ॥
 अब तो सहा पिए सब चाखठ । तैसें केर बर्त कहँ राखठ ॥
 बर्तहु ते सुख जात न केरा । अहै निजोग असूरत केरा ॥

बर्त राखि बिनु जाने, जो जल की अनखाह ।

जानि लगावै तेल जों, इनसों बर्त न जाइ ॥७४॥

रजनी एक प्रीत छै हियरें । गयेठ पवन मानिक के निपरें ॥
 आदर सो मानिक वैठावा । चहू ओर की बात चलावा ॥
 जब भा करन गुलिक सो छूटा । हीरा की सुघराई पूछा ॥
 कैसो गुन कैसो सुघराई । कैसो धन की सुन्दरताई ॥
 कहा बहुत गुन है तेहि माहीं । हीरा गुन सो छूटो न ही ॥

सूधर सुन्दर बिमल तन, बिमल सहज है ताहि ।

तेहि का पूछै चाहिये, रम्भा चेरी जाहि ॥७५॥

का बखान हीरा कर करज । बरनि न पारौ जखल मरऊ ॥
 चरन सीस नहि सको सराही । चाहिय जैसे तेसो आही ॥
 पदुम रूप प्यारी पद परा । अपने काल पाव गहि धरा ॥

धन सो जो पगु गहिके राखै । टारै नाहि सोई फल चाखै ॥
 फाटै सर्प आइ पगु माही । निसरै जीउ गिरे पै नाहीं ॥
 हैं चैरा तेहि चरन को, जेहि ऐसो पगु होइ ।

पन सम्हारि कै राखै, सकै गिराइ न कोइ ॥७६॥

वह रम्भा करो जस रम्भा । नाहीं जुगम कनक को रम्भा ॥
 जय लग वह दिन आवत नाही । जा दिन उरो उरो लपटाही ॥
 तब लग चित्त चढी वह करो । कवन सम्भ रूप की मूरो ॥
 कटि नाही जनु काया धरा । मानहु सुन्न बीध मो परा ॥
 दुर्वल है वह प्रेमिय नाही । तेहि नित चिन्ता धन मन माही
 अलकावर औ कट सों, परा एक दिन याद ।

कट चाहै अप महिमा, लट आपन मरजाद ॥७७॥

पहिले कट अस लक सो कहा । तेरो सोभा मेरि सो अहा ॥
 है प्रेमी लोगन को फाड़ । है मै निश मुख तेरो चादू ॥
 बहुते तोहि पाछे मैं धाई । सील प्रीत न एकै पाई ॥
 सुनिके भयेउ लक मन छोभा । टेढ़हु सीलवन्त कहु कोभा ॥
 जद्यपि तै कछु सील सु बाचा । सीस पाव कथा तब खाचा ॥

ऊंच नीच जैसे मगु, तैसे तेरो भेस ।

फनी गरलधारी तैं, काटस देस कलेस ॥७८॥

अति क्रिस् उदर पियारी पाया । निर्मल बदनै बीध न आया ॥
 माना उदर सो जननी वारी । भाग भरी सुन्दर सुकुमारी ॥
 भागवन्त उदरहि सो होई । जनमै भागवन्त जो कोई ॥
 उदर रहै मो सिंसू दूसरा । तेहि नित उदर न सिर महि घरा ॥
 जेहि अभाग पाछे सो लागा । माता उदर सो होइ अभाग ॥

भागवन्त है हीरा, है हीरा जग माहि ।

हियरा हेरा पिथि मो, वैसो कोऊ नाहि ॥७९॥

उर धधु कर सदूक समाना । हीरा रतन अनेक समाना ॥
 घूक भई सदूक न होई । खान रतन भानिक को सोई ॥
 मुल एक करता सो मागा । भम उर खोल न आवै खागा ॥
 जा पर करता दाया धरेऊ । ता उर चीर जोत सो भरेऊ ॥
 जाके उर मो प्रीतम बासा । प्रीतम कहू रहै है पासा ॥

जेहि करता उर खोला, ता कहँ दीन्हा जोत ।

जोत निघर है सोजन, यह श्रीपा सों होत ॥८०॥

उर महँ उरज बिराजै कैसे । गगा जल दुइ बुझा जैसे ॥
 बाए दिस उर के मन परा । कमलज कमल साज जनु घरा ॥
 हाड न पायेउ मन मह कोई । हाड हस्ति के मन महँ होई ॥
 बल समेत है मन प्यारी को । मन जेहि बल सोई मन नीको ॥
 विन्ता सेग बहुत जो करई । तेहि मानस अबलै होइ परई ॥

अजा दुग्ध महँ माती, पीसि पियै जो कोई ।

भासे चार तीन दिन, सफल तेहिक मन होइ ॥८१॥

जेहि काहू के होइ न होनी । कहा चढ़ै तेहि कर महँ मोती ॥
 जानै जेठी मधु एक तोला । मूंगा भासे चार अमोला ॥
 कीना पीसि गाय पय नाही । डारै पिलै रहै दुख नाही ॥
 इहौ न पावै चालिस मासा । लेइ आवरा मन बल आसा ॥
 बोही मान धनिया लै आवै । पीसि खाइ रम माइ मिठावै ॥

रात देवस जो पीचै, बली होइ मन ताहि ।

कहा सरीर बखानत, ओपद रहेउ सराहि ॥८२॥

है सोभाधारी कर प्यारी । प्यारी कर मत छेत निसारी ॥
 तेहि कर बीच हिया सब केरा । लीन्हि या मन कीन्ह बसेरा ॥
 जघ लग जग न रहा तन दीठा । गिहु मीन सँग आइ बईठा ॥

जय परगट भा मानिक हाथा । तजा गिट्टु सफरी को साथा ॥
 यह मानुष कर सो को पारै । गिट्टु उतारै मीन निसारै ॥

हाथ पांच सों बाद भा, दोऊ चतुर सुजान ।

भुजा आपवो देखि कै, भा कर मन अभिमान ॥८३॥

हाथ कहा सुनु चरन भुलाने । आपन औगुन भा पहिचाने ॥
 आद मनुष आ दिन जित पावा । जित लका ताइ तेहि आवा ॥
 देखा पाव गिला वा माही । रहेउ जनन्द हिये तेहि नाहीं ॥
 स्नोतन घीब सघट तेहि आयेउ । यह मित पग ऐसे निखायेउ ॥
 की कयहू बिसरावस नाहीं । आपन चरन केर जग माही ॥

हाथ बात सुनि कै चरन, कोपा कर उपरांह ।

बाह भुजा बल तोहि भयेउ, पाव हमारो बांह ॥८४॥

पुन कर कहा बात कहु सोई । अपने जोग बात जो होई ॥
 मैं खरग औ घैसाखो पावा । तैं पनही यह चान परावा ॥
 दुर्जन लोग सर्प जो ढीले । घैसाखी अजगर होइ लीले ॥
 तेहि जो बिसल भुम्नि होइ रहा । मनहीं अलख निसारै कहा ॥
 पाव कहा जहा चाहौ जाऊ । अन्त पाव के परसि पराऊ ॥

हाथ कहा मैं हों बली, तैं निबल सुकुवार ।

कर सो दान को देत है, औ मारै तरवार ॥८५॥

धन अगुली धन की रतनारी । मनहु रकत सह घोरि निसारो ॥
 अगुली ललित अनूप अनूठी । कीन्हा जग को हिया अगूठी ॥
 सकल सिष्ट रचना जेई कीन्हा । लाभ बहुत अगुलिन सो दीन्हा ॥
 जेइ दरसन करता को पावा । ताकर अगुली जल बरसावा ॥
 सो सकल अगुली सो मारा । भा दुइ खड चन्द उजियारा ॥

नख दस चन्द सपूरन, धन के हाथ मभार ।

कस न होइ बट धन सो, सख मन्दिर उजियारा ॥८६॥

धन को पीठ विमल विधि कीन्ह ॥ सब दिस पीठ मान से दीन्ह ॥
जयदिस पीठ देख जो कोई । सकल सिद्धि तेहि बस मो होई ॥
टेढ़ी पीठ धनुक सम आही । मारे बान डरा तेहि चाही ॥
पीठ भीत है पाव पसारे । जो बैठा से बहुतन मारे ॥
कुहर हँसी न कोऊ करई । चाहै भार बाध सिर धरई ॥

सुद्ध पीठ होरा कर, दीन्ह सिरजनहार ।

चितवन नहीं मान सों, मुख जोवन संसार ॥८७॥

सुन्दर गीठ गोल अति नीका । प्रगटै नाग लता की पीका ॥
गीठ रूप अस अलख सवारा । जगत गीठ मो फादा हारा ॥
सभै गीठ राखा तेहि सेवा । का मानुष का राकस देवा ॥
जेहि पूजा करता कर होई । रिपुसे गीठ न राखा गोई ॥
जो करतार पन्थ से फीरे । लोह फाद तेन के गल हीरे ॥

होइ कै सुमन हाथ कहं, बांध न गीठ लगाइ ।

बहुत न छोड़ा चाहिये, बैठसि हियें तबाइ ॥८८॥

मुख ससि है ससि है बस माहा । बह ससि है ता मुख को छाहा ॥
ऐसे बदन वही कह छाजा । अपने हाथ अमृत साजा ॥
जेहि सनमुख भा सिर्जनहारा । तजा मुक्त सविता उजियारा ॥
सिर्जनहार ओर मुख लावा । रवि ससि अथवन हारा पावा ॥
नास बदन की छाई होई । ससा रक्त जो लावइ कोई ॥

सिरिस छाल सित जीरा, स्याम तिलहि जल घाल ।

पीसि मलै छाई पर, नास होइ ततकाल ॥८९॥

मुखपर अधिक स्याम तिल सोहा । रति तिलोत्तमा को मन मोहा ॥
भलो चिबुक पर सेद सोहाई । वह जल बिनु जग प्यास न जाई ॥
विद्रुम रंग अघर धन केरा । है मधु को तेहि धीघ बसेरा ॥

साह कहा की मधु है सोई । की विद्रुम की मानिक होई ॥

छलित अघर औ रद उजियारा । है जेने ईगुर औ पारा ॥

दाडिम बीज दसन कहा, की मोती लर होइ ।

को है नपत अंजारे, तेहि बरनै सब कोइ ॥६०॥

एक दिन अघर तेहिक भा पायल । घाव रदन से तापर आयल ॥

अघर दसन से कहा सुनाई । हवितै हाड करसि धरियाई ॥

है मैं लाल लाल सब चाहैं । अधिक गुलिक से लाल सराहै ॥

लाल जो तीन भाति का होई । जो जामैं जानै पै सोई ॥

मेघ असम तै हिम तेहि सासा । सीतल सास को का बिस्वासा ॥

कपटी छली होसि तैं, तोसैं को पतियाव ।

महा मुन संग छाडै, लगत गरब को घाव ॥९१॥

रहन कहा का आप भराहे । नहि बखान को अन्त निबाहे ॥

जो तै लाल अहौ मैं मोती । सोरह बरन होत ससि गोती ॥

मेघ असम को सीत भलो है । सीत चहै जो मनुष जलो है ॥

सपवन्तिन के गर मह ठाऊ । पाये मम नहि भावउँ साऊ ॥

पिता सिन्धु ससि बन्धु हमारा । मिसअधियार जेहिक उजियारा

तै सूखा सोनित हसि, कवन लेई तुव नाउँ ।

जो पहिले भूपन महं, होइ न मेरो ठाउँ ॥९२॥

तै ईगुर अस मै अस पारा । पारा सोई गुर अवतारा ॥

तैं साखा मे मूल अमोला । का मोहि साथ बाद मैं खोला ॥

बहुते बन्धु सपातिय मेरे । एकै बन्धु सपातिय तोरे ॥

बोला अघर बहुन चलि जाहीं । एक सधाती बिहुरत नाहीं ॥

मैं सुत अहौ देवाकर केरा । जेहि अिन प्रीणी होइ अघेरा ॥

पिता दीप है दिन को, मैं रजनो को दीप ।

को पारै सरवर होइ, अस पित तनै समीप ॥९३॥

रसना अभी भरी घन करी । सुरतिय जेहि बचनन की चेरी ॥
 रसना औ रसना है एकै । तब रसना जब रसना फेकै ॥
 जो न कहू सो कहिये नार्हीं । भली नहीं मन सो मत जाहीं ॥
 जेई निद्रा रसना पर लीन्हा । बन्धु भास तेइ भोजन कीन्हा ॥
 झूठ न कहू कयहू जिम्मा सो । परजा है करता सबही को ॥
 स्वाद तजै जो रसना, घात न सुधरै जाहि ।

भूज सोंठ औ हरदी, मिर्च पीस मल ताहि ॥९४॥

सरवन है प्यारी को भला । सत्त बचन सुन भा निर्मला ॥
 बक्र सरवन को वेध जो भयेउ । वेग भयानक सबद न गयेउ ॥
 करन नयन सो उत्तम होई । पहिले सबद सुनावै सोई ॥
 घन के नैन अहिँ कजरारे । बाके मान सुरा मतवारे ॥
 नैन सोई जेहि लाज समाने । देख लजाऊ छुवत लगाने ॥

नासिक सुन्दर की रहै, करत अघर रस पान ।

दुइ सोंसा जासो चलै, एक ससिके एक भान ॥९५॥

दिन भर घन ससि सासा छेई । व्याध सरीर न आवइ देई ॥
 निस कह लेत भान की सासा । यह उपकार सकल दुर नासा ॥
 है धनु सीइ भौह कर खाचे । वेधा सबै न कोउध खाचे ॥
 बरुनी धान धनुक है भौहिँ । को तेहि दिस बिसवै होइ सोहिँ ॥
 अलक फनी जेहि फाटा भूवा । सहस फनी मो नीक न हूवा ॥

भाल दुइज को चन्द है, सीस बहुत है गोल ।

केस रात मुखससि समां, तारे गुलिक अमोल ॥९६॥

सुनि मानिक हीरा पर लोभा । बिसरी मन्द रमा की सोभा ॥
 भा मन मुकुर मन्द निर्मला । भयेउ बखान ताहि मिस कला ॥
 छाई मन मो छाई जाको । दिष्ट न परै गुप्त छुक्ताको ॥

चित्तहु आइ उपर सेाँ कहा । पिता तुम्है कारन दुख सहा ॥
तुम जीयत वह सहे कलेसू । अथ तुम चलहु आपने देसू ॥

पित्रन के उपवर्ग नित, भागीरथी सपूत ।

विश्रुपती लै आये, सहि दुख कष्ट बहूत ॥६७॥

थोरे दिन का मानिक प्यारा । चित्त पवन दुइ सर तेहि मारा ॥

रसना पाव लाग जा पायल । चठा उदास रमा पह आयल ॥

कहा सँकेत भयेउ वह ठाऊ । अपने जनम भुम्नि अब जाऊ ॥

यह सुख राजन अब मोहि छाजा । मोहि कारन दुख देखै राजा ॥

माता मोहि कारन नित रोवै । दुख सहि सुख आसू सेाँ धोवै ॥

येही काल उडि जातेऊँ, पच्छ होत जो मोहिं ।

दरसन मोर पाइ कै, परमद उपजत ओहि ॥६८॥

हान बहुत माना मैं मन मा । जेइ माता दुख सहि कै जनमा ॥

सेाँ मोहि काज कष्ट नित सहई । उर बिहराय रात दिन रहई ॥

धन वह सुत जो आयेउ तहा । मात कया घरती मो जहा ॥

रहा वह ऊट के ऊपर धरा । मात समुक्ति घरती गिरि परा ॥

हाथ पाव सेाँ बाधा रहा । नुबहू गिरा बिषा दुख कहा ॥

सुखमों रहत औ सुख सेाँ, सुखन मात कलेउं ।

लेखा दिन करतार कहं, कवन उतर मैं देउं ॥६९॥

बीते रात प्रात जब भयेऊ । गगनराय के आगे गयऊ ॥

पहिले प्राज्य बखान सुनावा । केर गवन की बात जनावा ॥

गगन कहा यह देस हमारा । है तोहार औ सब घर बारा ॥

कहा पयाना अवहि पियाना । सघत रस मानस न अघाना ॥

चलन तवै जब चलन तुम्हारी । लखि अघाइ तब चलन हमारी ॥

राज पाट और सेना, तुरै ऊँट सुँडाल ।

है तुहार सब बेलसहु, भा करतार दयाल ॥७०॥

मानिक कोमल घात निशारा । सीस नयन पर कहन तुम्हारा ॥
 तुम हमार सब आदर कीन्हा । पूजी दीन्हा कुञ्जिय छीन्हा ॥
 पै मानुष जो आये देसी । मात पिता के अहिँ सँदेसी ॥
 पिता आतमा उत्तम सुखी । मोहि आत्मज कारण भा दुखी ॥
 मातु रोइ बखु रोवै चाहत । सठै कराहन काया दाहत ॥

अबनि देस मोहिं दीजे, करुं पयाना देस ।

मात पिता से भेंट कहँ, भयेउँ बाबुरो भेस ॥१०१॥

गगन कहा मानिक फरकीन्हा । मानिक रमा गवन कै दीन्हा ॥
 दीन्हा बहुत तुरै औ हाथी । बेरी बहुत रमा की दासी ॥
 करत पयान आतमा पूरु । आइ निकट भा रहा नें दूरु ॥
 मानिक के अशुक की बामा । जाना पवन पिता के पास ॥
 हरित भयेउ आतमा हीया । जनुमिर्तत जिउ पाएँ जीया ॥

लोगन आइ जनावा, आवत मानिकचन्द ।

गोहन लेहे रमा दुइ, सकल हरप को कन्द ॥१०२॥

जुनि राजा आनन्दित भयेउ । जानै कहँ आगे बलि गयेउ ॥
 नगर लोग मानहु जिउ पावा । रहसि रहसि घरसो सब धावा ॥
 मानिक पाव पिता के परा । हिर्द लाइ पिता तेहि धरा ॥
 कहना रस तें रोयन दोऊ । भए सजल अम्बुक सब कोऊ ॥
 आसू ढारे सो रहसाने । दोऊ हिर्द कमल बिकसाने ॥

सहित बधावर नगर कहँ, आए दोऊ भूप ।

नेछावर मानिक गुलिक, दीन्ह देखि सुत रूप ॥१०३॥

रमा रमा सम भन्दिर माही । पायेउ घास रहा दुख नाही ॥
 मानिक आयेउ माता नियरें । भै अनद माता के हियरें ॥
 सावित्री के नैन जुडाने । तन मन प्रान बहुत रहसाने ॥

धन सो जेहँ यह जगत बनायेउ । पुत्र धिछोहा फेर मिलायेउ ॥
नदी एक सुत डारै कहा । डारा मात तेहिक दुख सहा ॥

तनु जब चाह नदी सो, डारा ऐसे ठौर ।

सावित्रिहि तेहि दीन्हा, दुग्ध न अँचवा और ॥१०४॥

दिस दस पाच शीत सुख माहों । सबे निटे पवन कहँ नाहीं ॥

गयेउ आसना आगे सोई । जासो काज व्याह कर होई ॥

ठपाह करै की यात जनावा । अज्ञा व्याह रीन कै पावा ॥

औ कहि आयेउ अब मैं जाऊ । जनम भुम्नि निर्मलपुर गाऊ ॥

जाइ उहा यह यात जनावउँ । व्याह रीत कारज पर धावउँ ॥

अज्ञा दीन्ह आतमा, पवनहि भयेउ हुलास ।

चित्र मागि कै लोन्हा, आयेउ मानिक पास ॥१०५॥

सून सदन कै चित्र देखायेउ । देखि चित्र तेहि मुरुठा आयेउ ॥

जब भा चेत भयेउ अनुरागी । काया आग प्रेम की लागी ॥

रूप रमा तेहि चित सो भूला । हीरा रूप फूल मन फूला ॥

कहा पवन मोहि लेवलु तहा । निर्मलपुर हीरा है जहा ॥

भूलें एतो दिन मैं खोवा । भिगै छाहि अरुफानेउ तोवा ॥

मैं अपराज न जाना, है ऐसो वह रूप ।

रीझेउँ मैं प्रतिधिम्व पर, तजि कै देह अनूप ॥१०६॥

पवन कहा अब जनि अगुताहू । नियरें भयेउ तोहि लगि ठपाहू ॥

काहू सो मन मरम न कहऊ । मानुष मो मानुष अस रहऊ ॥

साचो जीउ तोर अकुलाना । जलधि कवडल बीच समाना ॥

अब अस गहिकै आपुहि राखहु । काहू के सँग मरम न ज्ञापहु ॥

सूरी चढा भेद जेइ भाषा । याचा सो जेइ मन मो राषा ॥

मैं अथ जाउँ अगाऊ, चित्त तुम्हारे साथ ।

अगुव होइ लै आईहै, होइ मूल तोहि हाथ ॥१०७॥

पवन पयान पवन सम कीन्हा । निर्मलपूर आइ सुध दीन्हा ॥
 रहसा राजा रहसिन रानी । सब रनिवास रूप रस सानी ॥
 रहसी हीरा रहेठ न धीरा । हुकुल न आवै हुलसि सरीरा ॥
 रहमी सखिया संग की चेरी । अलबेली बेली चम्बेली ॥
 राजा रहसि बियाह पसारा । होन लाग सब मंगलचारा ॥

नेवता लोग कुटुम्ब सन, रचा चित्र सन ठाउँ ।

घर घर मोद हुलास भा, यह निर्मलपुर गाउँ ॥१०८॥

उहा आतमापुर महँ राजा । ब्याह पमारा बाजन बाजा ॥
 सोगी भयेठ रमा कर जीऊ । सबत लियाइहि मोहिपरपीऊ ॥
 परगट हँसै गुपुत महँ रोवै । यह चिन्ता सो रैन न सोवै ॥
 कहै सहेलिन सो हो सजनी । रजनी बीच करत दुख बजनी ॥
 दूसर होत पीठ कर व्याहा । सबत सत्रु मोहि ऊपर चाहा ॥

सखी बुझावै हो लली, दासा पिय की तोहि ।

रानी बुझा चाहिये, सेवा कीजे बोहि ॥१०९॥

मानिक साय कटक दी राजा । व्याहन भेजा बाजन बाजा ॥
 मारग कठिन काटि कै गयेऊ । बिसत चतुर अगुवा तेहि भयेऊ ॥
 निर्मलपूर देखि हरखाने । सब मनमानिक रूप समाने ॥
 धधराहर चढि हीरा देसा । रीफ रह्य धन जीउ सरेखा ॥
 मानिक कटक बरात रँगौली । देखि रही मन रीफि छबीली ॥

भा बियाह गठबन्धन, हीरा मानिक संग ।

एक ठाउँ दोऊ भये, अरुमाने रस रंग ॥११०॥

आगे कथा न भापै पारत । छँका नीद नीद किमि मारत ॥
 जस हीरा मानिक वर पाया । वर वर संग अनद मनाया ॥
 बस रानी तोहि फुअर पियारा । बेग मेलावै सिर्जनहारा ॥

इन्द्रावति जब सुना कहानी । अधिकी भई बेपाकुल रानी ॥
 कहा सखी सो तीसर रजनी । कहै न फेर कहानिय सजनी ॥

अधिक कहानी के सुने, घाढ़त घिरह बियोग ।
 अथ तो अलख दयाल होइ, आप मिटावे सोग ॥११॥



[१६] विरह अवस्था खण्ड

धन सो धन जेहि विरह बियोगू । प्रीतम लाग तजै सुख भोगू ॥
 नेह बीज मन धरतिय बोवै । रैन न सोवै दिन कहँ रोवै ॥
 धन जेहि जीउ होइ अनुरागी । धारै प्रान सो प्रीतम लागी ॥
 तजै भोग सुख सुमिरन नाही । जागी निशि कहँ सोवइ नाही ॥

धन सां जन धन मन तेहिक, जाके मन दोहाग ।

परै दोह की आग सो, मानस भोसै दाग ॥१॥

रोइ दीप सुत डारै धोई । अभिलाषिन अनुरागिन होई ॥
 इन्द्रावति सुकुमार कुमारी । भार बियोग परा तेहि भारी ॥
 प्रेम सरीर बेधाप बढ़ाया । दूबर पीत भयेउ धन काया ॥
 पान न खाय न पीवै पानी । भूख पियास भुलायेउ रानी ॥
 आकुल भई रात दिन रोवै । बदन करै रक्त सो धोवै ॥
 प्रेम आग तन काठिय जार । सारै चाहा मन को पारा ॥

भइउ दूयरी रानी, भै बिघरन तन रग ।

धिरिन होइकै लागेउ, व्याध अंग के संग ॥२॥

दुर्बल भइउ व्याध सो नारी । बल चटि गा भा जीवन भारी ॥
 चित्त ध्यान प्रीतम पर राखा । चाखा प्रेम बढेउ अभिलाखा ॥

वैरागिन कीन्हा वैरागू । अनुरागिन कीन्हा अनुरागू ॥
 सुमिरै सोवत बैठी ठाढ़ी । मन अममर्थ अवस्था बाढ़ी ॥
 प्रेम भुंकोर भयेउ तेहि सीसू । वैरी बूझै निस रजनीसू ॥

सुख भयेउ दुख दायक, सुध मति रहेउ न साथ ।

परी जगत प्रानेसरी, जडता केरी हाथ ॥३॥

सुन्दर बाफ बनाक न प्रावै । गगन चाक उदयेग सतावै ॥
 धिरह आग सो भै उर दाहू । धन ससि कहँ भा मन्दिर राहू ॥
 भावर छाय न सिच्छा मानी । छिन छिन कहै आन की बानी ॥
 उल्लास सो रोवइ हँसई । आसू धरती मोती खसई ॥
 जियत रहइ घेयान के बाहा । ना तो होत मरन पछ माहा ॥

धन कहँ अंतरपट भयेउ, गगन ऊँच महि नीच ।

छाडि सकल धधा कहँ, परि गुन कथन याच ॥४॥

वह राखल जग मित्र नखेला । मन परान कहँ कीन्हा चेला ॥
 वह बिदग्ध सुकुमार पियारा । रूप गगन सविता लँजियारा ॥
 चिन्ता कपन बीच धन परी । चिन्ता करै घरी औ घरी ॥
 केहि उपकार दरस वह पावत । केहि उपकारे के दिग धावत ॥
 होत भलो होतिरै जरि छारा । देह चढावत राखलु प्यारा ॥

बडो भाग सारंगी, रहती प्रीतम पास ।

मोहि कलेस चिछुड़न को, है प्रछन्न परकास ॥५॥



[१७] ओषद वर्नन ।

हाटक रग पियारिय काया । विरह धियाध मित्र रग पाया ॥
 दूधर भै दूधर जित भयेउ । थिलिया बिलंकूप हे।इ गयउ ॥
 एक दिन मन्द जरानी रानी । सधके मन मह सोच समानी ॥
 नारिय एक घरा घन नारी । कहा पित्त जर है तोहि प्यारी ॥
 दुख तन महुँ जानत मय कोई । वाय पित्त औ कफ सो होइ ॥

नसा चलैजा काग गत, पित्तहु ते पहिचान ।

मैंडक रक्त मार कफ, वाय जौंक गत जान ॥१॥

जो तीतर लावा गत होई । सन्नपात सो जानहु सोई ॥
 चलै धीम जो नसा पियारी । जानहु सीत देह दुख भारी ॥
 मुक्क कटुक जो रहै तुम्हारा । पित्त जान दुख आय पसारा ॥
 सूखे अधर नयन पियराई । मुर्छा दाह पित्त सो पाई ॥
 जो खासी औ स्वासा होई । कफ सो कहैं बयद सब कोई ॥

मुख मीठा तासो रहै, होइ भूख कर नास ।

होइ दुग्ध धधि तल्ल सों, प्रगटै फागुन मास ॥२॥

जो प्यारी मुख फीका होई । जानहु अहै वाय सो सोई ॥
 होइ वाय सो कूखी देहा । निद्रा नासै उश्न सनेहा ॥
 तुम्हैं पित्त जर काया घरा । ले चन्दन औ पितपापरा ॥
 सोठ उशी निर्लोचन लीजे । मोथा सँग करि सगे कीजे ॥
 काढो करिके पीजे प्यारी । तजै पित्त जर देह तुम्हारी ॥

कटुक तिक्त के खाये, रहे अनल के पास ।

पित्त बढै औ परगटै, तुला विर्ष के मास ॥३॥

कन्या तुला मेघ विर्ष माही । पित्त बढै यह मिथ्या नाहीं ॥

कुम्भ मीन महँ कफ औनरई । मारुत राज मास पट करई ॥
 मिथुन कर्क औ सिध मफारा । बढै बिले धनु मकर बयारा ॥
 उपजत धाय बत्त के सार्धे । हिक्का छोक बवै के बाधे ॥
 पिन्ता किहे रयन के जागे । सोत सरीर साभ के लागे ॥

अजमोदा चितरकना, पतरज धायभिरंग ।

सँधा सोठ अ/फला, नासहिं मारुत अंग ॥४॥

मोधा नीय चिरायत बासा । पीतपापरा पित कहँ नासा ॥
 तज जावित्री लीग सोपारी । कफ काया से देहि निसारी ॥
 जो जर देह पित्त से होई । मुर्छा त्रिषा बढावइ सोई ॥
 बवन अरुच औ ऊभै सासा । होत होइ जब कफ जर नासा ॥
 मोथा औ पटोल दल आनी । त्रिफला औ त्रीकुटा सयानी ॥

नीय की छाल चिरायता, आनै फेर गिलोय ।

सकल टाक भरिकै कढा, पियै नास जर होय ॥५॥

उपजै देह धाय जर जाके । होइ कम्प जमुहाई ताके ॥
 मोह भरम औ मुख कझाई । औरो माच होइ अधिकाई ॥
 अजया सोठ चिरायत कना । सोचर निरबहि घूरन बना ॥
 मारुत जर यह जूरन हरई । प्रात मसै जो भोजन करई ॥
 तान देवस ताई हो प्यारी । देहु न ओपद जानि दुखारी ॥

घट्ट न सोऊ देवस कह, थोर न रैन मझार ।

खाहु न उदर भरे पर, पियहु न निस कहं धार ॥६॥

एक सखी पूछा तेहि ऐसे । त्री दुपजर को ओपद कैसे ॥
 सीत ताप और रस जर केरा । का ओपद है मो मन हेरा ॥
 कहा होइ जो त्री दुप तापा । सूखै जी अदाह औ भापा ॥
 मोथा गुर्च शिवापा परा । कुटकी और उसीनि धरा ॥

फेर रक्त चन्दन कह लीजे । टाक टाक भर काढा कीजे ॥

तीन देवस लग पीजे, त्री दुख को जर जाय ।

सोचर अजमोदा शिवा, रस जर देइ मिदाय ॥७॥

यह तीनों रसजर के नेती । पीस पिये तपसोदक सेती ॥

गुमा सोढ गुर्व औ कना । जलसो पियै सीत कह बना ॥

पीपल हँरँ औ आधरा । चितरक सँधा ऊपर धरा ॥

चूरन करि कै जलसो पीये । जाइ सरब जर सुख मो जीये ॥

होइ छुधा तब भोजन कोजे । राखि छुधा भोजन तकि दीजे ॥

ऐसो करहु निरंतर, होइ न कयहु दुख ॥

औपद येही घडी है, भोग करहु औ सुख ॥८॥

एक कहा कीजे हो प्यारी । बाय पित्त कक जनम बिचारी ॥

कहु पर्क कीति बाय पित केरी । औ असलेपन की हो चेरी ॥

कहा बाय को जेहि अब तारा । बहुत बचन है भापन हारा ॥

पच इन्द्र तेहि हाथ न रहई । कहै न जोग बचन सो कहई ॥

देसै जोग न जो कछु होई । ता कह अवस बिलोकि सोई ॥

अभिमानी निर्दाया, छोटे ताके नैन ॥

ताहि करम पसु ऐसैं, करँ सदा दिनरैन ॥९॥

जाको जनम पित्त में होई । होइ चतुर औ छानी सोई ॥

काहु जन को कहा न करई । जोग कोप मन मह अवतरई ॥

ताको सरन ताकि जो आवै । घोट देइ रँ ऊपर धावै ॥

खाय पिअै पर चाहत राखै । मधुर खटाई लटुता चाखै ॥

तेहि दुगन्ध सेद सो धावै । औ वेगे विगई आवै ॥

अरुन अनल सोवत में, देखै बहूतै सोइ ॥

करम सिध औ कपि को, परगट तासो होइ ॥१०॥

असलेखमी जनम है लाको । दायायन्त सीछ है नाको ॥

काज घीच धीर से होई । सय पर दाया रखी सोई ॥
 मात पिता औ गुरु की सेवा । करे सदा माने जस देवा ॥
 दुखित न होइ लाज से सोई । क्रोधहि रहै दुखी जँ होई ॥
 स्याम केस दीरघ चखु ताके । मवद बचन अश्रित रस बाके ॥

कुसुम बिलोकै सोवत, देखै हरियर घास ।

करम मयूर चकोर को, करै सदा गुन रास ॥११॥
 बोली तब इन्द्रावति रानी । लाभ की बात कही तुइ जानी ॥
 कहु फिर भेद कपट तोहि नाहीं । कैसे रहिये पटरितु माहीं ॥
 कहा हेमन्त होइ जब प्यारी । साहु सोठ होइ अज्ञाकारी ॥
 मिथ और बेदेही साहु । जाहा लगे अगिन ढिग जाहु ॥
 निसदिन पियहु ताल को नीरा । मर्दन कीजे तेल सरीरा ॥

कीजे येही सिसिर में, जाइ न लगै सरीर ।

शिवा खाहु पीपल सँग, पियहु ताल को नीरा ॥१२॥

मधु सँग अक्षया खाहु पियारी । ऐसे रहत बसन्त मो बारी ॥
 औ बसन्त मो मान पियारी । लीन्हेहु ठाव जो छाया धारी ॥
 चन्दन कुमकुम लाउ सरीरा । पिस दिन रैन कूप को नीरा ॥
 हँसि मनोरमा परा नेसरी । बैठ सुप्त सँग लै सुन्दरी ॥
 सुनिये मधुर राग औ बाजा । भोजन तीतर लावा छाजा ॥

ग्रीष्म रितु जब आवै, पित्त राज सय होइ ।

कैसहु फिरे न धूप में, ज्ञानवन्त जो कोइ ॥१३॥

बहुत धिळ से छहा जहा । कमल बिछाइ बैठ धन तहा ॥
 सीतल फूल कमल कर होई । जो लीन्हा मुख पावइ सोई ॥
 गुह सँग अक्षया भोजन कीजे । मधुर राग सरवन कहँ दीजे ॥
 घरपा रितु महँ भावत राजा । पोरहि जेवन जेउय छाजा ॥

घौराहर पर रहहु पियारी । निद्रा दिन भर राखहु मारी ॥
तपतोदक सीतल कै, पियहु हरै सब रोग ।

चन्दन औ घनसार कह, लाउ होइ सब भोग ॥१४॥

धूप बीच यह समय न जाहू । सेंधा साथ अमृता खाहू ॥

जब जग बीच सरद रितु होई । पित्त को राज कहै सब कोई ॥

यह रितु रक्त देह सो लीजे । औ उपकार छोर को कीजे ॥

पहिल पहर निस हो छबि रासा। घौराहर पर कीजे दासा ॥

गगन तरे सोइख भल नाही । खाह शिवा संग चातुर खाहीं ॥

सात देवम रितु में रहै, तब आगम रितु लेहु ।

छाड काज एहि रितु को, वहि रितु पर चित देहु ॥१५॥

कहि सब बात गई सब नारी । सरनी साथ कहा घन प्यारी ॥

जा के देह प्रेम दुख होई । ओषद करै न पारै कोई ॥

सुखी प्रेम के दुख का दुखी । प्रगट दुखी गुप्त है सुखी ॥

जा कहँ कुष्ट प्रेम का होई । गिरै न देख कीट कहँ सोई ॥

जब मन औ जिभ्या पर आयै । होइ अधीर प्रीतन मोहरायै ॥

आधा सीस पिराड जो, धरै बैद सो गोइ ।

मिटै नहीं ओषद सो, प्रेम पीर जोइ होइ ॥१६॥

रहा सनेह बिछै तर दाही । भै उदवेग हिर्द मो घोही ॥

अपने मन कहँ अन्त बुझावा । रे मन तोहि यह जीवन भावा ॥

मोहि भारी दूभर भा जिवना । जिवना हाथ रक्त मित पियना ॥

धक्रवाक नित रहइ बिछोवा । मैं निसदिन यह, जिवनित रोवा ॥

गगन सिध मोहि मिघ समाना । ताको बिछै बिछै मैं जाना ॥

जलज न काढै पायउ, रहेउ न कछुहु उपाय ।

अब यह जोउ देत हो, जलज सिन्धु मो जाय ॥१७॥

चित्त प्रीत मो मूरत लावा । तासो जापन बिया सुनावा ॥
 परेव प्रान मन ठूढी कूआ । उठत करेजा सो मित धूमा ॥
 दिन भा आग धूम भै रयना । मन भा सिन्धु मेघ भये नयना ॥
 मो मन नीन फँदे है प्यारी । वोहि बेसर लट मत्स्याधारी ॥
 तोहि मूरत को पूजनहारा । है यह ब्राह्मन जीउ हमारा ॥

जगत देवहरा बीच नित, ब्राह्मन जीउ हमार ।

पूजत है परचिन्त तजि, मूरत लिहें तोहार ॥१८॥

होत प्रभात प्रभञ्जन बहेक । कुभर सँदेस पवन सो कहेक ॥
 जा कहु पवन पियारी साधा । रहे न धीरज नेहिय हाथा ॥
 अब यह जीवन भलो न लागै । जात सिन्धु दिस प्रान तेयागे ॥
 मन सो आस घरत है सोई । अन्त देवस सजोगी होई ॥
 सकल कहा जो भाषित छाजा । यूहै चला सिन्धु दिस राजा ॥

चन्दन कीन्ह चरन धरि, समुझायेउ बुधसेन ।

पै न फिरा समुझाये, चला जलधो जिउ देन ॥१९॥

आइ परा गुरुनाथ गोसाईं । पन्थ बीच हस्तर की नाई ॥
 रूप देखि राजा पहिचाना । चरन परा बहु भाति बखाना ॥
 कहा नाथ को पन्थ देखावा । आगमपूर तुम्हें लै आवा ॥
 राजा कहा गोसाइय दाया । पायउ अगुवा तब मै आया ॥
 सकल आपनो बिया सुनावा । सुनि गुरुनाथ बहुत समुझावा ॥

तेरो जोग न पूजहै, जो बोचै जिउ देहु ।

आगमपूर आइकै, कवन लाभ तुम लेहु ॥२०॥

फेर सनेह बसेरा दीन्हा । आप गवन राजा पहें कीन्हा ॥
 उडा ययार सँदेस सुनाया । इन्द्रावति कहें मुछा आवा ॥
 सुरंगमुपेती ऊपर रानी । मुखी धाई सपिय सफानी ॥

हा हा कहि दै अग उठावैं । हे हो हाक लगाइ जगावैं ॥

ले गुलाय हिम बालक चन्दन । लावहि इन्द्रावति सुन्दर तन ॥

भयेउ न चेत रतन कहैं, किहेन अनेक उपाय ।

जीउ हाथ नहिं जाके, को तेहि सकै जगाय ॥२१॥

साफहूँ कहा मोक हम जाना । जो सरीर के रूप भुलाना ॥

जीउ बाज यह कला न होले । परै उपल होइ मन्द न बोले ॥

जीउ सरीर बीच जो चीन्हा । मो ससार जनम फल लीन्हा ॥

जग मो चित्र दीप भा सोई । हर बयार, सो ताहि न होई ॥

घरी एक पर जागी रानी । सखिन कहा काहे मुग्धमानी ॥

कहा सीस घुमरत रहा, दहु धाही केहि भाउं ।

रहा न जीउ हाथ मों, मुरछानिउं एहि ठाउं ॥२२॥

जग बखु रतन जोत, वह बाला । अँबवा उन्नमाद भै प्याला ॥

सुनि धाई रूपम्भा धाई । आइ अदभ ताहि समुझाई ॥

समुझु पियार चिन्त नेवारी । चिन्ता सो बाहै दुख भारी ॥

तैं प्यारी बारी राजा की । हारियत रहु तोहि सपत बधाकी ॥

नइहर नहैं का चिन्ता चीन्हें । आपन भेस चिन्त की कीन्हें ॥

गई आप रूपम्भा, प्यारी कहैं समुझाई ।

सुना बात धाइकै, आपन मरम छिपाई ॥२३॥

चेता देखि कुअर कहैं आई । इन्द्रावति सो कुसल जनाई ॥

मालिन इहा कुअर दुख भेटा । उहा नाथ जगपति कहैं भेटा ॥

चीन्हत रहा नाथ कहैं राजा । आदर भाव बहुत उपराजा ॥

अयेउ नाथ जगपति दरपना । नाथ मुकुर जगपत मन बना ॥

दरपन होत मरम मुख सृफा । राजा दुचित नाथ कहैं बूफा ॥

पूछा अहो गोसाई, बिजै कीन्ह केहि लाग ।

दरसन मिला तुम्हारी, बड़ी हमारी भाग ॥२४॥

दे अमीस घोड़ा गुमनाथा । जुग जुग ऊँच भाग को साधा ॥
 जो क्रीपा से पूछहु मोहों । आयन वचन सुनावत तोही ॥
 बिछै तरें जो राखल भेसू । फालिअर को अहै नरेसू ॥
 है कुलीन कुल घर को दीया । घरनिष्टी दाया मै हीया ॥
 राज दीप नित भयेउ पतगू । आएउ छाह राज रम रगू ॥

है कुलीन भूपत सुत, काजिअर को राय ।

राजा आज्ञा चाहिये, मोती काढै जाय ॥२६॥

राजा घात नाथ कर माना । राखा आदर बिने बताना ॥
 अज्ञा दीन्ह निसारहि मोती । है ताकहँ जो साहस होती ॥
 रहसेउ नाथ कुअर पहुँ आयेउ मुदित अनन्द सँदेस सुनावेउ ॥
 नाथ धरन राजा गहि परा । नाथ हाथ दाया से धरा ॥
 दाया कै आसीप सुनावा । राजा कुअर सभापन पावा ॥

द्वै असीस राजा कहं, मोती आवै हाथ ।

औ उपदेस वचन कहि, गयउ तहां से नाथ ॥२७॥

अनर जिया सोइ मर जीया । मन समुद्र मोती जो लीया ॥
 रे मरजिया कहा करु मोरा । है यह जग मे जीवन धोरा ॥
 पैठि जलधि मे जलज निसारे । प्रान प्रीतना ऊपर धारे ॥
 प्रेम समुद्र मरजिया सोई । जाको जिउ की लोभन होई ॥
 लाभा लागि से ता महँ हूँ । जो मोती हेरत नहि ऊँचै ॥

जोगी जोग समुद्र को, प्रेमी हित जल रास ।

मधि मोती काढत है, तन पूजत है आस ॥२८॥



[१८] मोती खण्ड ।

मोती काटै फारन राजा । चला सिन्धु दिम याजन घाजा ॥
 सग घले आगमपुर लोगू । कहैं मुरुज है चन्द सँजोगू ॥
 यह भय सखिन जनावा तहा । थिरह यीच इन्द्रावति जहा ॥
 धन को जिउ अधरन पर आधा । महादेव कहैं बहुत मनावा ॥
 हे महेस जो राजा जोगी । काटै मुकता होइ नँजोगी ॥

तौ तोहार मैं पूजा, करउं मँडप में आइ ।

होइ दयाल गौरिपति, कीजे आज सहाइ ॥१॥

कुअर ममुद्र तीर जय आयेउ । सेवक कहैं वेगहि हँकरायेउ ॥
 बिनै बहुत सेवक सो कीन्हा । प्रीत सुभाय दान तेहि दीन्हा ॥
 सेवक राजहि नाथ चढाया । सकल लोग करतार मनाया ॥
 रे दाता यह मोतिहि पावै । जीउ ममेत नीर कहैं आवै ॥
 हे यह उदधि महा हत्यारा । तुम दाया सो लायेहु पारा ॥

बहुत कहैं जेहि प्रेम है, तेहि भावत जिउ देत ।

अब जिउ वारै मित्र मगु, तय सुख जीवन लेत ॥२॥

जाकेँ प्रीत मित्र की पूरी । भा मनसूर चढा यह सूरि ॥
 प्रीतन जाको चीरा हीया । दीन्हा जेन हिया भा दीया ॥
 धिनु दुख सहे मिलत मुख नाही । मधु सुख अहै डक दुख साहीं ॥
 प्रेमी रात समैं बन ठाऊ । खोजै आग गुने हित नाऊ ॥
 जो पशु कहैं दस बरग चरावा । अत कामना मन कर पावा ॥

जो चाहै सोई करै, करता जाको नाऊं ।

डारि कृप में अंत कहैं, देह सिंघासन ठाऊं ॥३॥

राजकुअर सो सेवक बोला । सरम अपार सिन्धु को खोला ॥

जगपति मोतिय बटा हारा । जहा भुम्भिहत मिन्धु मभारा ॥
 पै जत राजा काढे आयेत । यूहेन बटा काहु न पायेत ॥
 हुधकी खाइ न काहुय पाया । हूय समुद्र न जीउ गँयावा ॥
 मोहि अस यूक्ति परत यह साऊ । बटा भयेहु सो दूरेइ ठाऊ ॥

होइ भाग जो दाहिनि, अलग्न दया पर होइ ।

तौ दधि दुनकी आये, हाथ म आवै सोइ ॥४॥

हुनिकै राजा उतर सुनावा । मोहि निउ देत उदधि महँभावा ॥
 पावत मुरुता पूजै आमा । न तो जिउ जाइ जीउ के पाना ॥
 जिउ पप ऊपर जो जिउ देऊ । केर न सरवँ मिलन रस लेऊ ॥
 ना चाहत है फूसल पेसू । जाइ जो जाइ रहै सग पेसू ॥
 अन्त मरत होइहै जग ठाऊ । कम न मरै आगेहँ मरि जाऊ ॥

है थाती इष्टा कर, है जो जिउ तन साथ ।

चाहत रहेउं दरस लै, सौप देउं तेहि हाथ ॥५॥

खेवक कहा न होहु निरामा । आसा है धीरज के पास ॥
 हेरन तारा पावन हारा । है यह कहा सुखज वैजियारा ॥
 जेहि कारज को बन्द दुवारा । खोलन द्वार अहै करनारा ॥
 जेहि चाहै मगु पर छे आवै । भूजी भय सो पन्थ देसावै ॥
 जा कहँ पन्थ लगावै नाही । चालिम बरप फिरै बन माही ॥

जा कहँ पुत्र पियारा, जग मो चिछुडा होइ ।

ता कहँ वसन वास है, प्यारा मेरवै सोइ ॥६॥

चिन्ता खेवक हिये ममानी । परी सरोजन अम्यर घानी ॥
 कमला अहै जादपति बारी । ताको है मुरुता रखवारी ॥
 जब कोठ राजा काढै आवहि । बटा आन ठावँ लै लावहि ॥
 कमला सो जब दाया होई । तब मोती कहँ पावइ कोई ॥

सुनि खेयक राजा सो कहा । अधिको अभिलाषी होइ रहा ॥

कहा कहा कमला सों, दाया प्रगटै आइ ।

अब उपाय कछु नार्ही, बूढ़ ब अहै उपाइ ॥७॥

तति सन बाव भकोरा बही । औघट जाइ नाव लगि रही ॥

ऐसो बही भकोर बयारा । खेयक नाव न फेरै पारा ॥

नाव दूर आखी सो गई । मानहु गुपुत सिन्धु मो भई ॥

लोगन जाना बूझिय नौका । लिखा न गिटे महीप करै का ॥

यह समुद्र मो बाच न कोई । का राजा का जोगिय होई ॥

आगमपूर नगर मो, किहेन पुकारा जाय ।

ना जाने केहि दिस गये, खेयक औ यह राय ॥८॥

प्रीतन मरम सुनत धन प्यारी । जस सास लै असुक कारी ॥

कहा सखिन सो मोहियिष दीजे। खाइ मरउँ एतो जस लीजे ॥

रे जिठ हसितैं कुटिल कटोरा । कसन चलमि जहँ साजन मेरा ॥

अरे जीठ दाया तोहि नाही । रहन तोर दूभर जग माही ॥

अरे भीषु लै आइ पराना । मोहि तजि साजन आप पराना ॥

देतिउं काढ़ कयासों, प्रान होत जो हाथ ।

बाज प्रान मन थल्लभ, प्राज क्रिछ जिउ साथ ॥९॥

बोली धीरा सखिय सयानी । हो न अधीरा मन मो रानी ॥

ता कहैं सुमिर जीठ जो दीन्हा । जगत रहा नाही है कीन्हा ॥

एकै ठाठ जो चार बिहगा । मारहु कूचि करहु एक सगा ॥

जो चाहे करतार जिआवै । चारि पसी कहैं बिलगावै ॥

सिन्धु लहर सो का नहि होइ । कोउ बूझत तट लागत कोई ॥

यह विश्वास न ओजे, भूठ अन्त कहैं होइ ।

जो यह आइ पुकारा, साजु न जानत सोइ ॥१०॥

इन्द्रावती कहा मुनु धीरा । वह जित है मैं अहं सरीरा ॥
जीव वोही यह जीव हमारा । वह जित से है जीवनहारा ॥
जित बिनु कैसे जीवइ काया । जत्र लग काया तब लग छाया ॥
यह काया परवारे जाहीं । जेहि काया की छाया नाहीं ॥
जाकर रहेव जोत से काया । ताकर प्रगटै कहवा छाया ॥

सखी मोहि समुझावहु, धीरज बांधि न जाइ ।

अब कैसे प्रीतम मिलै, दीन्हा समुद बहाइ ॥११॥

सुमिर पिपारी सिर्जन द्वारा । देख मिराइअ प्रीतम प्यारा ॥
मानुष मरि धरती से जाई । माटी होइ हाड छितिराई ॥
फेर जिआवै ताकहैं सोई । भूला अवराज ब्रह्म जो कोई ॥
आदि मनुष माटी से साजा । बहुर बुन्द से कुल उपराजा ॥
घालिस बालक ताकहैं दीन्हा । सकल सिष्ट पर उत्तम कीन्हा ॥

बोन्तिस अक्षर तापर, भेजा सिर्जनहार ।

तेहि करता कहैं सुमिरहु, मेरे मित्र तोहार ॥१२॥

गडल सखी तहैं बहिल बयारा । धन पूछा कहैं मित्र हमारा ॥
कहा न भँखिये रामा हियरें । मित्र घोर न स तैं है नियरे ॥
आवन आपा देहु बिनारी । आवैं प्रीतम सेज तुम्हारी ॥
हरपट ककल मित्र तुम्हारा । पट उठाइ करु है सँजियारा ॥
साखी कीजे सब गुन लहई । साखी परनद कुझी अहई ॥

है समीप वह प्रीतम, बरक तुम्हारे पास ।

वेगें मिलिहै तुम कहैं, राखी हियरें आस ॥१३॥

इहा उमित धन पीरा भयेऊ । उहा नाव अवघट बहि गयेऊ ॥
प्रेम आग राजा कर, माटी । लहर बढाइ समुद्रहि हाटी ॥
जारा अस जल रास सरीरा । जरिके खार भयेउ तेहि नीरा ॥

सिन्धु सुता से भरम जनायेउ । मोहि प्रेमी क्रिष्टान जरायेउ ॥
जो वह सीपज आज न पावइ । तासु हुतासन मोहि जराघइ ॥

छाडि देहु रखवारी, तौ मोती वह लेइ ।

नातो प्रेम हुतासन, मोहि न वाचै देइ ॥१४॥

तब कमला गोहन लै चेरी । देखा मूरत राजा केरी ॥

कहा अहँ मैं इन्द्रावती । तोहि मधुकर कारन मालती ॥

आ मानस तोहि कारन सोगी । मोतिय लाग न बूझइ जागी ॥

आइँ यह नित प्रान पिपारे । चलहु कलिजर साय तुम्हारे ॥

तोहि नित भयेउ निकेत सँकेतू । भयेउ नरक मोहि नाक निकेतू ॥

नाच बही जिउ बाँचा, मिलेउ उदधि को तीर ।

तजि मुकता को काढ़वो, चलिये प्रेम सरीर ॥१५॥

सुनिकै बूझा दरस भिमारी । होइ होइ यह कमला मयारी ॥

रूप न है इन्द्रावति केरा । है कमला सन मेरो हेरा ॥

कहा कवल दूसर है मोरा । ताके रग रग नहि तोरा ॥

बहा कहा पगु दारइ रानी । लज्जावन्ति लाज की सानी ॥

ना वह चरन न लक न हाथा । ना वह, नैन न भौह न माथा ॥

लाज भरा तेहि लोचन, इहाँ न आवट सोइ ।

तैं छल भेस धरै हसि, यह सब छल गति होइ ॥१६॥

कमला आवन नरम छिपावा । अतिसतवन्त कुअर कहँ पावा ॥

कहा कामना पूरन होई । तोहि सन नेही रहा न कोई ॥

दी असीस कमला चलि गयेऊ । आस कुअर के हिँदै भयेऊ ॥

पुनि खेवक खेचै पर आवा । मोतिय ठाठ नाच कहँ लावा ॥

सुमिरि कुअर करता कर नाऊ । होइ मरजिया गयेउ तेहि ठाऊ ॥

नूर मोहम्मद जाहि मन, होइ महा अनुराग ।

बूटै गहिर समुद्र में, अपने प्रीतम लाग ॥१७॥

जैसे युन्द समुद्र समझै । एकै होइ न तनु धिलगाई ॥
 तेसे निपं मरजिया मयाना । हुयकी खाइ समुद्र समाना ॥
 राहा नहि ममता के चाचा । परा गुलिक बटा तेहि हाथा ॥
 है उतिरान नाव पर आवा । भरिके मनहु फेर जिउ पावा ॥
 धूवै प्रेम सिन्धु जो कोई । निरतु समुद्र न बूझै सोई ॥

मन अनन्द सो खेचक, खेह लगायेउ तीर ।

आयेउ कुंअर नगर में, हुलसे सकल सरीर ॥१८॥

राजा सो सुनिरन सुधि गई । मन मो प्रान प्रीतमा भई ॥
 जाको सुनिरन निसदिन कीन्हा । सोई हियेहि बसेरा लीन्हा ॥
 मानस भयेउ प्रीतमा ठाऊ । भूलि गयेउ सुनिरन औ नाऊ ॥
 आपुहि जव वह मूरत जाना । सपने को मूरत पहिचाना ॥
 औ यह सकल जगत कहँ पाया । जल दरपन सपने की काया ॥

बोहि जिउ की काया सो, आपुहि पायेउ छांह ।

घट घट पायेउ आपमें, नहि पायेउ तेहि मांह ॥१९॥

जगपति आप सीप सुत लीन्हा । पुनितेहि सौपिकुअर कह दीन्हा ॥
 बोलिन जागनपुर के लागू । है यह मोती रतन सँजोगू ॥
 इन्द्रायति मन मो हुलसानी । हुलसे कुच कबुकि सकरानी ॥
 मुख पर छवि बाढी अधिकई । गइ पिपराइ भई ललताई ॥
 भयेउ परमदा परमद जेया । नै दुख नै सुख जे मुख देया ॥

छूटेउ बिरह अवस्था, ससि तें रजनी सार ।

निसमुख पयेउ दुखद को, भा दिन मुख जँजियार ॥२०॥

इन्द्रायति भय सखिन हकारा । बिहँसि सखिन सो बात निसारा ॥
 महादेव सम देव न दूका । पूजा काज करहु तेहि पूजा ॥
 लिये मण्डप सीतल बेरा । घाम तपै कुसुमाकर केरा ॥

सखिन घात रानी कर माना । फुलवारी मय कीन्ह पयाना ॥
 सब मिलि फूल चुनै पर भई । लैकै फूल मँहप कहँ गई ॥

रानी फूल चढावा, महादेव के सीस ।

पूजा रहा सो कीन्हा, दीन्हा सखीं असीस ॥२१॥

जैस मयक ईस के माथा । तस रयिकन्त रहै तोहि साथ ॥
 जस गौरी इस्सर कहँ प्यारी । तस पियप्यारी होसि दुलारी ॥
 जस सिय सिवा जीव काया सम । तस जिव काया तुम औ प्रीतम ॥
 कहै न पीठ जाहि बलिहारी । मात पीठ सम पीठ तुम्हारी ॥
 कह पोकरै साठ जन कहीं । जेवन देइ दोष तब नहीं ॥

बिछुरन यात न भापै, रहै तुम्हारे साथ ।

सँदुर सदा सोहाग को, रहै तुम्हारे माथ ॥२२॥

पूजा महादेव की पूजा । पूजा काल रहा नहिं दूजा ॥
 सब इन्द्रावति आनंद माहीं । आई घर बढि रथ उपराहीं ॥
 चन्द रहा चन्द्रारि मझारा । मुकुत मिलेउ कैमुदी पसारा ॥
 छूटेउ व्याध व्याह सुनि परा । मन आनन्द हुमँ भा हरा ॥
 छुटा बयाह परम को गाढा । अधिक रूप इन्द्रावति बाढा ॥

उपजेउ इन्द्रावती मन, मोद सकल सुखकन्द ।

उमड़ेउ उर निर्जर नदी, दीन्ह कलोल अनन्द ॥२३॥

रहसि रहसि सब सखिय समानी । आवहि जाहि जहा बह रानी ॥
 देहि असीस बखानहि सोभा । तोहि सोभावन्ती सम को भा ॥
 बहुत कलेस सहा तुम प्यारी । अब सुख आयेउ राजकुमारी ॥
 जापर प्रीत अमृत केरी । ता ऊपर है विपत घनेरी ॥
 अत विपत सहि सम्पत पावै । भोगसुखद तेहि दरस देखावै ॥

बहुत सहा तुम सकट, अथ नियराना सुख ।

रहसु पियारी नियरै, आयेउ सुख गा दुःख ॥२४॥

[१८] व्याह खण्ड ।

धन्य छ ह जासो धन प्यारी । होइ कत सग खेलन हारी ॥
 होइ सोहागिन प्रीतम पायें । पिय ढिग जाइ भी ॥ निहुरायें ॥
 माजें बढति सरीर बनायै । पिय रस लेइ पीठ रस पायै ॥
 निर्मल होइ होइ सुकुमार । पानो फूल को करइ अहार ॥
 माजे मह पर चिन्त नेवारै । निन प्रीतम को जाप सवारै ॥

सत्त सहित धन जो धरै, प्रीतम को अनुराग ।

प्रीतम अपने हाथ सो, धन कहं देइ सोहाग ॥१॥

निर्प सयम्बर लगन घरावा । सय काहु कह नेवत पठावा ॥
 भयेउ अमन्द अगमपुर नगरी । भइ सुद चरचा नगरी सगरी ॥
 बाजै लाग बियाहुत बाजा । जन परजन मन परमद बाजा ॥
 रचा चित्रसो मन्दिर द्वारा । लगेउ होन सो मगल चारा ॥
 सुप्त माँडव छायेन उपराहा । जासो होइ सुखर सिर छाहा ॥

ससि घदनी सय कामिनी, गावैं मंगल चार ।

लीन्ह अनन्द घसेरा, जगपत सदन मभार ॥२॥

इन्द्रावति माजे सँह भई । चिता मालिन नियरें गई ॥
 पूछा हियें लजानिय नाही । कैसें रहिये माजेय नाही ॥
 कहा रहो मन निर्मल कीहैं । चित प्रीतम प्यारे पर दीहैं ॥
 मन सो दूसर चिन्त नेवारी । पिय पर ध्यान लगावहु प्यारी ॥
 निस दिन मन को खेत बनावहु । पिय की प्रीत को बीरौ लावहु ॥

अल्प अहारिहु जीयै, सुमिरहु पिय को नाउं ।

रहौ अकेली रात दिन, प्यारी मांजे ठाउं ॥३॥

माजे मो न्द्रावति रानी । आइ असीसहिंसखिय सयानधी ॥

देहि अमीस सखी हित प्यासी । रमा निरन्त्र रहै तोहि दासी ॥
 हो प्यारी बिलसहु पिय प्यारा । पिय मेखत है सिर्जन हारा ॥
 जा सजोग चहा तुम रानी । भेंट तेहिक अब आइ तुलानी ॥
 व्याहु नसेनी मिलन सदन को । मिलै सिघर अब मिलन सजन को

सुख अनन्द सो रानी, बिलसहु पिया सजोग ।

भये कन्त सजोगनि, आवै कर सुख भोग ॥४॥

सखिन असीस बधन सुनि रानी । कहा पिता घर रहित भुलानी ॥
 खेलै कोइ में देवस बितायेस । कुलहू प्रीतन मरम न पायेस ॥
 खेलहि बीति गई लरिकारै । बाढेउ दरप होत तरुनारै ॥
 भूलित खेल सखी के साथी । चढेउ गगुन कर मानिकहाया ॥
 गुन नहि एक त्रास मोहि हियरै । कैसें होथ कन्त के नियरे ॥

हैं अज्ञान औ निगुनी, ज्ञान रूप वह पीउ ।

हाथ छूठ गुन ज्ञान सो, सखी सोच महं जीउ ॥५॥

मोहि गुन बुद्ध सखी है नाही । यह नित सोचन है मन माहीं ॥
 जेहि गुन बुद्धि हाथ मह होई । तापर प्यार करै सख कोई ॥
 रहस न बुद्धि पिये मद हाथा । या नित दोष लाग मन साथी ॥
 सत्रु चतुर जो जिउ कर होई । हे भल मूढ मित्र सो सोई ॥
 गुन सो मानुष होत पियारा । गुन कर गाहक है ससारा ॥

विप कह अमिय करत है, है ज्ञानी जो कोई ।

भूरख जन के हाथ सो, अमृत विष सम होई ॥६॥

मानमती यह सखिष पियारी । बोली सुनिये राज दुलारी ॥
 यह जग बीध अहो रूपवन्ती । पिय जेहि रीका सो गुनवन्ती ॥
 तुम पर अस रीका पिय सोई । चाहा एकै बार एक होई ॥
 ये यह छट औ आठ तुम्हारी । धरा वियोग बीध तेहि प्यारी ॥

गुनि सति काँत सहज औ रूपा । सब तोहि रीक कन्त गुन भूपा ।

प्रीतम भै का भै हिये, तोहि नित बाउर पीउ ।

तो लट औ अधरन में, प्रीतम मन औ जोउ ॥७॥

रतन जोत पुनि बात निसारा । मयेउ रतन सो मम अवतारा ।

एक सोच मोहि आवत सजनी । तासो सोचत है दिन रजनी ।

पिय औगुन लावै मोहि रामा । मानुष जन मन तेरो बामा ।

मानव मानुज चदर सो होई । अनुज चदर बिनु अनुजन कोई ।

पितु को परमद अमु जव आवै । मात चदर तब नर भौ पावै ।

जनम मोर अस नाहीं, सखी सोच मैं लेउं ।

पिय ऐगुन जो लावै, कौन उतर मैं देउं ॥८॥

कहा सखी कुछ सोच न कीजे । ध्यान अमूरत ऊपर दीजे

तोहि करतार रतन सो कीन्हा । कर सह रतन ज्ञान कर दीन्हा

जो करना कह करबेइ होई । हो तेहि कहै होइ तब सोई

विध पुरुष औ बन्ध्या नारी । तासो सुन पायन सत धारी

बाज पिता सो बालक कीन्हा । अमृत बचन जीभ मो दीन्हा

कीन्ह विमल माटी सो, बहुर बुन्द तेहि कीन्ह ।

तासों रक्त मास करि, हाड फेर जिउ दीन्ह ॥९॥

अलख अमूरत सिजेन द्वारा । मूरत जगत अलेख सवारा

तेहि छाजत मिजैं जस चाहै । दाऊ जग आपुहि करता है

जनक जननि बिन सिजैं पारै । जातैं चाहै जनम सँवारै

आद पिता के पिता न माता । ऐमें सिजाँ वह जिउ दाता

प्रीतम तोहि गुन ऐसो लोभा । लखै न ऐगुन देखै सोभा

मित्र मित्र को ऐगुन, पहिचानत गुनमान ।

तेरो सकल अवस्था, गुन बूझै पिय प्रान ॥१०॥

दायावन्त है कन्त तुम्हारा । है अपराध छिपावन हारा
 जो गुनवन्त अहै जग माहीं । सो ऐगुन हेरत है नाही
 जेहि गुन सो गाहक गुन केरा । जेहि ऐगुन सो ऐगुन हेरा
 आयुहि थोच जो ऐगुन पावा । सो न कहा अपराध परावा
 जो अपराध छिपावइ कहा । जोग धमन ता के तन रहा

जो मुख पर ऐगुन कहै, महा मित्र है सोइ ।

ताको मित्र न जानिये, ऐगुन राखै गोइ ॥११॥

राज कुंवर जय मोतिष पावा । सात सखा कह नेवत पठावा ॥
 निरतक रहे जीठ उन पाये । धाये सकल अगमपुर आये ॥
 सात मित्र राजा कह भैंटा । दरसन बिछुरन सकट भेटा ॥
 राजा के कालिछुर टाक । मित्रपरायण प्रेम तेहि नाक ॥
 रहा बहुत दिन सो परदेसा । आये नगर धनी होइ भेसा ॥

देखि सून कालिंजरै, मरम कुंवर को पाइ ।

रहिन सका राजा बिनु, लीन्ह जोग चित लाइ ॥१२॥

सुनि के राज कुंवर को जोग । भा जोगी त्यागा हुल भोग ॥
 प्रेम के साथ लगी बैसगी । रावल भेस लिहें नारगी ॥
 आगम सचर राखेन पाक । आगमपुर के भयेन बटाक ॥
 सीस जटा धरि सटपर हाथा । आये मिले राज के साथ ॥
 भैंटेन प्रेम राख कह राजा । भा मन मुदित मोद उपराजा ॥

भयेउ जोग को राजा, राजा वह मन मांह ।

जगपत दाया दुर्म को, सब सिर आयेउ छांह ॥१३॥

सीतल छाहा पावइ सोई । जो तप किहें जगत मह होई ॥
 जेहि मन करता की हर भारी । तेहि नित लागे दुइ फुलवारी ॥
 दोक घीच दुइ करना यहइ । सब फल फले दोऊ मह रहई ॥

औ सूपर नारी तेहि ठाई । बनी रतन मोती की नाई ॥
दूसर फल भल को है नाहीं । भल कोमल फल दोउ जग माहीं ॥

जो आवै करता दिस, एक भलाई साथ ।

बोही भलाई के सम, दस आवै तेहि हाथ ॥१४॥

कुशर पास क्रीपा चलि आयेउ । जगपति दुःख समेत पठायेउ ॥

आइ कुशर सग क्रीपा बोला । क्रीपा रस भै भापित बोला ॥

अहो छला जत साधेउ जोगू । तत अब मानहु परमद भोगू ॥

धर सारंगी गहु क्रीपानू । उद्धित भयेउ मनोरथ भानू ॥

कन्या काढहु पहिरहु धागा । जोग मुकुट धरी बाधहु पागा ॥

काढहु माला जोग को, पहिरहु मानिक हार ।

दैव दिष्ट सनमुख भयेउ, होहु तुरंग सवार ॥१५॥

काढत माला कन्या राजा । चरचूहत मन मो उपराजा ।

माला गनि सुमिरेउ वह नाज । काढत छोह भयेउ तेहि ठाज ॥

जोग चिन्ह यह कन्या पाया । कढ़त उपेजेउ कहना माया ॥

क्रीपा बूझि कहा हो राजा । नन कन्या मन माला छाजा ॥

जोग न पूजे नजे न जोगू । पूजा जोग लेहु अब भोगू ॥

जल में दूढ़ आप गा, मारै मोद तरंग ।

दुख को यासर धीतेऊ, अब सुख दिन को रंग ॥१६॥

हुकुल अहै मानुष की सोभा । धीर बाज सोभाधर को भा ॥

बिनु गुन काया अम्बर चालें । काठ कि खरग अहै परवालें ॥

तप औ जोग के आहति चेरा । करु पवित्र अम्बर तन केरा ॥

यस्तर लेहु भोग के जोगू । जोग जोग अब है मल भोगू ॥

सुमिरन पूजा है तब ताइ । जब लग नहि निधै मन ठाई ॥

है सब चस्तर मनिमय, मनमो करहु अनन्द ।

पहिरहु लखि कै सोभा, लाजै रवि औ चन्द ॥१७॥

सखि एक होइ सचेत पुकारा । धरती उवा मुकुन उजियारा ।
 एक कहा मानुष नहि होई । यह मुर भेस धरें है कोई ॥
 एक कहा रजनीपति आही । मेहर अवहि न लेंका ताही ॥
 एक कहा यह सोभा धारी । जगत फलेवर जिउ है प्यारी ॥
 जेहि जस रहेव दिष्ट औ जानू । तैसा देसा कीन्ह बखानू ॥

कुंवर सनेह सकल मन, उपजेउ रूप यिलोकि ।

लोचन चितवन मगु सों, एक न पारै रोकि ॥२५॥

सखिन बचन सुनि कि यह रानी । समुझा आगम सोच समानी ॥
 कहा सखिन सो प्रीतम प्यारा । है मोहि संग लगावन हारा ॥
 अग्ये बियाह गवन पुनि होई । नइहर के बिलुई सब कोई ॥
 परदेसी की लालप अहई । कहा एक थल पर घिर रहई ॥
 परदेसी है कन्त हमारा । देस चली को राखै पारा ॥

रहना अन्त न होइहै, नइहर देस मँझार ।

परदेसी है सहचरी, लेना पीउ हमार ॥२६॥

कहेन सोच रानी केहि लार्ने । यह दिन है हम सब के आग्ये ॥
 हम रोये जनमत सनसारा । जनम देस कित रहन हमारा ॥
 नइहर नगर अन्त नहि रहना । सीखु सोइ जेहि सासुर लहना ॥
 जनम निधाइ भलो पिय पासा । बिनु पीतम न लहै कबिलासा ॥
 मिलै नरक जो दरसन पीको । नरक भलो बैकुण्ठ न नीको ॥

मिलै तहां हो प्यारी, नइहर देस पियार ।

जेहि अस्थान बसेरा, चाहै पीउ तोहार ॥२७॥

जय बनवास राम कहँ भयेऊ । सीता सती गोहेन मह गयेऊ ॥
 सदन नरक भा पिय बछुरातैं । वन बैकुण्ठ भयेव तेहि जातैं ॥
 पिय बिनु फीका मुखरग भीका । पिय गोहन भीका मुख तीका ॥

जो प्रीतम सँग प्रीन लगावा । सो दोउ जगत बीच सुर पावा ॥
अज्ञा माथे ऊपर लीन्हा । पिय कर अज्ञा भेट न कीन्हा ॥

पीउ जहा है सुख तहां, जहां न प्रीतम होइ ।

तहां सुखद को दरसना, कहा विलौकै कोइ ॥२८॥

धनि धरात द्वारे जस आयेउ । अमल ठाउ बइठै कह पायेउ ॥

बइठैउ कुवर पाट उपराहा । ऊपर नीतल साखी छाहा ॥

सुर नर देखि आसिया देहीं । निरघैं रूप रहसि फल लेहीं ॥

जे तो सुख तजि साधा जोगू । वे तो अलख दिहा सुख भोगू ॥

थोरे दिन का कुवर सलोना । लोना अम्युक कीन्हेउ टोना ॥

रूपवन्त राजा कुंवर, सकल धरातिन मांह ।

सुन्दरता पति होइ रहा, मान पाट उपरांह ॥२९॥

जिवन धने सहस परकारा । जेवैं नित भा निरप हकारा ॥

बइठे लोग आइ सय तहा । दीन्ह ठवर जेवैं नित जहा ॥

भोजन केतो सुन्दर होई । उदर भरे पर खाय न कोई ॥

श्रिया छुधा पर अवै साई । तय जल जेवन करै भलाई ॥

छुधावन्त कह देहु अहारा । देइ नाक फल सिरजन हारा ॥

कहत न पारै रसना, सन पकवान बखान ।

सै सवाद एक कवर में, मिलै खात पकवान ॥३०॥

बराबरी सो करइ न पारा । बराबरी सूरज ससि तारा ॥

जत जग बीच भले पकवानू । रहे सकल कित करउ धखानू ॥

वरनत रसना लोनी होई । जानै सो भच्छै जो कोई ॥

बिनै किहेन राजा के लोगू । हे पकवान न तुम सय जोगू ॥

जो पवित्र भोजन करतारा । दीन्ह तुम्हें सो करहु अहारा ॥

जेवै लागे जेवनहिं, ले दाता को नाउं ।

एक कवर में पावैं, सै सवाद तेहि ठाउं ॥३१॥

भा अज्ञा जय बाजा बाजा । राजिन चला बियाहै राजा ॥
 तू दमाना बाजै लागे । अम्बर गये समद सुर जागे ॥
 माडौ के तर कुवर पहुँचा । रहा गगन लग माडौ ऊँचा ॥
 हरि गीत नारी सब गावै । घर घर से सब देखै आवै ॥
 पर त्रिय दिष्ट परत भज नाहों । तैव पर पूतय उपराही ॥

रहा उदित होइ रूप सों, दूल्हा भान समान ।

बोहि समै माँडौ तर, आयेउ चन्द्र छिपान ॥३२॥

उन्नमन कह देखत नियरें । राधा नीरज अपने हियरें ॥
 लाज नयक देखि सकुचाना । परगट होइ नाहि बिकसाना ॥
 मन मन से तो रहा बियोगू । मन मन से तो रहा सजोगू ॥
 दुइ मन प्रीत रीत से जानै । अपने नेह जो मन से जानै ॥
 रवि दूल्हा मुख परगट कीन्हा । सखि दुलहिन मुख पर पट लीन्हा

पढेन वेद चामन सब, घर कन्या के नाउ ।

रहेउ पर्न नैरिस्त जो, भयेउ सरल तेहि ठाउँ ॥३३॥

भा बियाह कन्या घर साथा । आयेउ सुर को मानिक हाथा ॥
 भयेउ कुवर जगपत को प्यारा । सब काहू मिलि आइ जोहारा ॥
 दाया से आगमपुर ईशू । हारा छाह कुवर के सीसू ॥
 जैसे राज त्याग तप कीन्हा । वैसे अलख भोग सुर दीन्हा ॥
 पायेउ बहुत दास औ दासी । सेवक भये अगमपुर दासी ॥

भयेउ नगर वासी कहं, कुंवर प्रान को प्रान ।

समतेँ जोरेउ मित्रता, कुवर सनेह निधान ॥३४॥

रहिन सखी सुन्दर जर ताई । इन्द्रावति के नियरे आई ॥
 सकल सखी मिलि दीन्ह असीसा । प्रीतन छाह रहै तोहि सीसा ॥
 इदइ छात बियाह से होई । तोहि छात हरयित सब कोई ॥

जुग जुग रहै सोहाग तुम्हारा । चाहै तुस कह कन्त पियारा ॥
तोहि गुन कपर रीका रहई । कोमल यात प्रीत की कहई ॥

सदा रहै तोहि बस महं, करता के परताप ।

तोहिं पिय को सुमिरन रहै, पियहिं तुम्हारो जाप ॥३५॥

जधरन मो मुसुकानी रानी । होइ अभिमानी बोली बानी ॥

है मोहि रूप विमल सजियारा । बस नह रहै सो प्रीतन प्यारा ॥

ऐगुन भये न कूटै देऊ । तनु मुसुकाय हाथ कै लेऊ ॥

अमन होइ करउ असमानू । प्रीतन देइ हाथ नह प्रानू ॥

पाहन समा कठार जो होई । करउ सिगार होइ जल सोई ॥

अब किछु चिन्ता है नही, प्रीतन भा मोहि साथ ।

अमन कयहु न होइहै, नित रहि है मोहि साथ ॥३६॥

सखियन अगुरी दानन दाया । प्यारी गरब न हन कह भाया ॥

मैं न भली मैं भल जो भाया । तेहि करतार दूर कै राया ॥

अगिन सीस जो ऊपर करई । देखहु उन्नत नीच होइ परई ॥

भाटिय सीस नीच कै परई । तबहि अनेक लाभ सो भरई ॥

नयन आप कह देखत नाही । सूझि परा तेहि सब जग नाही ॥

सो झूया जो भापा, मैं जग सिर्जनहार ।

पार भयेउ जेह जाना, है एकै करतार ॥३७॥

प्रीतन आपन नाहिय प्यारी । अहै समुद्र लहर सो भारी ॥

सेधा नाथ चढै जो कोई । पार समुद्र सो उतरै सोई ॥

नाथ चढन सुमिरे एक नाऊ । कहै उतारहु मोहि सुन ठाऊ ॥

करता आयसु बोहित पायेउ । तबहि समुद्र के ऊपर धायेऊ ॥

पिय सो गरब न कयहु कीजे । आये सुमार्थे ऊपर लीजे ॥

गरब चात तुमन बोलिउ, करता करै न कोप ।

फिरु प्यारी अभिमान सो, ऐगुन होइ न लोप ॥३८॥

कै घट काज फिरा जो कोई । मनु घट काज न कीन्हा सोई ॥
 सुला दुयारा है तव ताई । रवि न उमै पच्छिम जय ताई ॥
 आवही फिर मानै करतारा । जब लग खोल फिरै को द्वारा ॥
 हम मद पियस तियागा प्यारी । पै तुम्हरी अँखिया मनवारी ॥
 हम कहँ खीच मुरा स्मि आनै । चाहि कहँ हम नैन न मानै ॥

इन्द्रावति समुझा वचन, धरती लायेउ भाल ।

तुम करतार जगत के, दाता दीयनदयाल ॥३६॥

ए प्यारी सुनिरत है तोहीं । दरसन वेग देखावहु मोहीं ॥
 धन आनन्द राज सुख औही । एकै दाया दरसन चाहो ॥
 बहुत वियोग मुरा मैं पीया । सजोगी मद वाहत हीया ॥
 सजोगी प्याला अग्र दीजे । अथर सुधा सतवाला कीजे ॥
 आज ठौर आसन मो देऊ । होइ निसक अग भरि लेऊ ॥

मोहिं संजोग सलील को, है प्रीतमा पियास ।

अनुकम्पा कै दीजे, प्रजै मन की आस ॥४०॥

भइउ सपूरन आधी कया । मानहु ज्ञान सिधु मै मया ॥
 तीन सहस चौपाइय भई । देखु आइ फुलवारिय नई ॥
 पुनि आगें जो सुख सो रहऊ । तीन सहस चौपाइय कहऊ ॥
 हौ अवही दोरे दिन केरा । बात बहुत दिन कर मैं हेरा ॥
 बिद्या ज्ञान बहुत जेहि होई । अर्थ छिपाने बूझै सोई ॥

नूर महम्मद यह कथा, अहै प्रेम की बात ।

जेहि मन होई प्रेमरस, पढै सोइ दिन रात ॥४१॥



पहिला भाग समाप्त ॥

